www.epaper.azadsipahi.in

* ओड़िशा संस्करण

25 अगस्त, 2025
भाद्रपद, शुक्ल पक्ष, द्वितीया
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
सोमवार, वर्ष 10, अंक 305

मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता हूं...

Ph.D. Awarded

By the order of Vice-Chancellor, Usha Martin University, Ranchi, Jharkhand, **Ms. Nimisha Sinha D/o. Suresh Shankar Sinha and Pushpa Sinha W/o Dr. Ashish Alok** is declared to have passed the Doctor of Philosophy Ph.D. IN LAW (Faculty of Legal Studies) examination held on **18th August 2025** on the topic **"Effectiveness of Cyber Laws in Controlling Cyber Crimes in India with Special Reference to Jharkhand"** under the Guidance of Dr. Swati Sawar (Assistant Professor & HOD, Department of Legal Studies), Usha Martin University, Ranchi, Jharkhand.

नगड़ी में रिम्स-2 की जमीन पर आंसू गैस के गोलों के बीच ग्रामीणों ने की धनरोपनी

■ पूर्व सीएम चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया गया ■ भाजपा के अन्य नेताओं को भी लिया गया हिरासत में

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को रुक-रुक कर हो रही बारिश के बीच नगड़ी स्थित रिम्स-2 की प्रस्तावित जमीन पर जम कर हंगामा हुआ। पुलिस द्वारा दागे जा रहे आंसू गैस के गोलों के बीच जिले के विभिन्न इलाकों से आये आदिवासी समुदाय के लोगों ने वहां धनरोपनी की। यह बवाल पूर्व घोषित 'हल चलाओ रोपा रोपो' कार्यक्रम के दौरान हुआ। पुलिस प्रशासन ने इस कार्यक्रम का नेतृत्व करनेवाले पूर्व सीएम चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट कर लिया। राज्य के अन्य हिस्सों से नगड़ी आ रहे भाजपा के कई नेताओं को भी हिरासत में लिया गया।

सुबह से ही तैनात की गयी थी पुलिस

सुबह से ही तय कार्यक्रम के तहत अलग-अलग क्षेत्रों से लोगों का जुटान नगड़ी स्थित जमीन पर होने लगा। जिस जगह पर रिम्स-2 का निर्माण होना है, वहां चारों ओर से लोग जुटने लगे।

'नगड़ी जमीन बचाओ संघर्ष समिति' के आह्वान पर ग्रामीणों के समर्थन में जेएलकेएम के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्रनाथ महतो भी पहुंचे और हल-बैल चला कर जमीन बचाने की बात कही। लोगों की बढ़ती संख्या और हंगामे की संभावित आशंका को देखते हुए पुलिस ने भी चुस्ती दिखायी और भीड़ को हटाने के लिए सख्ती भी बरती।

इधर प्रदर्शनकारी भी थोड़े उग्र हुए। इसके बाद पुलिस ने बल प्रयोग करते हुए आंसू गैस के गोले छोड़े। इसके बावजूद लोगों ने खेतों में घुस कर पारंपरिक गीत और नृत्य के साथ धनरोपनी की।

दिशोम गुरु का मुखौटा पहन पहुंचे ग्रामीण

आंदोलनकारी किसान, आदिवासी महिला पुरुष दिशोम गुरु शिबू सोरेन का मुखौटा लगाकर खेतों की पगडंडी होते हुए रिम्स-2 की जमीन पर पहुंच गये। वहां पहुंचे लोग खेतों में हल चलाने और रोपा रोपने जैसे पूर्व निर्धारित काम करने लगे। आंदोलन में शामिल होने के लिए लातेहार, लोहरदगा, बिजूपाड़ा, हातमा और बेड़ो समेत कई इलाकों से सैकड़ों ग्रामीण पहुंचे थे।

चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया था

कार्यक्रम को देखते हुए पुलिस ने सुबह पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को हाउस अरेस्ट किया था और उन्हें उनके घर से बाहर निकलने नहीं दिया गया। चंपाई सोरेन ने बताया कि डीएसपी वी रमण आये और उन्होंने कहा कि आपको आवास से बाहर नहीं जाना है। वहीं डीएसपी ने कहा कि विधि-व्यवस्था बनाये रखने के लिए निषेधात्मक कार्रवाई के तहत उन्हें हाउस अरेस्ट किया गया है। उधर अलग-अलग जिलों से रांची आ रहे कई भाजपा नेताओं को भी पुलिस ने रांची पहुंचने से पहले हिरासत में ले लिया। इनमें पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के बेटे बाबूलाल सोरेन भी शामिल थे।

धनबाद में चाल धंसी, एक की मौत

धनबाद (आजाद सिपाही)। धनबाद के इस्ट बसुरिया स्थित लिब्रा आउटसोर्सिंग कोलियरी क्षेत्र में रविवार को चाल धंसने से एक युवक की मौत हो गयी, जबकि एक लड़की गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायल लड़की का इलाज शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, धनबाद में चल रहा है। स्थानीय लोगों के मुताबिक कुछ लोग बगल की माइंस से घरेलू उपयोग के लिए कोयला निकाल रहे थे। इसी दौरान अचानक चाल धंस गयी। हादसे में इस्ट बसुरिया ओपी क्षेत्र निवासी छोटू भुईंया की मौके पर ही मौत हो गयी, जबकि सुहाना कुमारी मलबे में दब कर घायल हो गयी, जिसे स्थानीय लोगों ने निकाल कर अस्पताल पहुंचाया। सुहाना के पिता नरेश केवट ने बताया कि इलाके के लोग अक्सर घर का चूल्हा जलाने के लिए पास की माइंस से कोयला निकालते हैं। रविवार को उनकी बेटी भी वहां गयी थी। उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की थी, लेकिन वह नहीं मानी। हादसे के बाद से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

हजारीबाग के चरही स्थित सीसीएल की तापीन नॉर्थ परियोजना में उग्रवादियों का तांडव

टीपीसी ने निजी कंपनी की छह गाड़ियां जलायीं

● ऑपरेटरों को पीटा और पर्चा छोड़ दिया संदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

चरही। हजारीबाग जिले के चरही थाना क्षेत्र स्थित सीसीएल की तापीन नॉर्थ परियोजना में शनिवार की देर रात उग्रवादी संगठन तृतीय प्रस्तुति कमेटी (टीपीसी) ने बड़ी वारदात को अंजाम दिया।

घटना रात 12 से एक बजे के बीच की बतायी जा रही है। उग्रवादियों के दस्ते ने आउटसोर्सिंग कंपनी आरकेएस की खड़ी गाड़ियों को निशाना बनाया। उन्होंने पोकलेन और हाइवा समेत छह भारी वाहनों से तेल निकाल कर आग के हवाले कर दिया।

अचानक लगी आग से इलाके में अफरा-तफरी और दहशत का माहौल बन गया। इस दौरान ड्यूटी पर मौजूद ऑपरेटरों और कर्मियों के साथ मारपीट भी की गयी और उन्हें काम बंद करने की धमकी दी गयी।

पोस्टर चिपका कर दी सख्त चेतावनी : घटना को अंजाम देने के बाद उग्रवादियों ने मौके पर पोस्टर चिपका कर कंपनी को काम तत्काल बंद करने का अल्टीमेटम दिया। पोस्टर में साफ लिखा गया है कि जब तक संगठन से बात नहीं होगी, सभी कंपनियां काम बंद रखें, अन्यथा गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। आरकेएस कंपनी पिछले चार वर्षों से तापीन नॉर्थ परियोजना में कोयला खनन का कार्य कर रही है।

वाहनों में आगजनी (इनसेट) की घटना के बाद जांच करने पहुंचे पुलिस पदाधिकारी।

आरकेएस कंपनी पर सबसे बड़ा हमला : कंपनी के वाहनों पर हमला और आगजनी की यह घटना अब तक की सबसे बड़ी वारदात मानी जा रही है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से उग्रवादी इस इलाके में सक्रिय थे और कंपनियों को लगातार धमका रहे थे।

इलाके में दहशत, प्रशासन सतर्क
इस घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि उग्रवादी संगठनों की बढ़ती सक्रियता क्षेत्र के विकास के लिए गंभीर चिंता का विषय है। सीसीएल प्रबंधन और पुलिस प्रशासन ने घटना को बड़ी चुनौती मानते हुए सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की बात कही है। सीसीएल ने अपने कर्मचारियों और ठेका कंपनियों के कर्मियों को सुरक्षा का भरोसा दिलाया है।

पुलिस ने शुरू की जांच

घटना की सूचना मिलते ही चरही थाना पुलिस मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने की कोशिश की। पुलिस ने घटनास्थल से उग्रवादियों द्वारा छोड़ा गया पोस्टर बरामद किया है। मामले की जांच शुरू कर दी गयी है। चरही थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल ने बताया कि घटनास्थल रामगढ़ जिले की सीमा में आता है। उन्होंने कहा कि अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए सघन अभियान चलाया जायेगा और दोषियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जायेगा।

भंडरा में बच्चे का हाथ-पैर तोड़ने का मामला

सीएम हेमंत सोरेन ने लिया संज्ञान, कार्रवाई का आदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भंडरा के एक निजी स्कूल की शिक्षिका द्वारा बच्चे की बेरहमी से पिटाई करने और हाथ-पैर तोड़ने की घटना की जांच कर दोषियों पर कार्रवाई का आदेश दिया है। सीएम ने घटना के बारे में मिली सूचना के तत्काल बाद सोशल मीडिया के जरिये उपायुक्त को घटना की जांच और समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इस घटना पर समुचित कार्रवाई हो, ताकि आगे ऐसे कोई भी घटना दुबारा ना हो। साथ ही बच्चे के इलाज एवं काउंसलिंग की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए सूचना दें।

मामले की जांच शुरू : सीएम के निर्देश के बाद उपायुक्त डॉ कुमार ताराचंद ने उन्हें तत्काल जवाब भेज कर सूचित किया कि इस संबंध में जिला शिक्षा पदाधिकारी की अध्यक्षता में चार सदस्यीय समिति गठित कर मामले की जांच की कार्रवाई प्रारंभ कर दी गयी है। पीड़ित का इलाज सीएचसी भंडरा में कराया जा चुका है। साथ ही इस मामले में पीड़ित के अभिभावक द्वारा भंडरा थाना में कांड संख्या 58/2025 के साथ मामला दर्ज कराया गया है।

क्या है मामला : यह मामला पलमी स्थित संत मेरी पब्लिक स्कूल से जुड़ा है। मसमानो गांव निवासी सुकरा उरांव ने स्कूल की शिक्षिका कांति किरण किंडो पर अपने आठ वर्षीय पुत्र प्रिंस उरांव पर बेरहमी से

पिटाई करने और हाथ-पैर तोड़ने का आरोप लगाया है। उन्होंने बताया है कि उनका बेटा स्कूल में यूकेजी में पढ़ता है और स्कूल द्वारा संचालित हॉस्टल में ही रहता है। 20 अगस्त को स्कूल की शिक्षिका कांति किरण किंडो ने उनके बेटे प्रिंस को हॉस्टल में खराब खाना दिये जाने की शिकायत करने के कारण बेरहमी से डंडे से पीटा। पिटाई के कारण भयभीत होकर उनका बेटा हॉस्टल से भागकर अपने गांव पहुंचा। फिर परिजनों को पूरे मामले से अवगत कराया। बच्चे की हालत को देखते हुए उसके परिजन उसे सदर अस्पताल लोहरदगा ले गये, जहां इलाज के दौरान उसका एक्सरे निकाला गया, जिसमें पाया गया कि प्रिंस के हाथ की एक उंगली टूटी हुई है, जबकि दाहिने पैर की एड़ी सहित अन्य हिस्सों में चोट लगी है। इसे लेकर जब बच्चों के परिजन स्कूल पहुंचे और वहां के अध्यापक और उक्त शिक्षिका से बात करने की कोशिश की, तो उन लोगों ने बच्चे के परिजनों के साथ दुर्व्यवहार किया।

BABU DINESH SINGH UNIVERSITY
(Established Under Government of Jharkhand Act-06, 2023 & Section 2(f) of the UGC Act, 1956, Member of AIU, Delhi)

CAREER-ORIENTED PG/UG/DIPLOMA PROGRAMMES

Programs Approved by AICTE & Apex Bodies

ADMISSION OPEN SESSION 2025-26

Faculty of Engg. & Tech
B.Tech
- Civil Engineering
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- CSE (Artificial Intelligence)
- CSE (Cyber Security)

Polytechnic / Diploma
- Civil Engineering
- Mechanical Eng.
- Electrical and Electronic Eng.
- Computer Science & Eng.
- Electrical Engineering

Faculty of Law
- LL.B. ■ B.A. LL.B. ■ B.B.A. LL.B

Faculty of Management
- Bachelor of Business Administration (BBA)
- Master of Business Administration (MBA)

Faculty of Information Tech.
- Bachelor of Computer Application (BCA)
- Master of Computer Application (MCA)
- Post Graduation in Computer Application (PGDCA)

Faculty of Education
- Bachelor of Elementary Education (B.Ed)
- Diploma of Elementary Education (D.El.Ed.)
- M.A (Education)

Faculty of Arts & Social Science
- B.A (Hindi) ■ B.A (English) ■ B.A (Sanskrit)
- B.A (Economics) ■ B.A (Psychology)
- B.A (Sociology) ■ M.A (Hindi) ■ M.A (English)
- M.A (Sanskrit) ■ M.A (Economics)
- M.A (Psychology ■ M.A (Sociology)

Faculty of Pharmacy
- Diploma in Pharmacy (D.Pharm)
- Bachelor of Pharmacy (B.Pharm)

Faculty of Dental Science
- Bachelor of Dental Surgery (BDS)
- Master of Dental Surgery (MDS)

Faculty of Homeopathy
- Bachelor of Homeopathic Medicine & Surgery- BHMS
- M.D Homeopathy ■ B.Sc Medical Pathology
- B.Sc Medical Biochemistry ■ B.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Microbiology
- M.Sc Medical Biochemistry

Faculty of Nursing & Allied Health Science
- Bachelor of Science in Nursing (B.Sc. Nursing)
- General Nursing and Midwifery (GNM)
- Auxiliary Nurse Midwives (ANM)

Paramedical
- OT ■ DMLT ■ ECG ■ X-RAY
- Medical in Sanitary Inspector
- Medical in Ophthalmic Assistant
- Medical in Certificate in Dresser

Library Science
- B.Lib.I.Sc. ■ M.Lib.I.Sc

Faculty of Science
- B.Sc. (Mathematics) ■ B.Sc. (Chemistry) ■ B.Sc. (Physics)
- B.Sc. (Botany) ■ B.Sc. (MLT) ■ B.Sc. (Zoology)
- B.Sc. (Pathology) ■ B.Sc. (Biochemisty) ■ B.Sc. (Microbiology)
- M.Sc. (Mathematics) ■ M.Sc. (Chemistry) ■ M.Sc. (Physics)
- M.Sc. (Botany) ■ M.Sc. (Zoology) ■ M.Sc. (Physiology)
- M.Sc. (Biochemisty) ■ M.Sc. (MLT) ■ M.Sc (Microbiology)

Faculty of Commerce
- B.Com ■ M.Com

TRANSPORT FACILITIES | HOSTEL FACILITIES | LUSH GREEN CAMPUS | WI-FI CAMPUS | WORLD CLASS INFRASTRUCTURE | 100% PLACEMENT ASSISTANCE

Admission Helpline: 9661462506, 6206297213, 9934688493

Farathiya, Garhwa-822114, Jharkhand https://bdsu.ac.in/

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता हूं...

- सेवा करते-करते मानों मैंने उस अमृत को चख लिया, जिसे कई सिद्धि के बाद भी अर्जित नहीं किया जा सकता
- पिता कहते नहीं, लेकिन कभी उनकी आंखें पढ़ कर देखना, पास बैठने को बोलेंगी
- माथे पर हाथ फेरने को कहेंगी, बोलेंगी बेटा मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है
- इंसान ईश्वर ढूंढने मंदिर-मंदिर जाता है, बस पिता को गले लगा लो, ईश्वर प्राप्त हो जायेंगे
- मैं अपने पिता के लिए रोज पहाड़ तो लाता, लेकिन वह बूटी कौन सी थी, जो उनके लिए संजीवनी का काम करती, उसकी पहचान नहीं कर पाया, बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है।

राकेश सिंह
संपादक

पिता को तो सभी प्यार करते हैं। स्वाभाविक भी है। जैसे सभी करते हैं, वैसे मैं भी अपने पिता से प्रेम करता था। पापा मेरे हीरो थे, ज्यादातर लोगों के लिए उनके पिता हीरो ही होते हैं। मैं पापा से जो कुछ भी मांगता, उससे ज्यादा ही पाता। मुझे लगता था, यही पिता-पुत्र का प्रेम होता है। पिता हमेशा देता है और बच्चा हमेशा मांगता है। लेकिन एक पिता को भी अपने बच्चों की जरूरत उतनी ही होती है, जितनी बच्चों को पिता की। इसे जो महसूस कर लेता है, वह ईश्वर प्राप्त कर लेता है, उसे मंदिर-मंदिर जाने की जरूरत नहीं पड़ती, वह उस अमृत का पान कर लेता है, जिसे समुद्र मंथन के दौरान भी पाया न जा सका। जिसे अनेकों सिद्धि के बाद भी हासिल नहीं किया जा सकता। पिता कहता नहीं है कि बेटा मुझे तुम्हारी जरूरत है, उसे बस महसूस करना पड़ता है। अपने शुरुआती दिनों में, मैं अपनी दुनिया में मगन रहता और पापा भी अपनी दुनिया में रहते। पापा परिवार को समय कम दे पाते। जब पापा ऑफिस से आते, हम सोये हुए होते और जब हम जागते, पापा सोये हुए होते। पत्रकार थे। यह कोई पहेली नहीं, हर पत्रकार की सामान्य दिनचर्या है। खासकर अखबार वालों की। ऊपर से पापा संपादक। जब भी मैंने पापा को देखा, उन्हें हमेशा ऊर्जा से लैस ही पाया। थकान क्या होती है, शायद यह शब्द उनकी डिक्शनरी में नहीं था। वह अपने काम से बहुत प्रेम करते थे। जिद्दी थे। क्या करें पत्रकार थे। पत्रकारिता उनके लिए सांस का काम करती थी। जीवनवाहिनी थी। इसी में वह जीते। उनके लिए समाज और पत्रकारों की पीड़ा प्रथम थी। उनका मानना था कि जिस समाज ने उन्हें इतना कुछ दिया है, उसे वापस लौटाना भी उनकी जिमेदारी है। कर्मठ और जुनूनी व्यक्ति थे मेरे पिता।

पीपल पर लदे फल खा, पानी पी, पेट की अग्नि शांत की

अपने जन्म से ही उन्होंने गरीबी ऐसी देखी कि कई बार वह और उनके भाइयों ने बचपन के दिनों में पीपल के पेड़ पर लदे काले फल खा और पानी पी कर पेट की अग्नि शांत को शांत किया। महुवा और कोइना चुनते। कभी चावल मिला, तो दाल नहीं, कभी गुड़ खा कर गुजारा कर लेते, बहुत हुआ तो सत्तू पी लेते। एक वक्त ऐसा भी था, जब मेरे पिता के पिता, यानी मेरे दादाजी, जिन्हे मैं बाबा बोलता, को देखते लोग अपने घर का दरवाजा बंद कर लेते, उनके दिमाग के कोने में यह बैठा था कि कहीं अपने सात बेटे और दो बेटियों को पालने के लिए वह उनसे खाना न मांग लें। लेकिन यह भी सत्य है कि मेरे बाबा ने कभी भी, किसी के दरवाजे पर हाथ नहीं फैलाया था। उन्होंने और मेरी आजी (दादी) ने अपनी जिम्मेदारियों को खूब निभाया और अपनी संतानों को इस लायक बनाया कि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। देखते ही देखते समय का चक्र ऐसा घूमा कि अपनी मेहनत, लगन और जूनून की बदौलत, एक साधारण से टाइपिस्ट की नौकरी से अपने करियर की शुरुआत करने वाले मेरे पिता, पत्रकारिता के शिखर पर पहुंचे।

पापा मेरे दिन और रात हो गये

पापा मेरे लिए हीरो थे और सदा हीरो रहेंगे। मैं अपने पिता से प्रेम तो करता था, लेकिन क्या पता था कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब मेरे पिता मेरे लिए मेरे दिन और रात हो जायेंगे। मेरा रोम-रोम पिता के लिए समर्पित हो जायेगा। वात्सल्य सिर्फ माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के लिए ही नहीं होता, वात्सल्य एक बेटे का उसके पिता के लिये भी होता है, यह अधिकार मैं इन 10 महीनों में हासिल कर पाया। जब अपने पिता को मैं अपने तीन साल के बेटे रुद्रव के जैसे नहलाता, उनके आखिरी समय में उनके डायपर बदलता, उन्हें तैयार करता, उनके लिए नये-नये कपड़े खरीदता, उनके बालों को हाथों से सेट करता। उनकी दाढ़ी को ट्रिम करता, उन्हें टिप-टॉप कर देता। जब पापा ना खाने की जिद करते, तो अपने हाथों से उन्हें खिलाता। उनके लिए उनके स्वास्थ्य के अनुसार डिश बनाता और बनवाता। उन्हें उठाता-बैठाता, वाक कराता, उनकी मसाज करता। मेरे पिता में मुझे बेटा रुद्रव दिखने लगा था। तीन साल का बेटा रुद्रव और सत्तर साल के मेरे पिता। मेरे लिए अब दोनों समान थे। जब पापा खान-पान में ढिलाई बरतने की कोशिश करते, तो मैं कभी-कभी गुस्सा भी करता, पापा-मम्मी को बोलते, देखो कैसे बोल रहा है, मम्मी बोलती करता भी तो वही है। पापा भी मेरी हर बात को सुनते। मैं अपने पिता की ऊर्जा बन चुका था।

जिसे कभी सुई तक नहीं लगी थी, उसकी नसों को छेदा जा रहा था

पिता का बीमार पड़ना मेरे लिए अत्यंत पीड़ा का विषय था, क्योंकि जब से मैंने होश संभाला, मैंने कभी भी अपने पिता को बीमार नहीं पाया। हमेशा उन्हें फिट ही पाया। मैंने कभी नहीं देखा था कि उन्हें एक सुई भी लगी हो, या उन्होंने कभी कोई टैबलेट भी खाया हो। हां बस एक बार उनका गॉल ब्लैडर का ऑपरेशन हुआ था। उसी वक्त उन्होंने अस्पताल का मुंह देखा था। दिल्ली का गंगा राम अस्पताल, वह भी दो दिनों में डिस्चार्ज हो गये थे। लेकिन साल 2024 के अक्टूबर महीने में जब पापा को फोर्थ स्टेज लंग कैंसर डिटेक्ट हुआ, ऐसा लगा मानों हमारे पैरों के नीचे से किसी ने जमीन अचानक से सरका दी हो। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि पापा को कैंसर भी हो सकता है। जो व्यक्ति रोजाना दस-दस किलोमीटर वाक करता हो, सादा खाता हो, सादा जीवन जीता हो, उसे कैंसर घेरेगा, भरोसा नहीं हुआ। हां शुरुआती दिनों में पापा सिगरेट पिया करते थे, लेकिन वह भी 15 साल पहले छोड़ चुके थे। जिस दिन पापा को पता चला कि उन्हें फोर्थ स्टेज लंग कैंसर है, तो डॉक्टर से उन्होंने पहला सवाल यही पूछा कि लाइफ है या नहीं। डॉक्टर शॉक्ड था कि कोई डायरेक्ट पूछ रहा है कि मैं रहूंगा या नहीं। पापा ने कहा कि बताइये, मेरे लिए जानना जरूरी है। तभी इलाज कराऊंगा, नहीं तो क्या फायदा। मैं बस अपने पिता की आंखों में झांक रहा था। उनकी आंखों में डर बिल्कुल भी नहीं था। थी तो अपने दो बेटों के लिए चिंता कि मेरे बाद मेरे बच्चों का क्या होगा। जैसा हर पिता अपने बच्चों के लिए करता है। मैं यह इसलिए समझ पा रहा था, क्योंकि पापा ने कैंसर डिटेक्ट होते सबसे पहले मुझसे कहा था कि सब संभाल लेना। तुम बड़े हो। फर्क मत करना। मैंने उनसे कहा था पापा आप यह क्या कह रहे हैं। कुछ नहीं हुआ है आपको। कैंसर अब लाइलाज बीमारी नहीं है। आप आसानी से ठीक हो जायेंगे। आप खुद से खुद को ठीक कर लेंगे। आपका विल पावर बहुत स्ट्रांग है। डॉक्टर को अपना काम करने दीजिये, बाकी आप पॉजिटिव रहिये। आप इसे आसानी से हरा दीजियेगा।

आजाद सिपाही विशेष

यह तस्वीर 27 फरवरी 2025 की है, जब मैं पापा की जीवनी उन्हीं की जुबानी (पातेपुर गांव में) शूट कर रहा था।

समय के साथ-साथ पापा के प्रति मेरा प्रेम प्रगाढ़ होता चला गया

खैर इलाज शुरू हुआ और समय बीतता चला गया, समय के साथ-साथ पापा के प्रति मेरा प्रेम प्रगाढ़ होता चला गया। मां को पापा के कैंसर होने की जानकारी नहीं दी गयी थी। लेकिन समय के साथ-साथ मैंने उनको भी तैयार किया। तैयार करना इसलिए भी जरूरी था कि कहीं कोई अनहोनी होती, तो मां बर्दाश्त नहीं कर पाती। देखते ही देखते एक कीमो से चार कीमो तक का सफर तय हुआ। जिस व्यक्ति को मेरे होश में कभी इंजेक्शन तक नहीं लगा था, उसकी नसों को अब छेदा जा रहा था। हर 15 दिन में होने वाला ब्लड टेस्ट भी अब हफ्ते में तब्दील हो रहा था। 11 हीमोग्लोबिन से 5.5 हीमोग्लोबिन पर पापा आ गये। डिस्चार्ज समरी या ओपीडी नोट्स में कीमो टोलेरेटेड वेल से सपोर्टिव केयर लिखा जाने लगा। पापा कमजोर होने लगे थे। 80 किलो से 57 पर आ चुके थे। लेकिन चार कीमो के बाद भी पापा ने व्हील चेयर नहीं पकड़ा। इलाज के दौरान अस्पताल में ऐसे कई पल हमने साथ बिताये, जब पिता की आंखों में आंसू छलकते देखा और मैं अपने आंसू अंदर दबाकर उनकी आंसुओं को पोछता। पापा बोलते बेटा इतना पैसा इलाज में लग रहा है, क्या छोड़कर तुम लोगों के लिए जाऊंगा। मैं कहता पापा सब आपका ही तो है। आप टेंशन क्यों ले रहे हैं। हम दोनों भाई सक्षम हैं। इलाज के क्रम में मैं जब पापा के साथ दिल्ली रहता, छोटा भाई राहुल ऑफिस और घर का मोर्चा संभालता। पापा को अपने जीवन पर किताब लिखनी थी। लेकिन काम में व्यस्तता के कारण लिख नहीं पाये। लेकिन यह मेरे दिमाग में थी। चार कीमो के बाद, पापा बोले गांव जाने की इच्छा हो रही है, जा पाऊंगा? मैं उन्हें गांव भी लेकर गया। उन्होंने गांव में बुढ़वा महादेव मंदिर का निर्माण करवाया है। उन्होंने महाशिवरात्रि के दिन भंडारा का भी आयोजन करवाया था। ठीक यही वह समय था, जब मैंने पापा की बायोग्राफी शूट कर डाली। पापा को देर तक बैठे मैं दिक्कत होती, लेकिन जब भी उन्हें ठीक लगता मैं शूट कर लेता। मेरे मन के किसी कोने में यह घर कर रहा था कि अगर में पापा की कहानी नहीं शूट कर पाया, तो बहुत कुछ अधूरा रह जायेगा। मैंने पापा की कहानी उन्ही की जुबानी शूट कर ली। पापा की जीवनी कोई उपन्यास से कम नहीं। धीरे-धीरे वह भी सामने लाऊंगा।

रात-रात भर पापा के पैरों के पास सो जाता

इलाज के क्रम में पापा के कुल पांच कीमो हुए, सात इम्युनोथेरपी और रेडिएशन के कुल दस सेशन हुए, लेकिन मजाल है कि पापा ने कभी भी व्हील चेयर पकड़ी हो। वह हमेशा वाक करके गये और वाक करके आये। एक चीज जो दोनों को हौसला दिये हुए थी, वह थी पॉजिटिव माइंडसेट। मुझे पापा और ईश्वर पर पूरा भरोसा था कि पापा बिलकुल ठीक हो जायेंगे। पापा मुझे छोड़ कर नहीं जायेंगे। समय के साथ-साथ मैं खुद को भूल चुका था। दिन और रात, मेरे लिए सब सामान्य हो चुके थे। मेरे जीवन का हर एक क्षण पिता को समर्पित हो चूका था। ऐसी कई रातें भी आयीं, जब इलाज के लिए हफ्तों अस्पताल के आसपास रुकना पड़ता। ऐसा समय भी आया, जब मैं कई रात लगातार सोया नहीं, फिर भी पता नहीं कहां से ऊर्जा मिलती। रात-रात भर जब पापा का पैर दबाता, खांसते तो पीठ सहलाता और जब पापा सोते, तो उनकी नाक बजती, यही नाक का बजना मुझे सुकून देती कि पापा सो रहे हैं, मैं उनके पैरों के पास सो जाता। हां जब इलाज के बाद जब रांची आता तो मम्मी एक्टिव हो जाती। खाना का डिपार्टमेंट मेरी मम्मी और मेरी पत्नी संभाल लेती। लेकिन पापा के लिए जो अलग-अलग तरीकों का जूस और सूप होता, वह मैं ही बनता। उनके लिए कुछ अलग सी रेसेपी तैयार कर राखी थी। छोटा भाई राहुल आजाद सिपाही का एक मोर्चा संभाले हुए था। मैं एडिटोरियल देखता। मैं अगर थोड़ी देर के लिये भी इधर-उधर होता, पापा परेशान होने लगते। मुझे ढूंढने लगते। मेरी मां को बोलते बेटा कहां है। मेरे छोटे भाई राहुल को बोलते, भैया कहां है।

यह तस्वीर 14 जनवरी 2025, तीसरे कीमो के बाद की है, जब पापा को मैंने मोटीवेट करने के लिए पॉडकास्ट शुरू किया था।

पापा के कमरे मैं चुपके से जाता, नाक बजती तो आ जाता

ऐसी कई रातें आयीं जब पापा दर्द में कराह रहे होते, फीवर भी आता। कीमो का साइड इफेक्ट असहनीय होता है। रात को सोता तो डर लगा रहता। कई बार पापा और मम्मी को देखने चुपके से उनके कमरे मैं चला जाता। नाक बजने की आवाज आती मन प्रसन्न हो जाता। हमारे लिए अब हर सुबह नयी होती चली गयी। हर सुबह पापा का मूड नया होता। एक दिन बिना दर्द के बीत जाए, तो उस पल को हम जी लेते। खुश हो लेते। मुस्कुरा लेते। यह सिलसिला दस महीनों तक चला। इलाज के दौरान जब बाहर जाता तो मैं पिता के लिए वर्ल्ड का बेस्ट शेफ बन चूका था। उनकी पसंदीदा दल पिठ्ठी बनाता। सत्तू भरी मकुनी भी बनाता। मैं हर वो डिश बनाना सीख चूका था, जो पिता को पसंद थी। मैंने उनके लिये एक स्पेशल डाइट प्लान बनाया हुआ था। इसका जिक्र आगे करूंगा।

मैं अपने पिता के साथ वो पल बिता पाया, जब पापा को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी

मेरे पिता भले बीमार थे, उसकी पीड़ा तो मुझे थी, लेकिन दिल के कोने में एक आनंद भी था, जो कह रहा था कि मैं अपने पिता के साथ वो पल बिता पाया, जब मेरे पिता को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मैं बिना ब्लड टेस्ट के बता देता कि मेरे पिता के शरीर में कितना खून तैर रहा है। उनकी हर एक हरकतों से मैं अब वाकिफ हो चला था। जीवन में मैंने अपना पहला खून पिता को ही दिया और आखिरी जूस पिता ने जो पिया या निवाला जो लिया, वह भी मेरे हाथों से ही लिया। मैं अपने पिता के लिए कितना खरा उतर पाया या नहीं, यह तो मुझे नहीं पता, लेकिन पितृ प्रेम और सेवा की तृप्ति क्या होती है, उसकी पहचान मुझे हो चली थी। उस अमृत को मैंने चख लिया था, सच कहूं तो मैं अपने पिता की सेवा कर तर गया। मेरा जीवन सफल हो गया। आज मेरे पिता मेरे साथ नहीं हैं, लेकिन जब-जब मेरे पिता पर पीड़ा, दर्द और तकलीफ ने हावी होने की कोशिश की, मैं उनका हाथ पकड़कर उनकी आंखों के सामने मौजूद रहा। उनके सर को सहलाता, उनके हाथ-पांव दबाता, उनके लिए हर वो उपाय करता जो मेरे लिए मुमकिन था।

बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है

जंगल-जंगल जड़ी ढूंढने के लिए भी भटका, दर्जनों पेड़ों के पत्तों का सहारा भी लेता, दिन-रात रिसर्च करता। कैंसर से जुड़ी कई केस स्टडीज को खंगालता। रात-रात भर सोशल मीडिया का हर एक प्लेटफार्म छान मारता। जहां भी कोई गुंजाइश दिखती उसके पीछे भागता। एक तरफ डॉक्टर तो अपना इलाज कर ही रहे थे, लेकिन मैं भी एक तरफ से मोर्चा संभाल डटा रहा, क्योंकि मुझे पता था कि कैंसर ट्रीटमेंट का सबसे बड़ा साइड इफेक्ट उसका ट्रीटमेंट ही है। लेकिन मेरे सामने कोई चारा भी तो नहीं था। ट्रीटमेंट भी करवाना था और उसके साइड इफेक्ट से पापा को भी बचाना था। डॉक्टर तो अपना 100 परसेंट दे ही रहे थे, लेकिन मैं कहां पीछे हटने वाला था। जब मेरे पिता मुझे छोड़ कर चले गये और मैं कुछ भी नहीं कर पाया, तब मुझे यही लगा कि जब लक्ष्मण जी मूर्छित पड़े थे, तब बजरंग बली उनके लिए संजीवनी बूटी से लैस पहाड़ उठा लाये। लेकिन मैं अपने पिता के लिए रोज पहाड़ तो ले आता, लेकिन वह बूटी कौन सी थी, जो उनके लिए संजीवनी का काम करती, उसकी पहचान नहीं कर पाया। बस ईश्वर यहीं जीत जाते हैं और इंसान यहीं पिछड़ जाता है।

एक पिता के लिए उसका सबे बड़ा सहारा उसकी संतान ही होती है

एक पिता के लिए उसका सबसे बड़ा सहारा उसकी संतान ही होती है। पिता का व्यक्तित्व चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो, समाज में उसकी पद-प्रतिष्ठा, मान सम्मान चाहे कितनी भी उंची क्यों न हो, पिता मानसिक रूप से कितना भी मजबूत क्यों न हो, लेकिन उसकी असली उर्जा उसके संतान में ही छिपी रहती है। पिता जब तकलीफ में भी होता है, तब भी वह अपनी संतान को अहसास तक नहीं होने देता कि वह कितना कष्ट में है। लेकिन पिता की आंखें सब कुछ कह देती हैं। दर्द में वह अपनी संतान को ढूंढता है। उसके पास रहना चाहता है। पिता चाहता है कि उसकी संतान उसके सिर पर हाथ फेरे। उसका हाथ पकड़ उसे सहलाये। उसको बोले पापा आप ठीक हैं न, कोई दिक्कत तो नहीं। पिता बस इतना ही सुनना चाहता है। उसका रोम-रोम इन शब्दों को सुनने मात्र से ही अपनी संतान को आशीर्वाद देने लगता है। मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पिता को इतना प्यार करता था कि मेरे पिता मेरे दिन और रात हो गये। यह कहानी है एक पिता और पुत्र के बांडिंग की। यह कहानी है उस दस महीनों की जब मेरा एक-एक सेकंड पापा का हो गया। यह कहानी है पिता और पुत्र के वात्सल्य की, उन आंसुओं की, जो मैं कभी दिखा नहीं पाया, लेकिन पता है जिस दिन फटूंगा, बादल जरूर फटेगा। मैंने अपने पिता को खो तो दिया, लेकिन मैंने उस अमृत को प्राप्त लिया, जो पिता के खोने का अहसास नहीं होने देती। क्योंकि मैं तृप्त हो चुका हूं, पिता की सेवा कर संतुष्ट हो चुका हूं। अभी पिता का आधा कार्य बचा है, उसमें व्यस्त हो चुका हूं।

इसी कहानी को साझा करते स्वर्गीय हरिनारायण सिंह के पुत्र और 'आजाद सिपाही' के संपादक राकेश सिंह।

(अगली कड़ी में पढ़ें : बेटा हफनी बढ़ रही है...)

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर		
शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	24.3 °c	21.1 °c
सूर्यास्त (आज) :	18.14 बजे	
सूर्योदय (कल) :	05.28 बजे	

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा अध्यक्षों, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी एवं सेवा पखवाड़ा प्रदेश टोली की बैठक

सेवा ही संगठन भाजपा की प्रतिबद्धता : बाबूलाल मरांडी

■ भाजपा राजनीतिक और सामाजिक दोनों जिम्मेदारी निभाती है : डॉ रविंद्र राय ■ सेवा पखवाड़ा के कार्यक्रमों में जनभागीदारी बढ़ायें : कर्मवीर सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश कार्यालय में रविवार को प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी की अध्यक्षता में पार्टी द्वारा आगमी 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम हेतु प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा अध्यक्षों, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी एवं सेवा पखवाड़ा प्रदेश टोली की बैठक संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य देश के जन जन की सेवा। पार्टी का राजनीतिक लक्ष्य सत्ता सुख नहीं, बल्कि सत्ता के माध्यम से जनता की सेवा है। कहा कि पार्टी विभिन्न सांगठनिक कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के बीच जाकर सेवा का कार्य करती है। उसी के तहत आगामी 17 सितंबर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से 2 अक्टूबर महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री की जयंती तक सेवा पखवाड़ा मनायेगी। कहा कि एक तरफ इंडी गठबंधन लोकतंत्र और लोकतांत्रिक संस्थाओं का गला घोंट रहा, वहीं भाजपा अपने सेवा कार्यक्रमों के माध्यम से जनभागीदारी बढ़ाते हुए लोकतंत्र को मजबूत कर रही है।

श्री मरांडी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कार्यकाल गांव, गरीब की सेवा से भरा पड़ा है। उन्होंने देश में उपलब्धियों का पहाड़ खड़ा किया है। कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय ने कहा कि देश और प्रदेश की जनता की आशा और आकांक्षा केवल भाजपा है। हमें कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के बीच बार बार जाना है। कहा कि भाजपा राजनीतिक के साथ सामाजिक जिम्मेदारियां भी भली भांति निभाती है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छता, पौधरोपण, रक्तदान,जल संरक्षण, स्वदेशी आंदोलन में जनभागीदारी लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि आगामी सेवा पखवाड़ा में सेवा के साथ दीनदयाल जयंती पर वैचारिक धारा को भी नयी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है।

प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा करते हुए इसे धरातल पर उतारने की दिशा में आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत पदाधिकारियों के बीच कार्यों का वितरण किया गया है। प्रदेश स्तरीय 7 लोगों की टोली बनायी गयी, जिसमें प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा, मनोज कुमार सिंह, बालमुकुंद सहाय, विकास प्रीतम, भानु प्रताप शाही गणेश मिश्र, शामिल हैं। कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत रक्तदान शिविर, मैराथन दौड़, प्रदर्शनी, स्वास्थ्य शिविर, दिव्यांग जन केलिए यंत्र वितरण, सांसद खेलकूद प्रतियोगिता, स्वच्छता अभियान, पौधरोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित होंगे। कहा कि वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देते हुए आगामी 2 अक्टूबर गांधी और लालबहादुर शास्त्री जयंती पर खादी और हस्तकरघा निर्मित वस्त्रों की खरीदारी को बढ़ावा देते हुए पार्टी के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों के साथ आम जनता से खादी वस्त्रों की खरीदारी का आग्रह किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती 25 सितंबर को बूथ स्तर पर मनायी जायेगी। उन्होंने कहा कि सांसद खेल प्रतियोगिता सभी संसदीय क्षेत्र में आयोजित किये जायेंगे, जिसका पंजीकरण आगामी 29 अगस्त से प्रारंभ होगा। कहा कि यह खेल प्रतियोगिता ग्रामीण स्तर, प्रखंड स्तरीय, विधानसभा स्तरीय और संसदीय क्षेत्र स्तरीय आयोजित होगी। इसमें फुटबॉल, वॉलीबॉल, हॉकी, बैडमिंटन, बास्केट बॉल, खोखो, हॉकी, एथेलेटिक्स जैसे खेलों के ग्रामीण पारंपरिक खेल कबड्डी आदि की प्रतियोगिता आयोजित होगी। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष बालमुकुंद सहाय ने और धन्यवाद ज्ञापन महिला मोर्चा अध्यक्ष आरती सिंह ने किया। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष नीलकंठ सिंह मुंडा, राकेश प्रसाद ,सांसद कालीचरण सिंह,भानु प्रताप शाही, प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा,प्रदेश मंत्री गणेश मिश्र, सीमा पासवान, दुर्गा मरांडी, सरोज सिंह, नंदजी प्रसाद, हेमंत दास, शिवपूजन पाठक, राहुल अवस्थी, योगेंद्र प्रताप सिंह, शशांक राज, पवन साहू, अनवर हयात, राकेश भास्कर, सत्यनारायण सिंह, कुमार अमित, सुबोध सिंह गुड्डू वरुण साहू, शैलेन्द्र सिंह सहित जिला अध्यक्ष,जिला प्रभारी शामिल हुए।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष समय लाभप्रद रहेगा। प्रियजनों का आवागमन। सुख-संपदा, लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

वृष सुख-सुविधा के साधन बनेंगे। आर्थिक लाभ। व्यापारिक यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी।

मिथुन धन लाभ। मान-यश-प्रतिष्ठा-उपहार-पुरस्कार की प्राप्ति। विरोधियों पर विजय मिलेगी।

कर्क माता पिता का सहयोग। वांछित सहयोग मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ संदेश प्राप्त होगा।

सिंह पारिवारिक वातावरण सुखमय होगा। परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता। मनोकामना पूरी होगी।

कन्या बिगड़ा काम बनेगा। व्यवसाय में आशातीत लाभ। सपरिवार भ्रमण। वाहन-सुख।

तुला नौकरी में उल्लास। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। भ्रमण-मनोरंजन।

वृश्चिक पारिवारिक दायित्व निर्वहन में खर्च अधिक करना पड़ेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होगी।

धनु आर्थिक लाभ। सम्मान-स्वाभिमान की रक्षा। मित्र-कुटुंबियों का सहयोग।

मकर बृहद योजना साकार करने में साथ मिलेगा। आजीविका संबंधी चिंता दूर होगी। सुख में वृद्धि।

कुंभ विरोधियों पर विजय। संपर्क-प्रभाव का लाभ मिलेगा। बकाये रकम की प्राप्ति होगी।

मीन बिना-विचारें कोई काम न करें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति। परिश्रम का फल मिलेगा।

स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी पंडित राजकुमार शुक्ल को दी गयी श्रद्धांजलि

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा एवं आदित्य साहू को पंडित राजकुमार शुक्ल फाउंडेशन की ओर से अध्यक्ष अजय राय ने पंडित राजकुमार शुक्ल के जीवन से संबंधित पुस्तक भेंट की। इस अवसर पर फाउंडेशन द्वारा किये जा रहे कार्यों से भी अतिथियों को अवगत कराया गया।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा कि चंपारण आंदोलन और महात्मा गांधी को पहली बार बिहार में लाने वाले प्रथम व्यक्ति पंडित राजकुमार शुक्ल ही थे। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमूल्य है और उन्हें वह सम्मान मिलना चाहिए जिसके वे सच्चे हकदार हैं।

राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा ने भी पंडित शुक्ल के जीवन और कार्यों को नमन करते हुए कहा कि उनके त्याग और संघर्ष से नई पीढ़ी को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

आदित्य साहू ने कहा कि पंडित राजकुमार शुक्ल के योगदान को जन-जन तक पहुंचाया जायेगा तथा उनके विचारों को जीवंत बनाये रखने के कार्य को निरंतर गति दी जायेगी।

अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि फाउंडेशन का उद्देश्य पंडित राजकुमार शुक्ल के जीवन एवं उनके संघर्षों को देश की आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना है, ताकि स्वतंत्रता संग्राम के इन गुमनाम नायकों को इतिहास में उचित स्थान मिल सके।

श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश पर्व धूमधाम से मनाया गया

गुर राम दास राखो शरनाई...शबद गायन से संगत हुई निहाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सत्संग सभा द्वारा कृष्णा नगर कॉलोनी स्थित गुरुद्वारा साहिब में रविवार को धन-धन श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश पर्व मनाया गया। इस उपलक्ष में सजाये गये विशेष दीवान की शुरुआत सुबह 7:40 बजे हजूरी रागी जत्था भाई महिपाल सिंह द्वारा आसा दी वार कीर्तन से हुई।

गुरुद्वारा के हेड ग्रंथी ज्ञानी जिवेंदर सिंह ने साथ संगत से गुरमत विचार साझा करते हुए गुरु ग्रंथ साहिबजी के पहले प्रकाश के बारे विस्तार से प्रकाश डाला और साध संगत को बताया कि श्री गुरुनानक देवजी से लेकर गुरु राम दासजी की वाणी श्री पोथी साहिब में लिखी जाती थी और वो पोथी गोइंदवाल साहिब (गुरु अर्जुन देवजी का ननिहाल) के बाबा मोहन सिंह के पास थी। गुरु अर्जुन देवजी इस पोथी साहिब को अमृतसर ले आये और चंवर से इसकी सेवा करते रहे। सन 1602 में गुरु अर्जुन देवजी ने रामसर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी की रचना शुरू की। इसमें गुरु अर्जुन देवजी बोलते थे और भाई गुरदास जी लिखते थे। सन 1604 में श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश हुआ और पहला प्रकाश बाबा बुड्ढाजी ने किया। उस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी में 974 अंग (पृष्ठ) थे और उसमें पांच गुरुओं की वाणी थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का पहला हुक्मनामा था 'संता के कारज आप खलोंया हर कम करावन आया राम'। फिर आगे चलकर श्री गुरु गोविंद सिंहजी ने दमदमा साहिब में अन्य पांच गुरुओं की वाणी को संकलित कर इसका संपादन किया। इस क्रम में उन्होंने वाणी का उच्चारण किया और भाई मनी सिंहजी ने उन वाणीयों को लिखने का काम किया और अंततः कुल 1430 अंग (पृष्ठ) का श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का स्वरूप तैयार हुआ। इसके संपादन में नौ महीने, नौ दिन और नौ घड़ियां लगीं।

इस दीवान में विशेष रूप से शिरकत करने पहुंच रहे सिख पंथ के प्रसिद्ध रागी जत्था भाई सुखप्रीत सिंह (लखनऊ वाले) ने सुबह 9 बजे से 10:45 बजे तक 'गुर राम दास राखो शरनाई... एवं संता के कारज आप खलोंया हर कम करावन आया राम... सो सतगुर प्यारा मेरे नाल है... एवं हम बैठे तुम देहो असीसां...' जैसे कई शबद कीर्तन कर साध संगत को निहाल किया। श्री आनंद साहिबजी के पाठ, अरदास, हुकुमनामा एवं कढ़ाह प्रसाद वितरण के साथ दीवान की समाप्ति सुबह 11 बजे हुई। इस मौके पर गुरुनानक सत्संग सभा द्वारा गुरु का अटूट लंगर चलाया गया। सत्संग सभा के प्रधान अर्जुन देव मिढ़ा एवं सचिव सुरेश मिढ़ा ने भाई सुखप्रीत सिंह एवं साथियों को गुरु घर का सारोपा देकर सम्मानित किया एवं प्रकाश पर्व में सहयोग के लिए विनोद मालाकार और गुड्डू साउंड को गुरु घर का सारोपा देकर नवाजा गया। कार्यक्रम का संचालन मनीष मिढ़ा ने किया।

झारखंड भाजपा ने की सूर्या हांसदा एनकाउंटर मामले की सीबीआइ जांच की मांग

- 11 जून 2025 को मिली थी खुली धमकी
- 12 जून को पुलिस ने साजिश के तहत दर्ज किया मुकदमा था
- माफिया गठजोड़ में पुलिस ने दिया घटना को अंजाम
- सूर्या हांसदा अपराधी नहीं, संवेदनशील सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता थे

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने राज्य सरकार पर बड़ा निशाना साधा। श्री मरांडी सूर्या हांसदा एनकाउंटर मामले की जांच द्वारा प्राप्त रिपोर्ट के बाद रविवार को प्रदेश कार्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। श्री मरांडी ने कहा कि उनके द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की अध्यक्षता में गठित जांच समिति जिसमें पूर्व नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही, पूर्व मंत्री रणधीर सिंह, प्रदेश प्रवक्ता अमित मंडल, पूर्व सांसद सुनील सोरेन, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री अनीता सोरेन शामिल थे, द्वारा हस्ताक्षरित जांच रिपोर्ट से स्पष्ट हो रहा है कि गोड्डा जिला के ललमटिया के सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता सूर्या हांसदा की साजिश के तहत पुलिस द्वारा हत्या की गयी है।

उन्होंने कहा कि इस आशंका की पुष्टि 11 जून 2025 को सोशल मीडिया पर जारी एक वायरल वीडियो से होता है, जिसमें गोड्डा में आयोजित एक सभा में एक राजनीतिक व्यक्ति, जो हाल में ही अवैध उत्खनन एवं अन्य संगीन मामलों में इडी कोर्ट से सशर्त जमानत पर बाहर आये हैं, ने कहा है कि जो सरकार की बात नहीं सुनेगा वह पुलिस की गोली से मारा जायेगा। और ठीक दूसरे दिन 12 जून को एक मुकदमे में सूर्या हांसदा का नाम जोड़ दिया जाता है। जांच समिति ने परिवार के सदस्यों से बात कर इस बयान को सूर्या हांसदा की हत्या से जुड़ा हुआ देखा। क्योंकि ठीक दो महीने बाद सूर्या हांसदा को पुलिस द्वारा गोली मार दी गयी। कहा कि झारखंड पुलिस स्व. सूर्या हांसदा को अपराधी बता रही, जबकि माननीय न्यायालय ने उन्हें किसी मुकदमे में अपराधी नहीं पाया। पुलिस ने जिन 24 मुकदमों का जिक्र किया है, उसमें से 14 में वे बाइज्जत बरी हो चुके थे। 5 मुकदमे में जमानत पर थे और 5 में जमानत विचाराधीन था। कहा कि 27 मई 2025 की जिस घटना को दिखा कर पुलिस ने एफआइआर दर्ज किया, उस दिन वे बेटे का जन्मदिन मना रहे थे। जिस कंपनी की गाड़ी जलाने बकी बात कही गयी, उस कंपनी के किसी अधिकारी कर्मचारी ने पुलिस को सूचना नहीं दी थी। कहा कि संथाल परगना पूरा क्षेत्र अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ, अवैध खनन, धर्मांतरण, आदिवासी बहु बेटियों की इज्जत से खिलवाड़, जमीन पर अवैध कब्जा का केंद्र बन गया है। स्व सूर्या हांसदा इन अवैध धंधों का विरोध करने के कारण आंखों की किरकिरी बने हुए थे। कहा कि सूर्या हांसदा किसी मुकदमे में वारंटी नहीं थे, इसलिए फरार नहीं थे। एक सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में क्षेत्र में सक्रिय थे। कहा कि पुलिस का इनकाउंटर से संबंधित बयान पूरी तरह से फर्जी प्रतीत होता है, क्योंकि सूर्या के शरीर पर तीन गोली के निशान थे, जिसमें कोई निशान पीठ पर नहीं पाया गया। बल्कि पेट में गोली लगी है। फिर कोई भागने वाले को पेट में गोली कैसे लग सकती है। कहा कि भारतीय न्याय संहिता एवं पुलिस रूल का गिरफ्तारी के वक्त पालन नहीं किया गया। गिरफ्तारी के समय किसी को साक्षी नहीं बनाया गया। कोई मेडिकल जांच नहीं करायी गयी। उन्होंने कहा कि 400 अनाथ बच्चों की पढ़ाई की चिंता करने वाले सूर्या हांसदा को अपराधी बता कर हत्या करवाती है। उन्होंने कहा कि स्व सूर्या हांसदा का परिवार ही नहीं, बल्कि जनता इस हत्या की सीबीआइ जांच चाहती है। इसलिए राज्य सरकार अविलंब सीबीआइ जांच की अनुशंसा करे। प्रेस वार्ता में प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक, सह मीडिया प्रभारी योगेंद्र प्रताप सिंह भी उपस्थित थे।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी संदेहास्पद : भानु प्रताप शाही

जांच समिति के सदस्य एवं प्रदेश उपाध्यक्ष भानु प्रताप शाही ने प्रेस वार्ता में कहा कि बातचीत से यह स्पष्ट है कि पुलिस के टॉर्चर से स्व. सूर्या हांसदा की मौत हुई है। बाद में उन्हें गोली मार कर इनकाउंटर दिखाया जा रहा। घटनास्थल से मीडिया को दूर रखा गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर जो निशान पाये गये, उसकी स्पष्टता नहीं है। इसलिए फिर से पोस्टमार्टम कराकर रिपोर्ट तैयार किया जाये और पूरे घटना की सीबीआइ जांच हो।

विकास कार्यों का विरोध राज्यहित में नहीं : लाल किशोरनाथ शाहदेव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने रिम्स-2 निर्माण को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के विरोध प्रदर्शन पर कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के दबाव में चंपाई सोरेन को उनके आचरण के विरुद्ध रिम्स के निर्माण के विरोध के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी और सरकार, राज्य में स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर करने के लिए प्रयासरत हैं। सिर्फ रिम्स काफी नहीं, इसीलिए रिम्स टू का निर्माण होना है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी जिस तरीके से विकास कार्यों का विरोध कर रही है, वह राज्य के हित में कहीं से भी उचित नहीं। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने कहा कि स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा राज्य सरकार की जिम्मेवारी है और उनके हितों की रक्षा की अनदेखी नहीं होने दी जायेगी। उन्होंने कहा कि अभी एक रिम्स में है, उस पर पूरे राज्य राज्य का दबाव है। अगर रिम्स टू का अत्याधुनिक तकनीक से निर्माण होता है, तो यह पूरे राज्य के मरीजों के लिए यह एक सुखद होगा, लेकिन जिस तरह से बीजेपी विकास कार्यों का विरोध कर रही है। बीजेपी राजनीति कर रही है। वह कहीं से भी न्यायोचित नहीं है।

कांग्रेस प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने यह भी भरोसा दिलाया कि कांग्रेस पार्टी और राज्य सरकार नगड़ी के ग्रामीणों के हितों की भी अनदेखी किसी भी परिस्थिति में नहीं होने देगी। सभी राज्य सरकार पर भरोसा कर सकते हैं कि उनके हितों की रक्षा राज्य की सरकार अवश्य करेगी। विरोध प्रदर्शन के स्वरूप को देखने से भी साफ हो जाता है कि इसमें स्थानीय लोगों की कोई खास सहभागिता नहीं थी, सिर्फ भाजपा के इशारे पर रिम्स टू के निर्माण का विरोध किया जा रहा है।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
Subscribe NOW

58वां चार दिवसीय वार्षिक श्री श्याम महोत्सव 28 से

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री श्याम मंडल रांची की एक आमसभा रविवार को श्री श्याम मंदिर के सभागार में आयोजित की गयी। इसमें झारखंड राज्य की प्राचीनतम धार्मिक संस्था श्री श्याम मंडल, रांची का 58वां चार दिवसीय वार्षिक श्री श्याम महोत्सव 28 से 31 अगस्त रविवार तक अत्यंत धूमधाम और उत्साह के साथ आयोजित करने का निर्णय किया गया। महोत्सव के आयोजन श्री श्याम मंडल रांची द्वारा निर्मित अग्रसेन पथ स्थित श्री श्याम मंदिर में आयोजित होगा।

सभा में विभिन्न उप-समातियों कर उनके माध्यम से महोत्सव की तैयारियों में समर्पण भाव से कार्य पर विचार विमर्श कर मंदिर परिसर की साफ सफाई एवं रंग रोगन का कार्य पर चर्चा की गयी। बता दें कि प्रति वर्ष महोत्सव में श्री श्याम दरबार का श्रृंगार एक विशिष्ठ स्थान रखता है। श्री श्याम प्रभु एवं मंदिर में विराजमान बजरंगबली व कामना शिव परिवार के मनमोहक श्रृंगार के लिए कोलकाता से ही कुशल मालाकार से करने का निर्णय किया गया। महोत्सव में आने वाले भक्तों को पूर्ण सुविधा मिले, इस कार्य का विशेष ध्यान रखा जायेगा।

श्री श्याम मंडल के मीडिया प्रभारी सुमित पोद्दार ने बताया कि सभा में गोपी किशन ढांढनियां, चंद्र प्रकाश बागला, धीरज बंका, विवेक ढांढनियां, राजकुमार जलान, राजेश सारस्वत, अजय साबू, अमित जलान, अभिषेक डालमिया, प्रदीप अग्रवाल, अजय रूंगटा, प्रदीप अग्रवाल, गौरव परसरामपुरिया आदि उपस्थित थे।

सामाजिक विषयों पर अपने चिंतन को व्यापक स्वरूप देना होगा : सुदेश महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/लोहरदगा। झारखंड के नौजवानों को अपना सपना बड़ा करना होगा। हमें शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना होगा। हमें शिक्षा और रोजगार जैसे पहलुओं पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। आज के दौर में सामाजिक एकजुटता के साथ राजनीतिक प्रतिनिधत्व में अपनी उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए हमें नए विचारों के साथ आगे बढ़ना होगा। आज के दौर में सामाजिक सद्भाव के साथ राजनीतिक भागीदारी को नया स्वरूप देना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। उक्त बातें झारखंड के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुदेश महतो ने लोहरदगा में कही। वे लव कुश महासभा द्वारा आयोजित लव कुश जयंती समारोह में बतौर मुख्य अतिथि नगर भवन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा की नई पीढ़ी को यह समझना होगा की भविष्य की ज़िम्मेवारियां हमारे ऊपर है।

उन्होंने आयोजन की सराहना करते हुए कहा की लव- कुश जयंती समारोह सामाजिक एकरूपता का एक जीवंत उदाहरण है। ऐसे आयोजनों से सामाजिक चिंतन और विचारों को बल मिलता है। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षा, पावर लिफ्टिंग, नृत्य जैसे क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करने वाले अभ्यर्थियों को सम्मानित भी किया। उन्होंने छात्रों को टैबलेट देकर सम्मानित किया। उन्होंने नई पीढ़ी से आह्वान किया कि बदलते दौर में स्वयं को वैचारिक तौर समृद्ध करने की जरूरत है। साथ ही नैतिक तौर पर हमें मजबूत होने की जरूरत है। युवा पीढ़ी ही भविष्य को गढ़ेगा। युवा ही सम्माज की उम्मीद हैं। मिलकर सामाजिक परिवर्तन का संकल्प सबको लेना होगा। हजारीबाग लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी संजय मेहता ने भी समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा की आज के दौर में बेटियों को खुलकर अवसर देने होगा। समाज को यह चिंता करनी होगी की हमारी भागीदारी हर क्षेत्रों में कितनी है। नौकरशाही, न्याय पालिका, राजनीति, पत्रकारिता, खेल सभी क्षेत्रों हमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। हमें दूर दृष्टि के साथ कार्य करना होगा। नई पीढ़ी को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, आर्थिक स्थिरता, संपन्नता पर बल देना होगा। हमें यह तय करना होगा की हम समाज को क्या दिशा देना चाहते हैं। समाज एक स्कूल के समान है जहाँ नई पीढ़ी- सीखती और समझती है। नई पीढ़ी को यह मूल्यांकन करना होगा की हम भविष्य को कैसा स्वरूप देना चाहते हैं। आज लैंगिक समानता के संदर्भ में, बाल विवाह जैसे विषयों पर भी हमें चिंतन करना होगा। बेटियों के लिए समाज में समान अवसर उपलब्ध कराना होगा। ऐसा वातावरण हम सबको तैयार करना होगा। इस अवसर पर डॉ. देवशरण भगत, नम्रता कुमारी, हाकिम अंसारी, आशुतोष तिवारी, अंजू कुमारी, परवाज खान, डॉ पार्थ पारितोष उपस्थित रहे।

लेजर प्रॉक्टोलॉजी विषय पर वर्कशॉप का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज अस्पातल रांची में एसोसिएशन ऑफ सर्जंस ऑफ इंडिया (एएसआइ) - झारखंड चैप्टर , रांची साखा के सौजन्य से रविवार को एएसआइ द्वारा संचालित, स्किल एनहांसमेंट प्रोग्राम (एसइपीए) के अंतर्गत लेजर प्रॉक्टोलॉजी विषय पर एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप का नेतृत्व अस्पातल के वरिष्ठ लेजर एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ आशीष कुमार कर रहे थे, जिसमे राज्य के अन्य शहरों से जाने माने चिकित्सकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ आरपी श्रीवास्तव (एक्स. प्रेजिडेंट - एएसआइ) , डॉ राजेश कुमार सिंह (सेक्रेटरी - एएसआइ, झारखंड चैप्टर), डॉ मोहम्मद आजाद (नेशनल इसी मेंबर - एएसआइ) , डॉ संदीप कुमार अग्रवाल (चेयरमैन - एएसआइ), डॉ बीरेंद्र कुमार (मैनेजिंग डायरेक्टर - राज अस्पताल, रांची) एवं उपस्थित चिकित्सकों के द्वारा दीप

प्रजव्वलित करके किया गया।

मुख्यअतिथि डॉ आरपी श्रीवास्तव ने एएसआइ की स्थापन के शुरुआती दिनों को याद करते हुए बताया कि कैसे देखते ही देखते सभी चिकितसकों के सम्मिलित योगदान से एएसआइ का दायरा बढ़ता गया। उन्होने सर्जरी के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन हो रहे उन्नतियों से सभी को जागरूक एवं प्रशिक्षित करने के लिए (एएसआइ) द्वारा संचालित स्किल एनहांसमेंट प्रोग्राम (एसइपीए) की प्रसंशा की। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम से सर्जन्स सिर्फ प्रशिक्षित ही नहीं होंगे, बल्कि मरोजों को और भी बेहतर उपचार दे पायेंगे। उन्होंने राज अस्पताल के सहयोग की सराहना की और इसी वर्ष अक्टूबर महीने में एएसआइ द्वारा आयोजित सर्जंस की एक वृहत सम्मलेन में शामिल होने के लिए आमंत्रित भी किया।

प्रशिक्षिक डॉ आशीष कुमार ने बताया कि लेजर के उपयोग से बीमारियों के इलाज में बहुत फायदा होता है। राज अस्पताल के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ बीरेंद्र कुमार ने एएसआइ का धन्यवाद किया। उन्होंने अस्पातल के वरिष्ठ लेजर एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन, प्रशिक्षक डॉ आशीष कुमार तथा राज अस्पातल की टीम के प्रयासों की सराहना की। डॉ कुमार ने कहा कि राज अस्पताल इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए सतत अग्रसित है और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रयासरत रहेगा। उन्होंने बताया कि राज अस्पातल मरीजों को उचित सुविधाएं, आधुनिक एवं उचत्तम तकनीक द्वारा बेहतर इलाज मुहैया करने के लिए प्रतिबद्ध है।

समाधान फाउंडेशन मुफ्त नशा मुक्ति शिविर लगा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। समाधान फाउंडेशन सह नशा मुक्ति केंद्र के द्वारा रविवार को सार्थक - एक पहल नशा मुक्ति अभियान की शुरूआत की गयी। इसके अंतर्गत अंजुमन इस्लामिया हॉस्पिटल रांची के द्वारा मुफ्त नशा मुक्ति शिविर का आयोजन अंजुमन इस्लामिया हॉस्पिटल रांची में किया गया। इस शिविर में नशे की बीमारी से ग्रसित रोगी एवं उनके परिजन ने मुफ्त चिकित्सीय सलाह का लाभ लिया। शिविर में समाधान के वरिष्ठ मनोचिकित्सक एवं नशा रोग विशेषज्ञ डॉ सुरजीत प्रसाद ने मरीजों की जांच कर उन्हें चिकित्सीय सलाह दी एवं समाधान के क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट डॉ सुनिल ने शिविर में आये मरीजों की काउंसलिंग की।

समाधान के निदेशक शाहिद इकबाल ने कहा कि आज रांची के हर इलाके में युवा पीढ़ी नशे के गिरफ्त में है। इस कार्यक्रम द्वारा समाज के बुद्धिजीवी लोगों को जोड़ा जायेगा, ताकि नशे के लत से पीड़ित रोगियो एवं परिवार को उचित इलाज कराया जाये और

जागरूकता अभियान चला कर नयी पीढ़ी को नशे की लत से बचाने में सहयोग किया जा सके।

कार्यक्रम में रेनबो होम्स इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक अनवारूल हक ने कहा कि नशे की समस्या को दूर करने के लिए सामाजिक भागीदारी सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है और उनकी संस्था सार्थक - एक पहल को सफल बनाने में हर संभव मदद करेगी।

अंजुमन इस्लामिया हॉस्पिटल के संयोजक मोहम्मद शफीक ने बताया कि अब से प्रत्येक महीने के चौथे रविवार को सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक मुफ्त नशा मुक्ति शिविर का आयोजन हॉस्पिटल परिसर में समाधान नशा मुक्ति केंद्र के सहयोग से किया जायेगा। दुआ फाउंडेशन के झारखंड संयोजक हमजा रयान ने कहा कि दुआ फाउंडेशन मुहिम चला कर रांची के शहरी क्षेत्र में युवाओं और आम जन मानस को नशे के उपयोग से होने वाली शारीरिक, पारिवारिक और सामाजिक दुष्प्रभावों से अवगत कराएगी और अधिक से अधिक लोगों को इस शिविर से जोड़ने का प्रयास करेगी। समाधान फाउंडेशन के कम्युनिटी कॉर्डिनेटर शाहबाज अहमद ने अंजुमन इस्लामिया हॉस्पिटल का आभार जताया। कार्यक्रम को सफल बनाने में साहिल, इमरोज, मेहराब, नूर आदि का विशेष योगदान रहा।

श्री दुर्गा पूजा समिति, भुतहा तालाब की नयी कमेटी बनी

उमंग सुल्तानिया अध्यक्ष, महामंत्री प्रिंस मेहता और कार्यकारिणी अध्यक्ष राहुल सिंह को श्री दुर्गा पूजा समिति का बनाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रविवार को श्री दुर्गा पूजा समिति भुतहा तालाब का भव्य दुर्गा पूजा के लिए भूमि पूजन किया गया।साथ ही एक बैठक रखी गयी। इसमें वर्ष 2025 का दुर्गा पूजा का आय बाय का ब्योरा प्रस्तुत किया गया। पुरानी कमेटी को विस्तार करते हुए नये सदस्यों को जोड़ा गया। सर्वसमिति से उमंग सुल्तानिया को वर्ष 2025 के पूजा समिति का अध्यक्ष चुना गया। पूजा कमेटी में मुख्य संरक्षक किशोर साहू, शंकर दुबे, रमेश सिंह, वरिष्ठ संरक्षक राज कुमार गुप्ता, रवि कुमार पिंकू, उदय साहू, गोपाल पारीक, संयोजक कुमार राजा, संरक्षक विशाल कृष्णा, वरुण साहू, कुश अग्रवाल, दीपू सिंह, विकाश गुप्ता, राजेश वर्मा, धीरज वर्मा, नन्द किशोर सिंह चंदेल, शिव प्रताप सिंह (टुन्ना सिंह), आयोजक संजय सिंह (लल्लू सिंह), गणेश सिंह, सतीश सिंह सह आयोजक भोलू सिंह, बंटी वर्मा, अध्यक्ष उमंग सुल्तानीया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद वर्मन, सतीष सिंह, राजू चौधरी, मिथलेश वर्मा, मुकेश सिंह, पिंकू साव, महामंत्री प्रिंस मेहता, कार्यकारणी अध्यक्ष राहुल सिंह, उपाध्यक्ष शुभम वर्मा, प्रकाश पासवान, संजय साहू, सौरव रॉय, रोहित वर्मा, शेखर रजक, नवीन गुप्ता, विवेक सिंह, अभिषेक वर्मा , रिक्की वर्मा, निकु वर्मा, रिषभ सिंह, वरिष्ठ सहमंत्री करण सिंह, मोहित रजक, आशीष रजक, अर्जुन सिंह, रोहन रजक, आकाश सिंह, सिंह, शोरव सह मंत्री वर्मा, यश आयुष रजक, प्रियांशु वर्मा, आयुष वर्मा, रोमित साहू, शेखर रजक, गौरव रजक, सनी सिंह, आकाश वर्मा, हर्ष सिंह, अमन वर्मा, भोला कुमार, अभिषेक उराव, समीर नायक, आदित्य कुमार, ऋतविका, शिवम् वर्मा, रोहन महतो,राहुल वर्मा, सोनू जेसवाल, सागर वर्मा, शिवराज, अलोक गुप्ता, शुभम सोनी, कोषाध्यक्ष : संजय तिवारी, राहुल रजक, सह कोषाध्यक्ष : आकाश वर्मा, रोहित रजक, प्रचार मंत्री : भोला चोधरी, प्रवक्ता नमन भारतीय, सोशल मिडिया प्रचारक साजन सिन्हा, पंडाल प्रभारी आकाश रजक, भंडारा प्रभारी महेंद्र रजक, अजय रजक, राजू वर्मा, बिकु रजक पूजा प्रभारी रूपक जायसवाल, संतोष सिंह, रवि सिंह), मिथलेश सिंह सदस्य अभिषेक रजक, आयुष सिंह, अंकुश वर्मा, लकी रजक, कृष्णा रजक, अंकित वर्मा, अमन रजक, हर्ष रजक, अंशु वर्मा, आयुष वर्मा, हैप्पी वर्मा अभी अन्य और सदस्यों को भी जोड़ा जायेगा। रविवार को पंडाल के लिए खूंटी पूजन भी किया गया।

झारखंड प्रदेश आंगनबाड़ी वर्कर्स यूनियन का प्रतिनिधिमंडल धर्मेंद्र तिवारी से मिला

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश जनता दल यूनाइटेड के वरिष्ठ नेता धर्मेंद्र तिवारी से रविवार को झारखंड प्रदेश आंगनबाड़ी वर्कर्स यूनियन का प्रतिनिधि मंडल मिलकर अपनी पीड़ा को बताया। मांगों का समर्थन करते हुए तिवारी ने कहा कि सरकार को विचार करना होगा। जेडीयू हमारी पार्टी आपके मांगों को सरकार तक पहुंचाएंगी, प्रदेश की आंगनबाड़ी सेविका और सहायिकाएं समाज के सबसे निचले तबके तक पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाने में वर्षों से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। बावजूद इसके, सरकार द्वारा उन्हें न तो सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया गया है और न ही सेवानिवृत्ति पर कोई आर्थिक लाभ दिया जा रहा है। यह स्थिति बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और अमानवीय है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी सेविका/सहायिकाओं को सेवानिवृत्ति उपरांत कम-से-कम पांच लाख रुपये का आर्थिक लाभ तथा मानदेय का आधा पेंशन दिया जाना चाहिए, ताकि उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिले। सरकार के साथ मिलकर सेविकाएं सभी योजनाओं को सुचारू रूप से चलने के लिए समाज और सरकार के बीच में सेतु का कार्य करती है। जब-जब आवश्यकता पड़ी निरंतर सरकार के साथ खड़ी दिखाई दी । साथ ही, केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई एफ.आर.एस. प्रणाली से सेविकाएं भारी परेशानियों का सामना कर रही हैं, इसे तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए। तिवारी ने राज्य सरकार से यह भी मांग की कि सेविकाओं को इछड कार्य जैसे अतिरिक्त भार से मुक्त किया जाये, केवल विभागीय कार्यों तक सीमित रखा जाये।

शिव शिष्य परिवार का 'पर्यावरण संरक्षण में हमारी सहभागिता' कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। शिव शिष्य परिवार के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण में हमारी सहभागिता विषयक संगोष्ठी का आयोजन टाना भगत स्टेडियम, खेलगांव, रांची में किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए दीदी बरखा आनंद ने कहा कि वन के महत्व से हम सभी परिचित हैं। अगर हम इतिहास के पन्नों को पलट कर देखेंगे, तो हम पायेंगे कि पूर्व में वनों का प्रतिशत ज्यादा था, जनसंख्या कम थी, पशुओं की संख्या भी कम थी। इसलिए इसके महत्व के बारे में लोग उतना नहीं सोचते थे, लेकिन बाद में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, संरचनात्मक विकास की वृद्धि के साथ-साथ वनों का विनाश होता गया, जिसका परिणाम आज हाल की घटनाओं के रूप में प्रकट हो रहा है। कहने का तात्पर्य है कि कहीं सूखा तथा कहीं बाढ़, तो कहीं भूस्खलन के रूप में हमारे सामने आता है। पेड़-

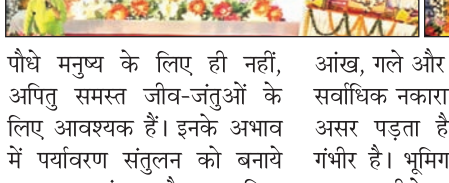

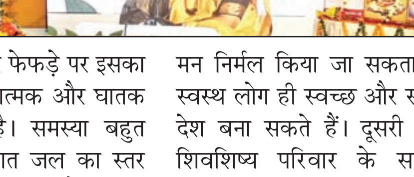

पौधे मनुष्य के लिए ही नहीं, अपितु समस्त जीव-जंतुओं के लिए आवश्यक हैं। इनके अभाव में पर्यावरण संतुलन को बनाये रखना असंभव है। सामूहिक प्रयासों से ही इस महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।

संगोष्ठी का शुभारंभ संकीर्तन एवं जागरण भजन से हुआ। झारखंड राज्य के विभिन्न हिस्सों से आये हुए लोगों का स्वागत राजेश कुमार कोषाध्यक्ष शिव शिष्य परिवार ने किया। मुख्य सलाहकार अर्चित आनंद ने कहा कि हमें पौधे लगाना चाहिए। हम सभी ने मिल कर पिछले 20 वर्षों में लगभग एक करोड़ से ज्यादा पौधे लगा चुके हैं और निरंतर इस दिशा में हम काम कर रहे हैं। वायु प्रदूषण से सांस लेने में दिक्कत आती है। घुटन महसुस होती है। आंख, गले और फेफड़े पर इसका सर्वाधिक नकारात्मक और घातक असर पड़ता है। समस्या बहुत गंभीर है। भूमिगत जल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है। इसका एक मात्र कारण वृक्षों का कटाव है। पेड़ों की सुरक्षा के लिए इससे बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता कि हम वृक्षों को अपना समझें, अपने परिवार का हिस्सा समझें।

श्री आनंद ने कहा कि हमारे गुरु शिव प्रकृति का अयन करते हैं। वे प्रकृति के पालक हैं, संरक्षक भी हैं। शिव के शिष्य अपने गुरु शिव की बनायी हुई दुनियां के साथ छेड़छाड़ नहीं करते, वर्ना उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण में मनसा-वाचा-कर्मणा तत्पर रहते हैं। शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष प्रोफेसर रामेश्वर मंडल ने कहा कि शिव की शिष्यता से मन निर्मल किया जा सकता है। स्वस्थ लोग ही स्वच्छ और समृद्ध देश बना सकते हैं। दूसरी ओर शिवशिष्य परिवार के सचिव अभिनव आनंद ने कहा कि वृक्ष आदिकाल से ही मनुष्य के हितैषी रहे हैं। वृक्ष हमसे कुछ न लेते हुए भी हमें बहुत कुछ देते हैं, जो एक सच्चा मित्र ही कर सकता है। उन्होंने गुरु दक्षिणा पर बोलते हुए कहा कि गुरु दक्षिणा का अर्थ होता है गुरु के प्रति कृतज्ञ होना। निहारिका ने शिव के गुरुपद पर प्रकाश डाला। शिव शिष्य परिवार के मिडिया प्रभारी कन्हैया ने बताया कि संगोष्ठी में झारखंड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आये लगभग पांच हजार आगंतुकों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षों को लगाने एवं उनके संरक्षण के संदर्भ में विचार रखे।

महत्वपूर्ण खबरें

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के विचारों से भटक गया है झामुमो : सुदेश महतो

रांची (आजाद सिपाही)। आजसू प्रमुख एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने कहा है कि हेमंत सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने नगड़ी के जमीन बचाओ आंदोलन का समर्थन कर विस्थापित आदिवासियों को खेत जोतने कहा था। आज मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन गुरुजी के विचारों से भटक गये हैं और तानाशाह रवैये पर उतर आये हैं। अबुआ सरकार आदिवासियों के दमन में जुट गयी है। नगड़ी आंदोलन को दबाने के लिए कल रात पत्रकार तीर्थनाथ आकाश और महिला आदिवासी पत्रकार सुनीता मुंडा को डिटेन किया गया और आज सवेरे पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन को नजरबंद किया गया। लेकिन सरकार हजारों आदिवासियों को हल चलाने और रोपा रोपने से नहीं रोक पाई। श्री महतो ने कहा कि सिरम टोली सरना स्थल के सामने रैंप का विरोध करने पर सरना आदिवासियों पर लाठी चली। भोगनाडीह में सिदो-कान्हु के वंशजों पर हूल दिवस पर पुलिस द्वारा लाठी चलायी गयी। सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता सूर्या हांसदा को मुठभेड़ के नाम पर मार डाला गया। अब नगड़ी में आंसू गैस और लाठी चलाकर आदिवासीझ्रमूलवासी जनता को भयाक्रांत किया जा रहा है। आजसू पार्टी विस्थापितों के साथ हमेशा खड़ी रहेगी।

झामुमो-कांग्रेस का आदिवासी विरोधी चरित्र उजागर हुआ : प्रवीण प्रभाकर

रांची (आजाद सिपाही)। आजसू के केंद्रीय उपाध्यक्ष एवं झारखंड आंदोलनकारी प्रवीण प्रभाकर ने कहा है कि नगड़ी में झामुमो-कांग्रेस का आदिवासी विरोधी चरित्र सामने आ गया है। जनता का विश्वास अब इस सरकार पर नहीं रहा। अलग राज्य इसलिए नहीं लिया गया था कि झारखंड की आदिवासी-मूलवासी जनता पर लाठीझ्रगोली चले। रिम्स 2 अवश्य बनना चाहिए, लेकिन खेती की जमीन पर नहीं, बल्कि बंजर जमीन पर बने। श्री प्रभाकर ने कहा कि झारखंड में संघर्ष का एक लंबा इतिहास रहा है। साथ ही विस्थापन का भी इतिहास रहा है। अंग्रेजों के बाद कांग्रेस ने आदिवासी जनता पर गोलियां चलाईं और दमन किया। अब झामुमो भी दमनकारी नीति पर चल रहा है।

प्रदर्शनकारियों के ऊपर आंसू गैस छोड़ना घोर निंदनीय है : राजेंद्र प्रसाद

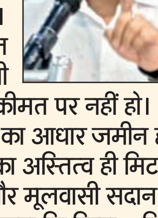

रांची (आजाद सिपाही)। मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने रिम्स 2 के विरोध में प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस के गोली छोड़े जाने की घोर निंदा की है। उन्होंने रिम्स 2 निर्माण को लेकर कहा कि विस्थापन झारखंड में अभिशाप बन गया है। उन्होंने कहा कि यह मुख्यमंत्री को व्यक्तिगत रूप से सुनिश्चित करना चाहिए कि आदिवासी और मूलवासी सदानों का विस्थापन किसी कीमत पर नहीं हो। श्री प्रसाद ने कहा कि आदिवासियों की जीविका का आधार जमीन है। आदिवासी विस्थापित होते चले गये, तो इनका अस्तित्व ही मिट जायेगा। श्री प्रसाद ने कहा कि आदिवासी और मूलवासी सदान के लिए विस्थापन अभिशाप बन गया। उन्होंने कहा कि रिम्स 2 किसी गैर मजरुआ जमीन पर ही बनना चाहिए।

बाबा गणिनाथ गोविंद पूजन सह वार्षिकोत्सव संपन्न

रांची (आजाद सिपाही)। गोविंदपुरम, बिजूलिया रोड, रातू स्थित प्रांगण में शनिवार को बाबा गणिनाथ गोविंद पूजन सह वार्षिकोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक वैदिक मंत्रोच्चार एवं पूजन विधि से हुई। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने बाबा गणिनाथ गोविंद के दरबार में अपनी आस्था प्रकट की और बड़ी संख्या में दर्शन-पूजन किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीएन लाल, (डीआइजी, सीआरपीएफ) ने उपस्थित होकर श्रद्धालुओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन समाज को एकता, शांति और संस्कारों से जोड़ते हैं। भजन-कीर्तन, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये, जिसमें महिलाएं, युवक, बाल कलाकार ने अपनी प्रस्तुति से वातावरण को भक्ति-रस में सराबोर कर दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण, भक्तगण एवं समाजसेवी उपस्थित रहे और आयोजन की सफलता में अपना योगदान दिया। अंत में समापन पर प्रसाद एवं भंडारा का आयोजन हुआ। इसमें श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से सहभागिता की। बाबा गणिनाथ गोविंद ट्रस्ट, रातु द्वारा यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, जो समाज में धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है। इस आयोजन में ट्रस्ट के निपुण मृणाल, अशोक कुमार प्रसाद, अभिजीत कुमार, संजीव प्रसाद, प्रेमचंद प्रसाद, कंचन कुमार, दिनेश प्रसाद, राजीव प्रसाद, मिथिलेश प्रसाद, सुनील प्रसाद, इंद्रदेव साह, प्रकाश कुमार गुप्ता, नन्हकू साव, अजय कुमार साव, अवध बिहारी प्रसाद, बिरेंद्र प्रसाद राम बिनोद साव, महेश कुमार साव, सुरेंद्र प्रसाद गुप्ता, उदय शंकर गुप्ता, शंभु साव, विकास कुमार गुप्ता, अमित कुमार गुप्ता, महादेव साव, प्रभु नाथ प्रसाद गुप्ता ने भाग लिया।

श्रीश्री सर्वजनीन दुर्गा पूजा समिति की बैठक

रांची (आजाद सिपाही)। एचइसी कॉलोनी स्थित साइड 5 सेक्टर 2 में रविवार को पूर्वाह्न 11 बजे श्रीश्री सर्वजनीन दुर्गा पूजा समिति सेक्टर 2 साइड 5 का महावीर मंदिर परिसर में सक्रिय भागीदारी निभाने वालों की बैठक नव युवकों की उपस्थिति में संपन्न हुई। इसमें पिछले साल के खर्च आय व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद इस वर्ष 2025 में पिछले वर्ष से हर स्तर पर महंगाई एवं पंडाल, लाइटिंग विद्युत सज्जा, साउंड सिस्टम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुजारी पंडित खर्च, ढाकी , मूर्ति इत्यादि सभी स्तर पर कमों बेस लागत बढ़ने से आवासीय कॉलोनी साइड 5 में रहने वालों सम्मानित परिवारों को स्वेच्छा से अपने स्तर से सहयोग राशि बढ़ाकर देने का अनुरोध किया गया है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी पूजा सम्पन्न कराने में समिति ने अपने पुराने सक्रिय भूले बिसरे, पूजा से जुड़े वीआइपी, अतिविशिष्ठ लोगों को जोड़ते हुए उनके आर्थिक सहयोग से पूजा के लागत को पूरा करने में जोर दिया है। इस कार्य में समिति के सभी पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्यों ने सक्रियता से सभी पुराने लोगों की खोज कर उनसे अनुरोध कर सहयोग लेगी। पूजा पंडाल राज टेंट हाउस सेक्टर 2 साइड 5 मार्केट एचइसी कॉलोनी बना रहे हैं। पूजा समिति के सदस्यों की सक्रियता को बढ़ावा देने के लिए हर रविवार को पूजा तैयारी की समीक्षा बैठक की जायेगी।

कांग्रेस सेवा दल ही मुंहतोड़ जवाब दे सकती है : आलोक कुमार दुबे

- ट्रेनिंग कैंप में आकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं: निरंजन पासवान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आरएसएस जैसे फासीवाद और नाजीवाद संगठन का मुकाबला कांग्रेस सेवा दल ही कर सकती है। कांग्रेस सेवा दल का एक समृद्धशाली इतिहास रहा है। उक्त विचार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महासचिव आलोक कुमार दुबे प्रदेश कांग्रेस सेवा दल के तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन प्रकट कर रहे थे।

आलोक दुबे ने कहा कांग्रेस सेवादल कांग्रेस का मजबूत स्तंभ है और अनुशासित संगठन भी,कांग्रेस सेवा दल की देश की आजादी में बड़ा योगदान रहा है या यूं कहें कि अंग्रेज भी सेवा दल से काफी घबड़ाते थे। यह संगठन कांग्रेस की विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का काम करता है। आलोक दुबे ने कहा सेवा दल को कमजोर किया गया। संगठन में थोड़ा परिवर्तन जरूर हुआ है, लेकिन वक्त का पहिया फिर घूम रहा है। सेवा दल के महत्व और उपयोगिता को पार्टी एवं राहुल गांधी समझ रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी भी सेवा दल के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने कहा कभी कांग्रेस पार्टी में पदाधिकारी बनने के लिए सेवा दल का प्रशिक्षण प्राप्त होना जरूरी माना जाता था, कांग्रेस सेवादल को मजबूत करने की हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने ट्रेनिंग ले रहे साथियों से कहा आपकी ट्रेनिंग आने वाले दिनों में काफी उपयोगी साबित होगी, कांग्रेस प्रभारी के राजू एवं नेतृत्व को आपकी भावना से मैं जरूर अवगत कराऊंगा।

कांग्रेस सेवा दल के राष्ट्रीय सचिव एवं प्रशिक्षक देवेंद्र शर्मा ने सभी प्रशिक्षण ले रहे महत्वपूर्ण साथियों का परिचय कराया एवं कहा कि इन सब की आगे ले जाने की जिम्मेदारी प्रदेश कांग्रेस महासचिव आलोक दुबे, निरंजन पासवान जैसे नेता एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी की है। राज्य भर से आये साथियों को सेवा दल वैचारिक रूप से तैयार कर रही है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता निरंजन पासवान ने कहा कि लंबे अरसे के बाद सेवा दल के ट्रेनिंग कैंप में आकर अपने आप को गौरवान्वित भी महसूस कर रहा हूं। सेवा दल की मजबूती के लिए हर संभव प्रयास करूंगा। सेवा दल की दूसरे दिन कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश सेवा दल की कार्यकारी अध्यक्ष ज्योति कुजूर ने की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय प्रशिक्षक अनिल वैद्य, प पवन चौधरी, मेहुल कुमार, तारामणि साहू, गुलजार अहमद, गौतम मिश्रा, गुंजन मिश्रा मुख्य रुप से उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी एवं दिशोम गुरु शिबू सोरेन को श्रद्धासुमन अर्पित करने के साथ शुरूआत की गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश कांग्रेस महासचिव आलोक कुमार दुबे एवं निरंजन पासवान तथा विशिष्ट अतिथि मेंहुल दुबे को अंग वस्त्र एवं सेवा दल टोपी पहनकर स्वागत किया गया।

श्रीराधा-कृष्ण प्रणामी मंदिर में श्रीकृष्ण की छठी और नंदोत्सव में खूब झूमे श्रोता

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर पुंदाग में नंदोत्सव एवं भगवान की छठी महोत्सव का भव्य आयोजन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर नंदोत्सव एवं भगवान की छठी महोत्सव का भव्य आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ किया गया। महोत्सव की शुरुआत भगवान श्रीकृष्ण के अलौकिक श्रृंगार दर्शन से हुई। इसमें श्रद्धालुओं ने बाल गोपाल के छठी पूजन के विशेष दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। कोलकाता से पधारे कलाकारों ने संगीतमय नृत्य-नाटिका के माध्यम से-सांवरिया झंझट बड़े अपार, काला कृष्णा गोरा कृष्ण की लीला, नरसिंह अवतार की लीला, नंद उत्सव, महारास एवं जीवन प्रसंगों को अत्यंत भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया। भगवान श्रीकृष्ण के नंदोत्सव को दर्शाते हुए नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की भजन पर जब कलाकारों ने नृत्य किया, तो संपूर्ण वातावरण कृष्णमय हो गया। ट्रस्ट के भजन गायक मनीष सोनी, सज्जन पाड़िया, वेद्यया, उर्मिला पाड़िया, सीता शर्मा, निर्मल जालान, श्रीकृष्ण के चरणों में भजनों की लड़ी लगा दी, उनके गाये भजनों में श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम... मुरली मनोहर कृष्ण कन्हैया... छोटे से बालक की लीला निराली... श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

छठी महोत्सव के अंतर्गत बाल गोपाल का पारंपरिक रूप से छठी पूजन किया गया, पुजारी अरविंद पांडे ने विधिवत भोग लगाया। इसमें विशेष पूजन सामग्री, श्रीफल, पंचमेवा, और छप्पन भोग अर्पित किए गए।महोत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन सामूहिक महाआरती से हुआ। इसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने दीप प्रज्ज्वलन कर एक साथ आरती कुंज बिहारी की भावपूर्ण गायन किया। इसके पश्चात सभी को महाप्रसाद वितरित किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष डूंगरमल अग्रवाल ने बताया कि यह आयोजन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को एक भक्ति,श्रद्धा और सांस्कृतिक रंगों से सराबोर महापर्व के रूप में स्थापित करता है। इस अवसर पर-डूंगरमल अग्रवाल,राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, मनोज चौधरी, निर्मल जालान, सज्जन पाड़िया, पूरणमल सर्राफ, शिव भगवान अग्रवाल, संजय सर्राफ, मधुसूदन जाजोदिया, विशाल जालान, नवल अग्रवाल, मनीष जालान, नंदकिशोर चौधरी, विष्णु सोनी, मनीष सोनी, पवन पोद्दार, सुनील पोद्दार, ज्ञानचंद शर्मा, विद्या देवी अग्रवाल, संतोष देवी अग्रवाल, शोभा जालान और सुनीता अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

श्रीकृष्ण भगवान की सामूहिक छठी धूमधाम से मनायी गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री राधाकृष्ण मंदिर, कृष्णा नगर कॉलोनी में रविवार को शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक श्री कृष्ण भगवान की सामूहिक छठी धूम धाम से मनायी गयी। इसमें लड्डू गोपाल का विशेष श्रृंगार किया गया। लड्डू गोपाल को छप्पन भोग लगाया गया। दुर्गा जागरण मंडली के पवन मनुजा, केसर पपनेजा, एवं स्त्री सत्संग की ज्योति अरोड़ा, एवं कौशल्या देवी अन्य कलाकारों के द्वारा भी भजनों की प्रस्तुति दी गयी। वृन्दावन के ओ बांके बिहारी,हमसे पर्दा करो ना मुरारी.... एवं चलो रे मन श्री वृंदावन धाम रटेगे राधे राधे नाम... एवं जिसने मेरा दिल लूटा वो तो बांके बिहारी है.... तथा वृंदावन की इन कुंज गलीन में खुशबू बिहारी जी की आती है... जैसे कई भजन गायन कर श्रद्धालुओं को झूमने पर विवश कर दिया। इसके पश्चात लड्डू गोपाल की आरती की गयी। प्रसाद का वितरण भक्तों के बीच में किया गया। मीडिया प्रभारी अरुण जसूजा ने बताया कि इस मौके पर मंदिर कमेटी इस अवसर पर मंदिर परिसर को आकर्षक रूप से सजाया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान नंद किशोर अरोड़ा, मुखी राधेश्याम किंगर, चंद्रभान तलेजा, रामचंद्र तलेजा मनोहर, लाल जसूजा केसर पपनेजा, हरीश अरोड़ा, किशोरी मुंजाल, चुन्नीलाल पपनेजा, चंदन सिडाना, अरुण जसूजा, किशोरी पपनेजा, गौरीशंकर मादनपोत्रा, हरीश मनुजा, प्रवीण घई, विशाल अरोड़ा, कमल घईनरेश खत्री, नरेश अरोड़ा, मुकेश तलेजा, विजय जसूजा, विनीत अरोड़ा, पंकज गक्कड़, पवन मनुजा, सुनील कटारिया, पवन पपनेजा, अनिल मुंजाल, निखिल घई,उमंग मनुजा, रोहित तलेजा, विशाल अरोड़ा, रौनक मिड्ढा, विकास घई, ललित किंगर, सुशील गेरा, संजय पपनेजा, विनोद किंगर, देवराज, मनुजा, मुकेश मुंजाल, कौशल्या देवी, पूनम तलेजा, राज देवी मनुजा, शकुंतला देवी मुंजाल ज्योति अरोड़ा, नीलम अरोड़ा, राधा देवी तलेजा, बबीता पपनेजा, सिम्मी पपनेजा, संगीता मिढा, रूबी अरोरा, निशा पपनेजा, कामना खत्री, निशा तलेजा, पूजा जसूजा, रेखा घई, रश्मि काठपाल, कांता देवी अरोड़ा, श्वेता चावला, शालू मिड्ढा, सुनीता विज, संगीता मादनपोत्रा, ऋचा मिड्ढा, पिंकी तलेजा, छाया पपनेजा शामिल थे।

अवैध हथियार फैक्ट्री का भंडाफोड़ दो गिरफ्तार, मुख्य आरोपी फरार

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर पुलिस ने शहर में चल रही एक अवैध हथियार फैक्ट्री का खुलासा कर दिया। डीएसपी मनोज ठाकुर के नेतृत्व में आठ घंटे तक चली कार्रवाई में पुलिस ने लखिंदर सरदार और उसके एक सहयोगी को गिरफ्तार किया। मौके से छह पिस्टल, हथियार बनाने के उपकरण और तीन लेथ मशीनें बरामद की गईं। यह फैक्ट्री सोनारी के टीलब भट्ठा टीओपी से महज 20 फीट की दूरी पर संचालित हो रही थी।पुलिस के अनुसार इस गोरखधंधे का मुख्य आरोपी समीर सरदार फरार है। उसकी तलाश में ओडिशा और सरायकेला के संभावित ठिकानों पर छापेमारी जारी है। पूछताछ में लखिंदर सरदार ने स्वीकार किया फैक्ट्री पिछले एक साल से चल रही थी। मृत अपराधी टीलब सरदार के मकान में संचालित की जा रही थी। आरोपियों ने बैग बेचने की आड़ में दुकान खोल रखी थी ताकि पुलिस और आसपास की गतिविधियों पर नजर रखी जा सके।डीएसपी मनोज ठाकुर ने बताया गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गयी। प्रारंभिक जांच में खुलासा हुआ है समीर सरदार बिहार के ग्राहकों को पिस्टल सप्लाई करता था। देर रात तक जब्त सामान को ट्रक से थाना लाने की प्रक्रिया जारी रही।

नॉन स्कूलिंग पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगे : पासवा

रांची (आजाद सिपाही)। पब्लिक स्कूल्स एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन (पासवा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार दूबे ने झारखंड सरकार से मांग की है कि राज्य में कोचिंग संस्थानों पर सख्त और पारदर्शी नियमावली लागू की जाये। उन्होंने कहा कि छात्रों और अभिभावकों के हित में अब कठोर कानून बनाना समय की मांग है। साथ ही कहा कि बच्चों के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए नॉन स्कूलिंग किसी भी परिस्थिति में पूरी तरह से बैन होना चाहिए। एक महीने के अंदर कोचिंग छोड़ने वाले बच्चों की पूरी फीस वापस होने का प्रावधान किया जाना चाहिए। कोचिंग संचालन का समय द्वितीय पाली से रात्रि 8 बजे तक निर्धारित हो। सीबीएसई की ओर से नॉन स्कूलिंग पर प्रतिबंध लगाया गया है, फिर भी कई स्कूल इस नियम का अनुपालन नहीं करते हैं। नॉन स्कूलिंग शिक्षा पर ग्रहण की तरह है। पासवा ने स्पष्ट कहा कि इन सभी बिंदुओं को लागू करने के लिए झारखंड सरकार को जल्द से जल्द कठोर कोचिंग रेगुलेशन कानून बनाना चाहिए। इससे न सिर्फ छात्रों का भविष्य सुरक्षित होगा बल्कि अभिभावकों को भी आर्थिक और मानसिक शोषण से मुक्ति मिलेगी।

डीसी का आज होनेवाला जनता दरबार स्थगित

रांची (आजाद सिपाही)। प्रत्येक सप्ताह सोमवार को आयोजित होने वाला जनता दरबार, जो 25 अगस्त को प्रस्तावित था, उसे स्थगित कर दिया गया है। जनता दरबार का आयोजन अब अगले निर्धारित तिथि पर किया जाएगा। जिला प्रशासन नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे अपनी शिकायतों और समस्याओं को दर्ज करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल, जन शिकायत हेतु जिला प्रशासन का आधिकारिक व्हाट्सएप अबुआ साथी- 9430328080 पर शिकायत करें। जिला प्रशासन असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है और नागरिकों से सहयोग की अपील करता है। हम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर हैं और जल्द ही जनता दरबार के अगले सत्र में सभी के साथ संवाद स्थापित करेंगे।

महत्वपूर्ण खबरें

अदिति गैस एजेंसी का सुरक्षा क्लिनिक कार्यक्रम

रांची (आजाद सिपाही)। अदिति गैस एजेंसी ने रविवार को रांची के बांधगाड़ी बस्ती, दीपाटोली में एक सुरक्षा क्लिनिक का आयोजन किया। इस क्लिनिक का उद्देश्य निम्न आय वर्ग के परिवारों को गैस सिलेंडर के सुरक्षित उपयोग और संभाल के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम क्लिनिक में गैस सिलेंडर को सुरक्षित रूप से कैसे संभालें और उपयोग करें, इसके बारे में विस्तार से बताया गया। इस क्लिनिक में गैस और पैसे बचाने के तरीकों के बारे में भी जानकारी दी गयी। गैस रिसाव या आग लगने की स्थिति में तुरंत क्या सावधानियां बरतनी चाहिए, इसके बारे में भी बताया गया। कार्यक्रम में आदित्य तिग्गा, प्रबंधक, इंडियन ऑयल, पूजा महेश, एलपीजी आपूर्ति, रांची की प्रभारी अधिकारी, उमेश राय, मालिक, अदिति गैस एजेंसी सहित अन्य कर्मचारी और स्थानीय निवासी मौजूद थे। इसमें लगभग 50 महिलाओं ने कार्यक्रम में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किये।इस दौरान सुरक्षा प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गयी और प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। सामाजिक कार्यकर्ता आनंद खालको ने सभी प्रतिभागियों और आइओसीएल एवं एजेंसी के अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

अमितेश बने पलामू प्रमंडल के क्षेत्रीय समन्वयक

रांची (आजाद सिपाही)। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राजीव गांधी पंचायती राज संगठन ने अमितेश कुमार को पलामू प्रमंडल का क्षेत्रीय समन्वयक नियुक्त किया है। उन्हें राजीव गांधी पंचायती राज संगठन झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष सुनीत शर्मा और उपाध्यक्ष शांतनु मिश्रा ने नियुक्ति पत्र देकर सम्मानित किया। अमितेश कुमार ने कहा कि उनका लक्ष्य जमीनी स्तर पर काम करना और पंचायती राज संगठन को मजबूत बनाना है। वह पलामू प्रमंडल में संगठन की गतिविधियों को बढ़ावा देने और स्थानीय मुद्दों पर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बता दें कि अमितेश कुमार रांची बूटी के रहने वाले हैं और उन्होंने अपने राजनीतिक करियर की शुरूआत संगठन के लिए काम करके की है। उनकी नियुक्ति से पलामू प्रमंडल में संगठन की गतिविधियों को नयी दिशा मिलने की उम्मीद है। सुनीत शर्मा और शांतनु मिश्रा ने अमितेश कुमार को बधाई दी और कहा कि वह पलामू प्रमंडल में संगठन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने अमितेश कुमार से संगठन के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ काम करने का आग्रह किया।

स्थानीय बच्चों की खेल की फिल्म 'मुरगा ट्रॉफी'

रांची (आजाद सिपाही)। CtrlAlt क्रिएट स्टूडियोज प्राइवेट लिमिटेड ने झारखंड में पहली बारस्थानीय बच्चों की खेल फीचर फिल्म 'मुरगा ट्रॉफी' बनाने की घोषणा की है। यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि झारखंड की सांस्कृतिक अस्मिता और ग्रामीण सपनों की एक सशक्त प्रस्तुति है। फिल्म की कहानी इस प्रकार है। 12 वर्षीय दीना, जो एक आदिवासी गांव में गरीबी और पूर्वाग्रहों के बीच जी रहा है। एक दिन शहर से आये घमंडी लड़के शिबू से फुटबॉल में चुनौती लेता है। दीना के पास जूते नहीं हैं, फुटबॉल भी नहीं है, सिर्फ उसका साहस और उसका प्यारा मुर्गा 'भीमा, जिसमें वह अपने खोये हुए पिता की आत्मा को महसूस करता है। गांव की टूटी-फूटी गलियों, झाड़ियों और मिट्टी के मैदानों पर बच्चों की यह टीम अपनी रैग-बॉल से अभ्यास करती है और एक दिन अपने आत्मसम्मान की लड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। फिल्म निर्देशक शशि वर्मा और निर्माता चंदन आनंद हैं। झारखंड में वीएस इनोवेशन पिक्कर, जय राम महतो और सुजीत उपाध्याय की भागीदारी से मुरगा ट्रॉफी 100% झारखंडी फिल्म बन रही है।

हल बैल चला कर रिम्स-2 जमीन बचाओ का किया गया आंदोलन

जबरन रिम्स टू बनाने से नगड़ी के लोग भूमिहीन हो जायेंगे : देवेंद्र नाथ महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। कांके अंचल अंतर्गत मौजा नगड़ी में प्रस्तावित रिम्स-2 परियोजना को लेकर रैयत ग्रामीणों द्वारा जमकर आंदोलन किया गया। रविवार आंदोलन से पूर्व ही अहले सुबह पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन को उनके आवास में ही नजर बंद कर दिया गया। आंदोलन स्थल पर पुलिस प्रशासन द्वारा कड़ी निगरानी व वेरीकेटिंग किया गया। इसके बावजूद 'झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा' के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्रनाथ महतो प्रशासन को चकमा देकर आंदोलन स्थल तक पहुंचे। कार्यकताओं के साथ कंधे में हल और बैल लेकर पहुंचे। प्रस्तावित जमीन पर घंटों तक हल जुताई किया। हक जुताई करते हुए खेत जोतो जमीन बचाओ - रोपा रोपो जमीन बचाओ का नारा लगाया। महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा के साथ सांस्कृतिक गीत-संगीत से धान रोपनी करते हुए राज्य सरकार के रिम्स-2 परियोजना का विरोध किया। जमीन जुताई करते हुए देवेंद्रनाथ महतो ने कहा कि हम विकास का विरोधी नहीं लेकिन यह जमीन पूर्णतः कृषि योग्य आजीविका आधारित है। खेती योग्य जमीन पर बिना संवैधानिक अधिकरण किए हुए राज्य सरकार जबरन रिम्स-2 परियोजना थोपने का काम कर रही है। कृषि योग्य भूमि को यहां के रैयतों से छीनकर उनके आजीविका पर चोट पहुंचाना चाहती है। झारखंड के सरकारी गैर मजरूवा जमीन, फॉरेस्ट लैंड, भुईहरि जमीन को बाहरी भू - माफिया द्वारा जबरन कब्जा किया जा रहा है दूसरी तरफ सरकार कृषि योग्य जमीन को हड़प रही है, लोकतांत्रिक देश में तानाशाही शासन को उखाड़ फेंका जायेगा। अगर सरकार को रिम टू बनाना है तो रांची आस पास कांके, बुकरू, रातु, सिमलिया, अनगड़ा, ओरमांझी क्षेत्र में सरकारी जमीन पड़ी हुई है सरकार उसपर रिम्स टू बनाए।सरकार द्वारा पुलिस लठेतों के बल पर नगड़ी का अवैध जमीन अधिग्रहण हमारा संगठन नहीं होने देगी। बताते चलें कि बीआईटी द्वारा अवैध रूप से 281 एकड़ जमीन अधिग्रहण का विरोध देवेंद्रनाथ महतो द्वारा हल चला कर ही किया गया था। आज का यह आंदोलन 'नगड़ी जमीन बचाओ संघर्ष समिति' के आह्वान पर किया गया। जिस पर विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक वह किसान संगठनों ने अपना समर्थन दिया। हजारों की संख्या में महिलाएं एवं बुजुर्ग भी इस आंदोलन में सम्मिलित दिखे। इसमें मुख्य रूप से प्रेम शाही मुंडा, कमलेश राम, कुंदरेशी मुंडा, अंजना लकड़ा के अलावा हजारों लोग उपस्थित थे।

जगलाल पहान की अगुवाई में हुए शामिल

रांची (आजाद सिपाही)। खेत जोतो रोपा रोपो रिम्स 2 नगड़ी के विरोध में केंद्रीय सरना समिति के मुख्य पहान जगलाल पहान के अगुवाई में भारी संख्या में उपस्थित होकर राज्य सरकार की गलत नीतियों का विरोध दर्ज किया। मुख्य पहान जगलाल पहान ने कहा कि इस राज्य में हेमंत सरकार जंगल राज स्थापित करना चाहती है। राज्य के चारों ओर आदिवासी मूलवासीयो का हक अधिकार मान सम्मान जल जंगल जमीन का हनन हो रहा है, इसलिए समय रहते प्रशासन होश में आये और झारखंडी जनता के हित में कार्य करे। चडरी सरना समिति के प्रधान महासचिव सुरेंद्र लिंडा ने कहा कि खेत जोतो रोपा रोपो कार्यक्रम में नगड़ी बचाओ संघर्ष समिति के समर्थन में राज्य के हर कोने से आदिवासी मूलवासीयो ने नगड़ी आंदोलन में आकर झारखंडी एकता का परिचय दिया है। केन्द्रीय सरना समिति के महासचिव महादेव टोप्पो ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से विभिन्न सरना समिति के तमाम पदाधिकारी उपस्थित होकर विरोध दर्ज किया।

शपथ पत्र

शपथ पत्र संख्या 832, दिनांक 19.08. 2025 के अनुसार, मैं चिंता मुनी उरांव, जो कि जी.एस. सं. 189542 एल, रैंक एम.एस.डब्ल्यू.पी.एन.आर., नाम पंचू उरांव की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी हूँ और वर्तमान में ग्राम हुरहुरी, डाकघर सिलागाई, पुलिस स्टेशन चान्हो, जिला रांची, झारखंड-835301 में रहती हूँ, सत्यनिष्ठा से शपथपूर्वक निम्नलिखित बयान देती हूँ :

1) यह कि, मैंने दस्तावेजों को अद्यतन करने के कारण अपना नाम चिंता मुनी कुमारी से बदलकर चिंता मुनी उरांव कर लिया है। मेरी जन्म तिथि 15 जनवरी 1996 (पंद्रह जनवरी उन्नीस सौ छियानवे) है। 2) यह कि, मैं यह शपथ पत्र अपने नाम के प्रमाण के उद्देश्य से प्रस्तुत कर रही हूँ।

3) यह कि, दोनों नाम चिंता मुनी कुमारी और चिंता मुनी उरांव एक ही व्यक्ति के हैं। 4) यह कि, मैं इसके बाद सभी कार्यवाही, लेनदेन, चाहे वह निजी हो या किसी भी अन्य अवसर पर, केवल चिंता मुनी उरांव के नाम से जानी जाऊँगी। 5) यह कि, ऊपर दिया गया बयान मेरी जानकारी, सूचना और विश्वास के अनुसार सत्य और सही है, और इसमें से कुछ भी महत्वपूर्ण छिपाया नहीं गया है।

योगी राज में कृषि की नयी छलांग

किसान जब हल से धरती को चीरता है, तो केवल अन्न ही नहीं, जीवन भी उपजाता है। उसका पसीना खेतों में हरियाली लाता है और समाज की नसों में संबल भरता है। उत्तर प्रदेश का यही किसान सदियों से देश की ताकत रहा है। वह कभी अकाल की विपदा से जूझा, कभी मंडियों की लूट का शिकार हुआ, कभी मौसम की मार झेली और कभी नीतिगत उपेक्षा। लंबे समय तक उसे उसके श्रम का पूरा प्रतिफल और सहारा नहीं मिला। लेकिन अब परिदृश्य बदल रहा है। खेतों की मेड़ों पर निराशा की जगह भरोसे की हरियाली है। योजनाएं सीधे अन्नदाता तक पहुंच रही हैं और उसका विश्वास लौट रहा है कि शासन उसकी चिंता करता है और परिश्रम को प्रतिष्ठा देता है। उत्तर प्रदेश में कृषि की यह नयी करवट केवल संयोग नहीं, बल्कि सजग संकल्प और सुविचारित रणनीति का नतीजा है। वर्ष 2016-17 में जहां कृषि विकास दर 8.6 प्रतिशत थी, वहीं 2024-25 में यह 17.7 प्रतिशत तक पहुंच गयी। यह वृद्धि मात्र आंकड़ों की छलांग नहीं, बल्कि किसान के आत्मविश्वास की उड़ान है। पहले जहां पसीना सूखी मिट्टी में खो जाता था, वहीं अब वही श्रम समृद्धि की धारा में बदल रहा है। फल और सब्जी उत्पादन में 400 लाख टन का स्तर छूकर उत्तर प्रदेश देश का अग्रणी राज्य बन गया है। यह सफलता केवल खेतों की पैदावार नहीं, बल्कि मेहनतकश हाथों और दूरदर्शी नीतियों का संगम है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से 2.86 करोड़ कृषकों को सीधे बैंक खातों में 80,000 करोड़ से अधिक पहुंचना इस बदलाव का प्रमाण है कि अब बिचौलियों की बेड़ियां टूटी हैं और मेहनत की कमाई सीधे किसान की हथेली तक पहुंच रही है। सिंचाई और ऊर्जा के क्षेत्र में उठाये गये कदमों ने खेती को नयी दिशा दी है। 93,000 से अधिक कृषकों को सौर पंप मिले, 31 प्रमुख परियोजनाएं पूरी हुईं और 46 लाख से अधिक किसानों को लाभ पहुंचा। 14 लाख किसानों को मुफ्त बिजली से सीधी राहत मिली। 6,600 नलकूपों का आधुनिकीकरण और डार्क जोन में 569 असफल नलकूपों का पुनर्निर्माण 1.10 लाख परिवारों के लिए नये अवसर खोल रहा है। गन्ना उत्पादक किसानों का श्रम अब मिठास के साथ रोजगार भी बांट रहा है। 2017 के बाद 3 नयी चीनी मिलें स्थापित हुईं, 6 पुनःसंचालित हुईं और 38 का विस्तार हुआ। इन पहलों ने 1.25 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार दिया। यह विकास केवल उद्योग की प्रगति नहीं, बल्कि गांव-गांव गन्ने से गुड़ और श्रम से सुख-समृद्धि की कहानी गढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से 2.86 करोड़ कृषकों को सीधे बैंक खातों में 80,000 करोड़ से अधिक पहुंचना इस बदलाव का प्रमाण है कि अब बिचौलियों की बेड़ियां टूटी हैं और मेहनत की कमाई सीधे किसान की हथेली तक पहुंच रही है।

अभिमत
आजाद सिपाही

डॉ रामदयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक विचारक, चिंतक, साहित्यकार, कलाकार, और सामाजिक आंदोलन के अगुआ थे। उनका जन्म रांची से 60 किलोमीटर की दूरी में तमाड़ के दिउड़ी ग्राम के गंधर्व मुंडा के घर 23 अगस्त, 1939 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा 1947 से 1953 तक लूथरन मिशन मिडिल स्कूल, अमलेसा में हुई। माध्यमिक शिक्षा 1953 से 1957 तक खूंटी के एसएस हाई स्कूल से हुई। इन्होंने मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास किया।

जे नाची से बाची - डॉ राम दयाल मुंडा

(23 अगस्त, 1939-30 सितंबर, 2011)

डॉ मोहम्मद जाकिर

डॉ राम दयाल मुंडा को अपनी मिट्टी, मातृभूमि, संस्कृति से अपार प्रेम था। वे आदिवासी संस्कृति की पहचान वैश्विक स्तर पर दिलायी। डॉ रामदयाल मुंडा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक विचारक, चिंतक, साहित्यकार, कलाकार, और सामाजिक आंदोलन के अगुआ थे। उनका जन्म रांची से 60 किलोमीटर की दूरी में तमाड़ के दिउड़ी ग्राम के गंधर्व मुंडा के घर 23 अगस्त, 1939 को हुआ था।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा 1947 से 1953 तक लूथरन मिशन मिडिल स्कूल, अमलेसा में हुई। माध्यमिक शिक्षा 1953 से 1957 तक खूंटी के एसएस हाई स्कूल से हुई। इन्होंने मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास किया। संगीत, बांसुरी एवं ढोलक बजाने की कला उन्हें अपने मामा के गांव में मिली। हाई स्कूल में पढ़ते उन्होंने बांसुरी, ढोलक बजाना सीख लिया। फिर रांची कॉलेज में दाखिला लिया। रांची विश्वविद्यालय से 1957 से 1963 तक में एंथ्रोपोलॉजी में मास्टर्स डिग्री हासिल की। 1960 में उन्होंने एक छात्र और नर्तक के रूप में संगीतकारों की एक मंडली बनायी। अपनी विशिष्ट 'मुंडा छाप' बनाये रखने के लिए लंबे केश रखने लगे। वे आकाशवाणी केंद्र रांची से भी जुड़े। दिउड़ी से खूंटी, खूंटी से रांची और रांची से 1963 में उच्चतर अध्ययन और शोध के लिए अमेरिका के शिकागो यूनिवर्सिटी गये। जहां से उन्होंने 1968 में नॉर्मल जाइड़ के मार्गदर्शन में एसिअटिक भाषाओं पर भाषा विज्ञान में पीएचडी की। 1968 से 1971 में वहीं से दक्षिण एशियाई भाषा एवं संस्कृति में शोध और अध्ययन किया। डॉ मुंडा को 1977 और 1978 में अमेरिकन और जापान के फाउंडेशन की तरफ से फेलोशिप भी मिला। उन्होंने अमेरिकन यूनिवर्सिटी में साउथ एशियन स्टडीज के अध्ययन विभाग में 1981 तक एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे. जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विद्वता, कला एवं सौम्य व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़े। 18 वर्षों तक वे अमेरिका में लोकप्रिय लेखक, कलाकार एवं प्राध्यापक रहे।

डॉ राम दयाल मुंडा का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे बहुभाषी, कवि, लेखक, चिंतक, प्रशासक, विनम्र, वादक आदि के असाधारण व्यक्ति थे।

1980 दशक के शुरुआत में वे रांची लौट आए. तत्कालीन आयुक्त एवं रांची प्रभारी कुलपति कुमार सुरेश सिंह के सहयोग से रांची विश्वविद्यालय में आदिवासी और क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना की। यह देश के किसी भी विश्वविद्यालय में आदिवासी भारत साहित्य का पहला विभाग था।

डॉ रामदयाल मुंडा ने रांची विश्वविद्यालय प्रतिकुलपति 1985-1986 और 1986-1988 के कुलपति रहे। डॉ रामदयाल मुंडा न सिर्फ एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के भाषाविद्, समाजशास्त्री और आदिवासी बुद्धिजीवी और साहित्यकार थे, बल्कि वो एक बेजोड़ आदिवासी कलाकार भी थे। उन्होंने कई भाषाओं में जैसे मुंडारी, नागपुरी, पंचपरगनिया, हिंदी अंग्रेजी में गीत कविताओं और गद्य साहित्य की रचना की। उनकी संगीत रचनाएं वो लोकप्रिय हो गया। झारखंड के आदिवासी लोक कला विशेष कर 'पाईका नाच' वैश्विक को स्तर पर पहचान दिलायी। विश्व आदिवासी दिवस मनाने की परंपरा शुरू करने में उनका अहम योगदान रहा। उन्होंने झारखंड मोमेंट लिखा, जिससे पता चलता है कि वे भारत के आदिवासी समुदायों के परम्परागत और संवैधानिक अधिकारों को लेकर काफी सजग थे। वे आदिवासियों की स्वतंत्र पहचान और पक्षधर थे। इसलिए धर्म को महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने आदिवासियों के पारंपरिक धरम को आदि धरम कहा। इस प्रतिष्ठित करने की दिशा में कार्य किया। उनका मानना था कि आदिवासियों का धर्म मुख्यधारा के धर्म हिंदू क्रिश्चियन और इस्लाम धर्म से अलग है। उन्होंने इसी पर 'आदि धर्म' नामक पुस्तक लिखी। डॉ मुंडा ने नागपुरी, मुंडारी, हिंदी और अंग्रेजी में भारतीय आदिवासियों की भाषा, साहित्य, समाज, धर्म और संस्कृति पर कई पुस्तकें तथा निबंध लिखे। डॉ रामदयाल मुंडा आदिवासी कहते थे कि आदिवासियों के विकास के तीन रास्ते हैं। पहला अपने पुराने तरह के साथ रहो, दूसरा मुख्यधारा के स्थापित धर्मों के साथ जुड़ कर उनकी संस्कृति अपना लो या तीसरा की अपनी शर्तों के साथ ही विकास की मुख्यधारा में शामिल हो जाओ। वे तीसरी के पक्ष में थे। यह उनके जीवन शैली पहनावा, आचार-विचार से दिखता था। इसका बेहतरीन उदाहरण उनके द्वारा रचित सरहुल मंत्र है। इसमें भी स्वर्ग के परमेश्वर से लेकर धरती से जुड़े धरती माईं तथा देश के विकास से जुड़े और सैकड़ों दिवंगत व्यक्तियों को एक साथ बुला कर पंक्ति में बैठने का आमंत्रण देते हैं।

कहते हैं - हम तोहरे की बुलात ही, हम तोहरे से विनती करत ही, हामरे संग तनी बैठ लेवा, हामरे संग तनी बतियाय लेवा, एक दोना हडिया के रस, एक पतरी लेतवा भात हामरे संग पी लेवा, हामरे साथे खाय लेवा।

वे 1988 में कुलपति के पद से मुक्त हुए और अपने पुराने विभाग में आ गये। वे राजनीति, संस्कृति एवं साहित्य में अपना योगदान देते रहे। झारखंड अलग राज्य आंदोलन में सक्रिय रहे। उनके गीत 'अखंड झारख७ड में अब भेला बिहान गो...' आज भी गूंजते हैं. उन्हें 'महाराजा मदरा मुंडा' सम्मान तथा 'झारखंड रत्न' से सम्मानित किया गया। उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मश्री का सम्मान से भारत सरकार ने नवाजा।

2017 में 'जे नाची से बाची', नाम से फिल्म मेकर मेघनाथ और बीजू टोप्पो ने एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनायी। मेघनाथ उन्हें ने झारखंड के रवींद्रनाथ टैगोर मानते थे। क्योंकि वे झारखड में टैगोर की तरह सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति के लिए बिगुल बजाया था।

डॉ राम दयाल मुंडा का एक बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे बहुभाषी, कवि, लेखक, चिंतक, प्रशासक, विनम्र, वादक आदि के असाधारण व्यक्ति थे। वे एक गांव से निकल कर झारखंड एवं भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। मगर वे कभी अपनी संस्कृति अपनी मिट्टी को नहीं भूले। आदिवासी पहचान और अस्मिता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाले स्व. डॉ रामदयाल मुंडा को 86 वीं जयंती पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ एक राज्य स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के मैदान में किया जाता रहा है। रूमबुल (प्रतिध्वनि) नामक संस्था डॉ राम दयाल मुंडा के विचारों को आगे बढ़ती है। मुंडारी साहित्य परिषद द्वारा मुंडारी साहित्य सम्मान के साथ-साथ अन्य आठ जनजाति भाषाओं में विशेष योगदान करने वालों को हर वर्ष सम्मानित करती है।

कोल्हान की खबरें

गुरुजी और रामदास सोरेन को दी गयी श्रद्धांजलि

माइकल जॉन सभागार में कोल्हान स्तरीय श्रद्धांजलि सभा

गुरुजी को भारत रत्न दिलाने के लिए चलाया विशाल हस्ताक्षर अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। गुरुजी विचार मंच पूर्वी सिंहभूम के द्वारा बिस्टुपुर स्थित माइकल जॉन सभागार में कोल्हान स्तरीय विराट श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। रविवार को श्रद्धांजलि सभा में आंदोलन की बल पर झारखंड राज्य निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री सह झारखंड के मसीहा स्वर्गीय ढिशुम गुरु शिबू सोरेन और राज्य में जनता के साथ खरे रहने वाले पूर्व शिक्षा मंत्री सह घाटशिला के लोकप्रिय विधायक रहे स्वर्गीय रामदास सोरेन को नम आंखों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। गुरुजी विचार मंच के विराट श्रद्धांजलि सभा में अपने लोकप्रिय दोनो नेताओ के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए हजारों हजार की संख्या में कोल्हान सहित राज्य के अन्य जिले से सभी पार्टी के वरिष्ट नेता व कार्यकर्ताओं से साथ आमजनों की जनसैलाब उमड़ पड़ी।सभी दोनों महान नेताओं के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। मौके पर सभी ने उनके संघर्षमय जीवन, समाजसेवा और झारखंड की अस्मिता की रक्षा के लिए किए गए योगदान को याद किया। मौके पर गुरूजी विचार मंच की ओर से झामुमो केंद्रीय प्रवक्ता और पूर्व विधायक कुणाल षडंगी ने लोगों को मंच और उसके उद्देश्य की जानकारी दी। श्री षडंगी ने कहा दिशोम गुरु शिबू सोरेन और रामदास सोरेन राजनीति को कभी सत्ता का माध्यम नहीं समझा बल्कि इसे जनता की आवाज उठाने और समाज उत्थान की जरिया मानते थे। उनकी निष्ठा, सादगी और संघर्षशीलता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

गुरुजी विचार मंच का उद्देश्य : गुरुजी विचार मंच की स्थापना का मुख्य उद्देश्य दिशोम गुरु शिबू सोरेन की विचारधारा, संघर्ष और जनहित की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाना है। मंच का मानना है शिबू सोरेन ने राजनीति को कभी सत्ता का साधन नहीं, बल्कि समाज के दबे-कुचले वर्गों की आवाज उठाने का एक माध्यम बनाया। श्रद्धांजलि सभा में मंच की ओर से यह घोषणा की गयी आने वाले दिनों में पूरे झारखंड में ऐसे संगोष्ठियों और जनसभाओं का आयोजन कर गुरुजी के विचारों को युवाओं तक पहुंचाया जायेगा।

विधायक और मंत्रियों के विचार : झारखंड सरकार के राजस्व मंत्री दीपक बिरुआ ने कहा गुरुजी ने हमेशा वंचित और शोषित वर्गों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। आज उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विधायक संजीव सरदार ने कहा गुरुजी ने हमें सिखाया राजनीति से जनसेवा का मार्ग सत्ता का नहीं। विधायक मंगल कालिंदी ने कहा गुरु जी के मार्गदर्शन पर चलना ही पूरे राज्य में उनके सच्ची श्रद्धांजलि होगी।श्री कालिंदी ने कहा रामदास सोरेन ने शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। उनके अधूरे सपनों को पूरा करना हम सबकी जिम्मेदारी है। विधायक सविता महतो ने कहा गुरुजी जैसे नेता सदियों में एक बार मिलते हैं। उनकी सादगी और संघर्ष हम सबके लिए प्रेरणा है।

भारत रत्न की मांग : विराट श्रद्धांजलि सभा में गुरुजी को भारत रत्न सम्मान देने की माँग को लेकर एक विशाल हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। मौके पर उपस्थित लोगों ने उत्साहपूर्वक हस्ताक्षर किए और अपने संदेश लिखकर इस माँग को बल दिया। गुरुजी विचार मंच के अनुसार यह अभियान आगे भी पूरे राज्य में चलाया जाएगा। लाखों लाख हस्ताक्षर के बाद इसे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजे जाएंगे।

मौके पर गुरुजी विचार मंच के विराट श्रद्धांजलि सभा में झारखंड सरकार के राजस्व मंत्री दीपक बिरुआ, विधायक संजीव सरदार, विधायक मंगल कालिंदी, विधायक सविता महतो, विधायक सुखराम उरांव, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री दिनेश सारंगी, पूर्व सांसद सुमन महतो, पूर्व विधायक लक्ष्मण टुडू, अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष हिदायतुल्ला खान, उपाध्यक्ष ज्योति मथारू, ज़िला परिषद अध्यक्ष बारी मूर्मू, उपाध्यक्ष पंकज सिंहा, ज़िप सदस्य पारितोष सिंह,कांग्रेस जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे, कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेंद्र सोनकर, पूर्व ज़िलाध्यक्ष विजय खान, उद्योगपति आरके अग्रवाल, लोयोला स्कूल के प्राचार्य फॉदर विनोद, एनआईटी डीएवी के प्राचार्य ओपी मिश्रा, एडीएल सोसाइटी, गुजराती सनातन समाज, उत्कल एसोसिएशन, सिख समाज, बंगभाषी समाज, पुलिस एसोसिएशन और जिला शिक्षक संघ के प्रतिनिधि सहित सैकड़ो आमजनों ने शामिल होकर दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सरायकेला प्रशासन ने टोल प्लाजा पर वाहनों की जांच की

सरायकेला (आजाद सिपाही)। नगड़ी किसान आंदोलन की गूंज अब सरायकेला तक पहुंच गयी है। आंदोलन में शामिल होने जा रहे समर्थकों को लेकर प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है। जिले के कांड्रा मोड़ स्थित टोल प्लाजा पर पुलिस ने विशेष जांच अभियान चलाते हुए वाहनों की सघन चेकिंग शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार यह ड्राइव केवल नियमित जांच के लिए है और जिन गाड़ियों के पास वैध कागज नहीं मिल रहे, उनका चालान काटा जा रहा है।

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान में पंचायत कमिटियों का विस्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी और पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के आह्वान पर संगठन सृजन अभियान के तहत जमशेदपुर ग्रामीण प्रखण्ड के बागबेड़ा, करनडीह-घाघीडीह मंडल की तीन पंचायत कांग्रेस कमिटियों का विस्तार किया गया। इस अवसर पर नियुक्त पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी गई। बैठक में मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत कांग्रेस के जिला पर्यवेक्षक एवं झारखंड सरकार के अल्पसंख्यक आयोग के वाइस चेयरमैन ज्योति सिंह मथारू, कांग्रेस

जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता प्रखण्ड अध्यक्ष आशीष ठाकुर ने की।जिलाध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे ने कहा कांग्रेस पार्टी अब गाँव स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने में जुटी है और इसी क्रम में पंचायत कांग्रेस कमिटियों का विस्तार किया जा रहा है।श्री मथारू ने कहा कांग्रेस नेता राहुल गांधी लोकतंत्र को बचाने के लिए सड़कों पर संघर्षरत हैं।ऐसे में पंचायत स्तर के पदाधिकारी जनता के बीच जाकर कांग्रेस की विचारधारा को मजबूत करें और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहें।इस अवसर पर अखिलेश सिंह यादव, बागबेड़ा मंडल पर्यवेक्षक महेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला उपाध्यक्ष संजय सिंह आजाद, बागबेड़ा मंडल अध्यक्ष राजनारायण यादव, करनडीह-घाघीडीह मंडल अध्यक्ष रंजन सिंह, टाटानगर मंडल अध्यक्ष मनोज कुमार मिश्र मुन्ना, मंडल पर्यवेक्षक सुरज मुण्डा शामिल रहे। पंचायत स्तर पर नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर संगठन की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इनमें बागबेड़ा मध्य ग्राम पंचायत के अध्यक्ष करम दयाल मुण्डा, बागबेड़ा कॉलोनी ग्राम पंचायत के अध्यक्ष भवनाथ सिंह तथा पश्चिम किताडीह ग्राम पंचायत की अध्यक्ष सोनी कुमारी सहित अन्य उपाध्यक्ष, महामंत्री और पदाधिकारी शामिल रहे।

लगातार बारिश से बढ़ा चांडिल डैम का जलस्तर, खोले गये 11 रेडियल गेट

आजाद सिपाही संवाददाता

चांडिल। झारखंड में लगातार हो रही बारिश से चांडिल डैम का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। रविवार को जलस्तर खतरे के करीब पहुंचने पर विस्थापित गांव के लोगों ने विधायक सविता महतो को फोन कर जानकारी दी। सूचना मिलने पर विधायक ने तुरंत प्रशासन से वार्ता कर गेट खोलने का आग्रह किया। इसके बाद डैम के 11 रेडियल गेट खोले गए, जिनमें 5 गेट को ढाई मीटर और 6 गेट को डेढ़ मीटर तक खोला गया। इस दौरान डैम का जलस्तर 181.22 मीटर दर्ज किया गया।

गेट खुलने के बाद बड़ी मात्रा में पानी सुवर्णरेखा नदी में छोड़ा गया, जिससे नदी का बहाव और तेज हो गया। जलस्तर बढ़ने से निचले इलाकों में अलर्ट जारी किया गया। रविवार शाम विधायक सविता महतो स्वयं डैम के नीचे पुल पर पहुंचीं और स्थिति का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से जलस्तर और सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। मौके पर झामुमो केंद्रीय सदस्य काबलु महतो, जिला सचिव बैधनाथ टुडू, धर्मु गोप, सुदामा हेम्ब्रम, राहुल वर्मा, दीनबंधु महतो, संजय हांसदा सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

फुटबॉल टूर्नामेंट में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब ने जीत हासिल की

आजाद सिपाही संवाददाता

चाकुलिया। चाकुलिया प्रखंड के बेंड पंचायत स्थित आमडांगरा गांव में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब की ओर से दो दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। रविवार को फाइनल मैच में मुख्य अतिथि विधायक समीर कुमार महंती के साथ झामुमो नेता अमर हांसदा और राजा बारीक भी उपस्थित हुए। आयोजन समिति के सुकलाल सोरेन, सनातन हेंब्रम, सुखेंदु किस्कू, रविन्द्र सोरेन, बालक सोरेन, विराम सोरेन, विक्रम सोरेन, शंभू सोरेन और अन्य सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया। मौके पर अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर व किक मारकर फाइनल खेल का शुभारंभ किया। फाइनल मैच में केएडी श्रीदुबक अमदंगर क्लब के टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। अतिथियों के द्वारा पुरस्कार में एक बड़ी खासी और ट्रॉफी सौपा गया। वहीं बाजार बेल्ट गिड़नी टीम उपविजेता रही। टीम को खासी व ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर झामुमो नेता अमर हांसदा, राजा बारीक, टुलू साव, मिथुन कर, बयाल किस्कू, प्रकाश गोप सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्तित रहे। मौके पर ग्रामीणों ने टूनार्मेंट को सफल बनाने में बढ़-चढ़कर योगदान दिया। इस दौरान पूरे क्षेत्र में उत्सव का माहौल देखने को मिला।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

बारिश से मिट्टी का मकान ध्वस्त, परिवार बेघर

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश से ग्रामीणों की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। पिछले कई दिनों से रुक-रुककर हो रही वर्षा से खासकर कच्चे मकान बारिश की मार से बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। कई घर गिर चुके हैं, वहीं कई मकानों में दरारें आ गयी हैं। रविवार को मकरी पंचायत के बगही टोला निवासी फूलेंद्र राम का कच्चा मकान अचानक ढह गया। घर गिरने से उसमें रखा जरूरी सामान भी मलबे के नीचे दबकर पूरी तरह नष्ट हो गया है। घटना की जानकारी मिलते ही प्रखंड उप प्रमुख पिंटू टोपनो मौके पर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर हरसंभव मदद दिलाने का भरोसा दिलाया। उप प्रमुख ने कहा कि मामले की सूचना संबंधित विभाग और प्रशासन को दी जायेगी तथा पीड़िता को सरकारी प्रावधानों के तहत मुआवजा उपलब्ध कराने की पहल की जायेगी।

संविधान के 130वें संशोधन के विरोध में झामुमो ने किया केंद्र सरकार का पुतला दहन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। संविधान में प्रस्तावित 130वें संशोधन के खिलाफ झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने रविवार को गढ़वा के रंका मोड़ पर जोरदार विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार पर जनविरोधी नीतियां थोपने का आरोप लगाते हुए टाउन हॉल के मैदान से रंका मोड़ तक शवयात्रा निकालकर पुतला दहन किया और जमकर नारेबाजी की। झामुमो जिला अध्यक्ष शंभू राम का कहना है कि यह संशोधन न केवल संविधान की मूल आत्मा से छेड़छाड़ है, बल्कि संघीय ढांचे पर सीधा हमला है। पार्टी नेताओं ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार राज्यों के अधिकारों को लगातार कमजोर कर रही है और संवैधानिक संस्थाओं को अपने राजनीतिक हितों के अनुसार इस्तेमाल कर रही है। जिला सचिव शरीफ अंसारी ने कहा कि

संविधान बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की दूरदृष्टि और करोड़ों भारतीयों के संघर्ष का परिणाम है। केंद्र सरकार बार-बार उसमें बदलाव कर जनता की आवाज को दबाने की कोशिश कर रही है। 130वां संशोधन इसी कड़ी का हिस्सा है, जिसे झामुमो किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा। विगत कुछ वर्षों में हुए घटनाक्रम में जनता ने देखा है कि किस रूप में केंद्र सरकार ने राज्यों को अस्थिर करने का हर संभव प्रयास किया है। चुने हुए मुख्यमंत्री को बिना किसी कारण के 5 महीने तक जेल में रखा गया था। इस विधायक को पास कर केंद्र की सरकार सरकारी एजेंसी का दुरुपयोग करते हुए किसी भी राज्य की चुनी हुई सरकार पर झूठा आरोप लगाकर उसके मुख्यमंत्री को जेल भेज सकती है तथा जेल जाते ही भाजपा के द्वारा विपक्षी पार्टियों को तोड़ने और सरकार को अस्थिर करने का खेल शुरू हो जायेगा। विगत एक दशक में केंद्र सरकार ने ऐसे कई कारनामे किये हैं। इस विधायक से विपक्ष ही नहीं बल्कि भाजपा के सहयोगी पार्टियों लिए भी खतरा है। जो लोग भी गठबंधन तोड़कर बाहर जाने का प्रयास करेंगे, उनके नेता को फर्जी मुकदमे में फंसा कर जेल भेज दिया जायेगा। प्रदर्शन के दौरान झामुमो कार्यकर्ताओं ने जनता से अपील की कि वे इस संशोधन के खिलाफ एकजुट हों। पार्टी ने चेतावनी दी कि यदि केंद्र सरकार इस संशोधन को वापस नहीं लेती है, तो राज्यभर में आंदोलन को और तेज किया जायेगा। कार्यक्रम में शम्भू राम, शरीफ अंसारी, तनवीर आलम खां, मनोज कुमार ठाकुर, जवाहर पासवान, अनिता दत, धीरज दुबे, निलु खां, फुजैल अहमद, अरविंद यादव, रंथा नायक, वसीम खां, संजय सिंह छोटू, फरीद खां, धनंजय तिवारी, मुजीबुर रहमान, बब्लु तिवारी, शफीक अंसारी, जब्बार खां, दिव्य प्रकाश केसरी, आशीष अग्रवाल, रेखा चौबे, आराधना सिंह, नवीन तिवारी, राजन उरांव आदि मौजूद थे।

मोबाइल से न बिगाड़ें भविष्य, ज्ञान और कौशल में करें निवेश : संजय कुमार पांडेय

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने किया युवा सुपर-100 कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार युवा प्रकोष्ठ के निर्देशन में जिला स्तरीय एक दिवसीय युवा सुपर 100 कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन बीएसकेडी पब्लिक स्कूल के सभागार में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार पांडेय, विशिष्ट अतिथि शंभूनाथ दुबे, प्रांतीय युवा सदस्य नीरज कुमार महतो, प्रियरंजन कुमार, सुरेश कुमार, रामजी गुप्ता, मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजय सोनी, जिला समन्वयक विनोद पाठक एवं युवा समन्वयक वीरेंद्र सोनी ने संयुक्त रूप से मां गायत्री, पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता के तस्वीर के समक्ष पुष्प अर्पित कर

अखंड ज्योति एवं दीप प्रज्वलित कर किया। शिविर में संगीतज्ञ अशोक विश्वकर्मा ने एक से बढ़कर एक गुरु वंदना गीत गाकर उपस्थित लोगों का मंत्रमुग्ध कर दिया। शिविर की शुरूआत गायत्री परिवार के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजय सोनी के स्वागत भाषण से किया गया। उन्होंने कहा कि आज का यह प्रशिक्षण युवाओं को सही दिशा देने का काम करेगा और युग परिवर्तन में युवाओं के लिये मील का पत्थर साबित होगा। एसडीएम संजय कुमार पांडेय ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई तनावग्रस्त है। ऐसे में सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम अपने स्वास्थ्य और आत्म-विकास पर ध्यान दें। उन्होंने युवाओं को मोबाइल के दुरुपयोग से बचने की सलाह देते हुए कहा कि मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने युवाओं को सुविधाएं तो दी हैं, लेकिन इसके कारण उनका कीमती समय और ऊर्जा बर्बाद हो रही है। प्रांतीय युवा सदस्य सुरेश कुमार ने कहा जोश, उत्साह, उमंग एवं कार्य करने की क्षमता से भरा होना ही युवा है। युवाओं को भाग्य नहीं, कर्म पर विश्वास होना चाहिए। शिविर में शंभूनाथ दुबे, नीरज कुमार महतो, प्रियरंजन कुमार,रामजी गुप्ता,संजय सोनी व कार्तिका कुमारी आदि ने संबोधन किया।

कांडी थाना में असफाक आलम ने संभाला पदभार

कांडी (आजाद सिपाही)। कांडी थाना में नये थाना प्रभारी के रूप में असफाक आलम ने शनिवार को पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे जिले के रमना थाना में प्रभारी पद पर पदस्थापित थे। असफाक आलम 2018 बैच के अधिकारी हैं। पदभार ग्रहण के बाद मीडिया से बातचीत में उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र को भय और अपराध मुक्त बनाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। साथ ही थाना से जुड़े मामलों का शीघ्र निष्पादन और पुलिस-पब्लिक के बीच विश्वास बहाली उनकी कार्ययोजना का अहम हिस्सा रहेगा। रविवार को युवा समाजसेवी बाबू खान ने थाना पहुंचकर नए प्रभारी का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। वहीं घटहुआं कला पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि अरुण कुमार राम, उप मुखिया संतोष कुमार गुप्ता, लादेन खान और सुनील चौहान ने भी गुलदस्ता भेंट कर नये थाना प्रभारी का अभिनंदन किया।

हासनदाग दुर्गा पूजा समिति का गठन, अध्यक्ष विनय चौधरी और अविनाश बने कोषाध्यक्ष

मेराल (आजाद सिपाही)। दुर्गा पूजा महोत्सव धूमधाम एवं शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर रविवार को हासनदाग देवी धाम परिसर में पूर्व मुखिया दुखन चौधरी की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक बैठक हुई। जिसमें हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दुर्गा पूजा में वाराणसी के विद्वानों द्वारा दुर्गा सप्तशती एवं श्री रामचरितमानस नवाह पारायण पाठ तथा रात्रि में रामलीला कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम संचालन के लिए सर्वसम्मति से दुर्गा पूजा समिति का पुनर्गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से विनय कुमार चौधरी को अध्यक्ष बनाया गया जबकि रमेश चंद्रवंशी को सचिव, अविनाश कुमार चौबे उर्फ बिट्टू को कोषाध्यक्ष, अनिल कुमार चौधरी को मंच संचालक नियुक्त किया गया। वही संजय चौधरी, देवनाथ चौधरी, उपध्या राम, मुकेश चौधरी, राकेश चौधरी तथा मुकेश ठाकुर को उपाध्यक्ष तथा संरक्षक के रूप में बीडीसी नंदू चौधरी, मुखिया पति हरेंद्र चौधरी, पूर्व मुखिया दुखन चौधरी, रामप्रवेश चंद्रवंशी पूर्व जीप सदस्य रामनरेश चौधरी, आशुतोष चौबे, सेवानिवृत शिक्षक सुरेंद्र चौबे, कोमल चौधरी, सुदर्शन विश्वकर्मा, राजबलि चौधरी, विवेकानंद चौबे, अरुण चौबे, मथुरा चौधरी, इलायची राम को नामित किया गया। साथ ही 21 लोगों को सक्रिय सदस्य बनाया गया जिसमें द्वारिका चौधरी, राजेंद्र चौधरी, मनोहर, मुकुंद चौधरी, चंद्रिका राम, मनीष ठाकुर, जगनारायण ठाकुर, विनोद चौधरी, आरकेश चंद्रवंशी, बीरैंची चौधरी, धनंजय चौधरी, मलू चौधरी, शंकर बैठा आदि का नाम शामिल है।

लगातार बारिश से कच्चा मकान धराशायी

हरिहरपुर(आजाद सिपाही)। बीते पांच दिनों से हो रही लगातार बारिश ने आम जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। कच्चे घरों में रहने वाले लोग सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। इसी क्रम में शनिवार की रात मझिगावां पंचायत के बबुराहा टोला निवासी विकास कुमार पासवान का खपड़ैल मकान बारिश के कारण अचानक धराशाई हो गया। मकान गिरने के समय घर के अंदर विकास पासवान की पत्नी शिला देवी (25 वर्ष) अपने तीन छोटे बच्चों देवा पासवान (6 वर्ष), मधु कुमारी (3 वर्ष) और लक्ष्मी कुमारी (2 वर्ष) के साथ मौजूद थीं। गनीमत रही कि हादसे में सभी लोग सुरक्षित बच गये। विकास पासवान वर्तमान में मजदूरी करने दूसरे राज्य में गए हुए हैं। शिला देवी ने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। ऐसे में घर की मरम्मत कराना संभव नहीं है। उन्होंने प्रशासन से मदद की गुहार लगाते हुए कहा कि यदि सरकार से कुछ सहायता मिल जाये तो मैं अपने बच्चों के साथ निर्भय होकर रह सकूं। गौरतलब है कि पिछले कई दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश के कारण क्षेत्र के आम लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

श्राद्ध कर्म हेतु मुखिया ने किया आर्थिक सहयोग

केतार (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के मुकुन्दपुर पंचायत अंतर्गत आदिवासी बहुल टोला मायर निवासी दिनानाथ सिंह के पिता लक्ष्मण सिंह के श्राद्ध कर्म में मुखिया मुंगा साह ने आर्थिक सहयोग किया। ग्रामीणों ने इस नेक कार्य के लिए मुखिया मुंगा साह के प्रति आभार प्रकट किया। ग्रामीणों ने कहा कि मुखिया के दुःख की घड़ी में हमेशा खड़े रहते हैं।इस मौके पर सुनील साह, संतोष कमलापुरी, ओमनारायण गुप्ता, रघुवीर चंद्रवंशी, शुशील कुमार, हरेंद सिंह, रमेश सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे।

कांडी प्रखंड का हेठार इलाका तीसरी बार बाढ़ में डूबा

किसानों की फसलें हुईं चौपट, जिला प्रशासन करे नुकसान का आकलन : धीरज

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा ज़िले के कांडी प्रखंड अंतर्गत हेठार इलाका इस वर्ष तीसरी बार बाढ़ की चपेट में आ गया है। लगातार बारिश और नदियों के उफान के कारण गांवों में पानी घुस गया है, जिससे स्थानीय किसानों की तैयार फसलें बर्बाद हो गईं। धान, मक्का और दलहन जैसी मुख्य फसलों के खेत पानी में डूब जाने से ग्रामीणों के सामने गंभीर संकट खड़ा हो गया है। खेतों में महीनों की मेहनत पलक झपकते ही बर्बाद हो जाने से किसान मायूस और हताश हैं।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि यह तीसरी बार है जब कुछ ही

महीनों के भीतर बाढ़ का प्रकोप झेलना पड़ा है। कई गांवों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। खेतों में जमा पानी की वजह से न केवल फसलें नष्ट हो रही हैं, बल्कि मवेशियों के चारे की भी भारी कमी हो गयी है। लोग बताते हैं कि अगर तत्काल राहत और मुआवजे की व्यवस्था नहीं की गई तो किसानों के सामने जीविका संकट गहराता जायेगा।

इस मसले पर झामुमो मीडिया पैनलिस्ट सह केंद्रीय सदस्य धीरज दुबे ने जिला प्रशासन से फसलों के नुकसान का तत्काल आंकलन कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि हेठार इलाका बार-बार बाढ़ की चपेट में आ रहा है, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर ठोस कदम उठते नजर नहीं आ रहे। किसानों की हालत बेहद दयनीय है। जिला प्रशासन को तुरंत विशेष टीम भेजकर नुकसान का सर्वे कराना चाहिए और प्रभावित किसानों को मुआवजा उपलब्ध कराना चाहिए।

धीरज ने आगे कहा कि राज्य और केंद्र सरकार को मिलकर ऐसी दीर्घकालिक योजना तैयार करनी चाहिए, जिससे हर वर्ष किसानों को इस तरह की आपदा से जूझना न पड़े। श्री दुबे ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मांग किया कि सोन-कोयल तटीय इलाके में नदी किनारे तटबंध बनाया जाये, ताकि कृषि योग्य भूमि का कटाव बंद हो एवं सैकड़ो एकड़ कृषि योग्य भूमि नदी में समाहित होने से बचाया जा सके।

दो दिवसीय पेसा कानून प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

आजाद सिपाही संवाददाता

भंडरिया। प्रखंड सभागार में रविवार को दो दिवसीय पेसा कानून प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में प्रखंड के महिला एवं पुरुष वार्ड सदस्य, ग्राम प्रधान और पंचायत प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) अमित कुमार के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इससे पूर्व 22, 23 एवं 24 अगस्त को महिला वार्ड सदस्यों के लिए तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण आयोजित किया गया था, जिसमें महिला प्रतिनिधियों को उनके अधिकारों, जिम्मेदारियों एवं कार्य प्रणाली की गहन जानकारी दी गयी थी। उस दौरान भी पेसा कानून के महत्व और इसके लाभ के बारे में विस्तार से बताया गया। प्रशिक्षक अनूप तिवारी ने पेसा कानून की पृष्ठभूमि, इसके निर्माण वर्ष, लागू

होने के उद्देश्य और ग्राम स्तर पर इसकी भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पेसा कानून का उद्देश्य आदिवासी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम सभा को सशक्त बनाना और स्थानीय स्वशासन को मजबूत करना है। इस कानून के तहत ग्राम सभा को निर्णय लेने, संसाधनों के संरक्षण और गांव से संबंधित विकास योजनाओं में सहभागिता का अधिकार प्राप्त है। वहीं पिंकी कुमारी ने सशक्त पंचायत और महिला नेत्रित्व पर मिश्रित जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महिलाएं यदि पंचायत स्तर पर सक्रिय और जागरूक होंगी तो गांव के विकास कार्यों में पारदर्शिता और तेजी दोनों आयेगी। प्रशिक्षण को सफल बनाने में मोनिका राज (प्रखंड समन्वयक पंचायती राज), सनी कुमार (बीपीएम), जयप्रकाश गुप्ता बीपीएमयू (बी.के.) का विशेष योगदान रहा। उन्होंने विभिन्न सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को व्यावहारिक उदाहरणों और समूह चर्चा के जरिए पेसा कानून को समझने का अवसर प्रदान किया। इससे वे गांव की समस्याओं का समाधान बेहतर तरीके से कर सकते हैं और योजनाओं को पारदर्शिता के साथ लागू कर सकते हैं।

बीडीओ अमित कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि पेसा कानून वास्तव में ग्रामीण लोकतंत्र की आत्मा है। इस कानून के तहत ग्राम सभा को जो अधिकार मिले हैं, वे गांव के विकास को गति देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से अपील की कि प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक रूप में उतारें और गांव की बेहतरी में इसका उपयोग करें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्राम प्रधान सुमित कुमार मिंज, संजय सिंह, मानदेव सिंह, राजेंद्र माझी, बुधराम माझी, प्रेम सिंह, कोमल सिंह, रमेश सिंह, जय गोविंद राम, यदुनाथ सिंह उपस्थित रहे। साथ ही महिला वार्ड सदस्यों में रजनी लकड़ा, तारावती देवी, उषा देवी, आश्रिता लकड़ा, कलावती देवी, मीना देवी ने सक्रिय भागीदारी की कार्यक्रम में शामिल सभी प्रतिभागियों ने इस पहल की सराहना की।

आरके पब्लिक स्कूल उचरी में करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन

मंझिआंव (आजाद सिपाही)। उचरी स्थित आरके पब्लिक स्कूल में रविवार को 10वीं कक्षा के छात्रों के लिए करियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। सीआरपीएफ के सब-इंस्पेक्टर एसडी सिंह ने छात्रों को सशस्त्र बलों में करियर के विभिन्न विकल्पों के बारे में जानकारी दी। श्री सिंह ने भारतीय सेना, वायु सेना, नौसेना और अर्धसैनिक बलों में शामिल होने की प्रक्रिया, आवश्यक योग्यताएं, और पदोन्नति के अवसरों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इंजीनियरिंग, मेडिकल, सिविल सेवा, होटल मैनेजमेंट, बिजनेस मैनेजमेंट, चार्टर्ड अकाउंटेंसी, और कानून जैसे अन्य करियर विकल्पों पर भी प्रकाश डाला। छात्रों को अपने सवाल पूछने का पूरा मौका दिया गया, और श्री सिंह ने उनके सभी संदेहों को दूर किया। इस सत्र से प्रेरित होकर कई छात्रों ने भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। स्कूल के प्रिंसिपल, केआर झा ने एसडी सिंह को शॉल और एक पौधा भेंट कर सम्मानित किया। प्रिंसिपल ने 10वीं कक्षा के छात्रों के लिए इस उपयोगी सत्र के लिए श्री सिंह का आभार व्यक्त किया। स्कूल के डायरेक्टर और प्रसिद्ध शिक्षाविद, श्री अलख नाथ पांडे ने इस कार्यक्रम के सफल आयोजन पर खुशी व्यक्त की और उम्मीद जतायी कि यह छात्रों को सही दिशा देगा। इस अवसर पर 10वीं कक्षा के सभी छात्र और शिक्षक उपस्थित थे।

रंका में ब्रह्म विद्या विहंगम योग संस्थान की बैठक

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल मुख्यालय में 23 अगस्त 2025 को ब्रह्म विद्या विहंगम योग संस्थान की बैठक आयोजित हुई। बैठक का शुभारंभ संस्था के झारखंड प्रदेश अन्न मंत्री उपेंद्र नाथ मिश्रा एवं जिला सह संयोजक सुरेंद्र विश्वकर्मा ने संयुक्त रूप से सद्गुरु देव के तस्वीर पर अखंड दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण कर किया गया। इस अवसर पर उपेन्द्र नाथ मिश्रा ने कहा कि आगामी 6 सितंबर 2025 को गढ़वा जिले के भवनाथपुर सिंदुरिया आश्रम एवं बोकारो स्टील माइंस महाविद्यालय टाउनशिप में संत प्रवर विज्ञान देव जी महाराज का पदार्पण होने जा रहा है। यह यात्रा कार्यक्रम आत्म जागरण से राष्ट्र जागरण , स्वर्वेद संदेश यात्रा एवं आगामी 25-26 नवंबर 2025 को भारत आध्यात्मिक राजधानी वाराणसी स्थित स्वर्वेद महामंदिर धाम के प्रांगण में ऐतिहासिक 25000 कुंडीय विश्व शांति वैदिक महायज्ञ का संदेश देने के लिए हो रहा है। उन्होंने कहा कि सद्गुरु देवों के बदौलत मेरा भारत विश्व गुरु था, है और रहेगा। इस मौके पर सरयु प्रसाद अग्रवाल, अनिल शाह, चंदेश्वर प्रसाद, परशुराम विश्वकर्मा, रामलाल ठाकुर, राम प्रताप अग्रवाल, नारायण शाह, परमानंद यादव, प्रतिमा देवी, शीला देवी, आशा देवी, उषा देवी, द्वारका प्रसाद, दिनेश प्रसाद, सत्येंद्र यादव, प्रदीप कुमार, अरुण यादव, राजू ठाकुर, ओमप्रकाश ठाकुर, सुरेंद्र ठाकुर, ओम प्रकाश यादव, श्रीराम ओझा, आशीष, विकास सहित काफी संख्या में शिष्य गुरू भाई बहन उपस्थित थे।

कांडी प्रखंड क्षेत्र में एसडीएम ने 225 बोरा यूरिया का अवैध स्टॉक पकड़ा

एहतियातन गोदाम सील, डीएओ व सीओ को दिए कार्रवाई के निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। रविवार को गढ़वा अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने कांडी प्रखंड क्षेत्र में खाद-बीज की कालाबाजारी को लेकर छापेमारी की। इस छापेमारी के दौरान कांडी मुख्य बाजार स्थित आयुष खाद बीज भंडार (संचालक संजय कुमार प्रसाद) की दुकान के पीछे कुछ दूरी पर एक गोदाम नुमा कमरे को देखा तो उन्हें संदेह हुआ। दरवाजों की चौखट के नीचे से मोबाइल घुसा कर वीडियो रिकार्डिंग के माध्यम से देखा गया तो वहां पीले पीले रंग की बोरियां वीडियो में दिखाई दीं। इस पर अविलंब गोदाम को खुलवाया गया तो भारी मात्रा में यूरिया का अवैध भंडारण पाया गया। दरअसल जब एसडीएम के

निर्देश पर थाना प्रभारी कांडी मोहम्मद अशफाक आलम की मौजूदगी में संदिग्ध कमरे को खुलवाया गया तो लगभग 225 बोरा से अधिक यूरिया मिला। पूछताछ में पहले दुकानदार ने गुमराह करने का प्रयास किया, कभी कहा कि यह डालटेनगंज के किसी व्यक्ति का है, कहा कि एक अन्य व्यक्ति राजेश शुक्ला का यह भंडार है, किंतु जब उनसे पूछा गया कि इस गोदाम की चाबी आपके पास कहां से आयी तो दुकानदार ने स्वीकार किया कि उनका यह स्टॉक दो माह पूर्व सेठी स्टोर से आया था, जिसे बेचने की बजाय ऐसे ही ऑनलाइन तथा ऑफलाइन स्टॉक शून्य दिखा दिया। इस अवैध भंडारण के पीछे ओवर प्राइसिंग और कालाबाजारी की मंशा प्रथम दृष्टया प्रमाणित हुई।

छापेमारी होते देखकर बड़ी संख्या मे एकत्र हुये ग्रामीणों ने बताया कि इस दुकानदार द्वारा किसानों को 1000 रुपये में यूरिया और जाइम बाल्टी संयुक्त रूप से बेची जा रही थी। मौके पर मौजूद शिवरी निवासी ललन पासवान तथा रतनगढ़ निवासी राकेश कुमार सिंह ने एसडीओ को बताया कि इस दुकानदार ने चार दिन पहले उन्हें 500 रुपये में यूरिया खाद की 1 बोरी तथा 500 रुपये में जाइम की बाल्टी दी थी। मामले को गंभीर मानते हुए एसडीएम ने मौके पर ही खाद विक्रेता के इस गोदाम को सील करा दिया एवं चाबी कांडी प्रखंड के नाजिर को सौंप दी। साथ ही अंचल अधिकारी कांडी को संबंधित विक्रेता पर प्राथमिकी दर्ज कराने तथा जिला कृषि पदाधिकारी को स्टॉक अपने अधीन लेकर नियमानुसार निस्तारण कराने का निर्देश दिया। एसडीएम संजय कुमार ने कहा कि उपायुक्त के निर्देश पर पूरे जिले में खादझबीज की कालाबाजारी रोकने हेतु लगातार अभियान चलाया जा रहा है। किसानों का हक मारकर लालचवश कालाबाजारी करने वाले बख्शे नहीं जायेंगे। इस दौरान कांडी थाना के पुलिस बल एवं बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण मौजूद थे। वहां मौजूद ग्रामीणों ने एसडीएम द्वारा की गयी कार्रवाई से खुशी जाहिर की।

सोनडीहा में छापेमारी: प्रति बोरी 750 रुपये की दर से बेचा जा रहा था यूरिया खाद

सगमा (आजाद सिपाही)। गढ़वा जिला अंतर्गत सगमा के सोनडीहा गांव से एक अहम खबर सामने आयी है, जहां बीडीओ विमल कुमार सिंह ने गुप्त सूचना के आधार पर एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। इस कार्रवाई में सोनडीहा गांव निवासी जीतेंद्र गुप्ता के घर से 15 बोरी यूरिया खाद जब्त किया गया है। यह खाद अवैध रूप से संग्रहित किया गया था और इसे बाजार दर से अधिक कीमत पर बेचे जा रही थी तैयारी थी। सूचना मिलने के बाद वीडियो विमल कुमार सिंह ने टीम के साथ तत्काल छापेमारी की। छानबीन के दौरान यह पता चला कि आरोपी व्यक्ति 15 बोरी यूरिया खाद को 750 रुपये प्रति बोरी की दर से बेच रहा था, जो कि सरकारी दर से अधिक है। यह मामला साफ तौर पर कालाबाजारी और किसानों के शोषण का है। जब्त की गयी खाद को पंचायत सचिवालय में सुरक्षित रूप से रखवा दिया गया है और मामले की जांच शुरू कर दी गयी है। बीडीओ विमल कुमार सिंह ने स्पष्ट कहा कि ऐसे मामलों में किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जायेगा और आवश्यकतानुसार कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

भारी बारिश से स्वर्णरेखा नदी का जलस्तर उफान पर

सोनाहातू के महातीर्थ सतीघाट का गंगा मंदिर लगातार दूसरी बार जलमग्न होने के कगार पर

आजाद सिपाही संवाददाता

सोनाहातू। पंचपरगना क्षेत्र का पवित्र ऐतिहासिक महातीर्थ सतीघाट जो सोनाहातू प्रखंड के पूर्वी क्षेत्र के बारेंदा पंचायत के पांडुडीह में बसा है। इस पवित्र ऐतिहासिक महातीर्थ सतीघाट, पांडुडीह के तट पर बसा गंगा मंदिर जलमग्न होने के कगार पर है। बता दें कि इससे पहले 1 अगस्त 2023, 3 अगस्त 2024, 17 अगस्त 2024 और 19 जून 2025 को गंगा मंदिर डूबने के कगार पर था। लगातार दो दिनों से हो रही भारी बारिश के कारण अचानक स्वर्णरेखा नदी का जलस्तर काफी बढ़ गया है। नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण नदी उफान पर है। गंगा मंदिर के पुजारी अजय शुक्ला ने स्वर्णरेखा नदी के अंदर जाकर गंगा मंदिर में पूजा अर्चना करने को लेकर सक्त मना कर दिया है। पुजारी ने मां गंगा के भक्तों से अपील की है कि जो भी भक्त पूजा करना चाहेंगे वो स्वर्णरेखा नदी के बाहर से ही मां गंगा की पूजा अर्चना करें, ताकि किसी भी तरह की अप्रिय घटना नहीं घटे।

बता दें कि लगातार अगल बगल के गांव के लोग पवित्र स्वर्णरेखा नदी के कलकल करती इस मनोरम दृश्य को देखने के लिए आ रहे हैं और स्वर्णरेखा नदी के इस मनोरम दृश्य को अपने अपने कैमरे में कैद कर रहे हैं।

खूंटी : भारी बारिश से टूटा चेक डैम, किसानों की फसल बर्बाद

खूंटी (आजाद सिपाही)। कर्रा प्रखंड के पहाड़ टोली गांव के पास बालारी नदी पर दो वर्ष पूर्व बना चेकडैम दो दिनों की भारी वर्षा के कारण रविवार को टूट गया। इससे पहाड़ टोली गांव के कई किसानों कें खेतों में लगी फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई। किसानों का कहना है कि चेक डैम निर्माण के दौरान संवेदक द्वारा सही से गार्डवाल का निर्माण नहीं कराया गया था। इसके कारण पानी के तेज बहाव को रोका नहीं जा सका। बताया गया कि चेक डैम का निर्माण लेकिन निर्माण दूसरे स्थान पर कर दियाग या। पहाड़ टोली गांव के किसानों ने प्रशासन ये चेकडैम निर्माण कार्य में अनियमितता की जांच कराने और किसानों को उचित मुआवजा देने की मांग की है।

सोसोकुटी डैम से काफी तेजी से पानी का बहाव होने से हजारों एकड़ में लगी धान की फसल नष्ट

अड़की (आजाद सिपाही)। अड़की प्रखंड के सोसोकुटी डैम से काफी तेजी से पानी का बहाव होने से हजारों एकड़ में लगे धान के फसल नष्ट हो गये। गांव के बगल से मिट्टी का कटाव लगातार जारी है। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत पुर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा से किया। उनके निर्देश पर अड़की की भाजपा की टीम ने भाजपा नेता अनुप कुमार साहू के साथ उक्त डैम का निरीक्षण किया। इस मौके पर मनोज गुप्ता, नेफतुल्लाह अंसारी, गुरूपद मुंडा, चैतन मुंडा सहित करीब शामिल थे।

कर्रा प्रखंड में लगातार बारिश से मिट्टी का घर गिरा

खूंटी (आजाद सिपाही)। पिछले तीन दिनों से हो रही लगातार और मूसलाधार बारिश के कारण मिट्टी का खपरैल घर गिर गया। शनिवार रात को हुई मुसलाधार बारिश के कारण कुदलुम पंचायत के काला मुछिया गांव निवासी गुमदा मिंज का घर पूरी तरह ध्वस्त हो गया। मामले की जानकारी मिलने पर रविवार को कर्रा प्रखंड की प्रमुख अंजनि मिंज और कुदलुम पंचायत के मुखिया संदीप हेरेंज ने काला मुछिया गांव जाकर स्थिति का जायजा लिया और स्थानीय प्रशासन और सरकार से पीड़ित गरीब परिवार को तत्काल आवास देने की मांग की। प्रमुख ने कहा कि पीड़ित परिवार को हर संभव सहायता दी जायेगी।

लगातार बारिश होने से घर गिरा, मुआवजे की मांग

तमाड़ (आजाद सिपाही)। कई दिनों से तमाड़ समेत पूरे पांच परगना क्षेत्र में लगातार बारिश होने से लोगों का जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है, लोग घर में रहने पर मजबूर हो गये हैं। वहीं बीते शनिवार की शाम भारी बारिश के कारण पेडाईडीह गांव के नलिता देवी का घर पूरी तरह गिर गया है, घर गिरने से भुक्तभोगी को काफी परेशानी हो रही है। भुक्तभोगी परिवार ने उचित मुआवजा देने की मांग की है।

ईचागढ़ में भारी बारिश से कई घर ध्वस्त

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ प्रखंड क्षेत्र में तीन दिनों से हो रही भारी बारिश से तबाही मचाई है। लगातार बारिश से गरीबों का जीना मुश्किल कर दिया है। खेतों में लगे सब्जी खेती के लिए तो ये बारिश अभिशाप बन गया है। वहीं रविवार को सापारूम गांव में श्याम सिंह मुंडा एवं डलीता मुंडा का घर भारी बारिश से धंस गया। आदारडीह गांव में कृष्ण चंद्र महतो का घर जमीनदोंज हो गया तथा सीमलटांड़ का गुड्ड महतो का घर का एक हिस्सा गिर गया है।

सरमाली गांव में डायरिया का प्रकोप

डायरिया से पीड़ित मरीजों की जांच करते चिकित्सक।

तमाड़ (आजाद सिपाही)। तमाड़ प्रखंड के सरमाली गांव में डायरिया होने की सुचना मिली है। जानकारी के अनुसार गांव की दमयंती देवी, केशव महतो किरण देवी और निरला देवी को रांची भेजा गया है। मिशिला देवी और अमृता कुमारी का बुंडू में इलाज चल रहा है। सुसारी देवी सहित आधा दर्जन लोग पीड़ित हैं। रविवार को तमाड़ अस्पताल की टीम गांव पहुंची और कई मरीजों को पानी चढ़ाया गया। कुआं में ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया गया है।

खलारी में किशोरी के साथ दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

आरोपी जान मिंज उर्फ बुधू।

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी थाना क्षेत्र में 13 वर्षीय किशोरी के साथ दुष्कर्म की घटना सामने आयी है। पीड़िता की मां ने शनिवार देर रात खलारी थाना में लिखित आवेदन देकर मामले की जानकारी दी। शिकायत में बताया गया कि शनिवार शाम करीब 5 बजे किशोरी यह कह कर घर से निकली थी कि वह पास में रहने वाली एक महिला के घर जा रही है। लेकिन देर शाम तक घर नहीं लौटने पर मां खोजबीन करते हुए उक्त महिला के घर पहुंचीं, जहां बताया गया कि बच्ची वहां आयी ही नहीं। इस बीच पास ही में रहने वाले आरोपी जान मिंज उर्फ बुधू के घर का दरवाजा बंद मिला, जबकि सामान्यतः उसका दरवाजा खुला रहता था। शक होने पर जब दरवाजा खोला गया, तो भीतर किशोरी रोते हुए मिली। पूछने पर बच्ची ने बताया कि रास्ते में आरोपी ने उसे बहला-फुसलाकर मिठाई देने का लालच दिया और घर के अंदर ले जाकर जबरन दुष्कर्म किया। विरोध करने और शोर मचाने पर आरोपी ने मार डालने की धमकी भी दी। आरोपी जान मिंज उर्फ बुधू को भारतीय दंड संहिता की संबंधित धाराओं एवं पाक्सो एक्ट के अंतर्गत अभियुक्त बनाया गया। पुलिस जांच में घटना सत्य पाये जाने पर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। थाना प्रभारी पुनि जयदीप टोप्पो ने बताया कि मामले की आगे की प्रक्रिया जारी है।

बारिश से डूबा राहे का धोबी मुहल्ला, अधिकारी और जनप्रतिनिधि पर ग्रामीणों में बढ़ा आक्रोश

राहे (आजाद सिपाही)। भारी बारिश से राहे प्रखंड अंतर्गत राहे गांव का धोबी मुहल्ला डूब गया है। तीन दिन से बारिश के बाद रविवार सुबह से गली में पानी बहने लगा जो धीरे धीरे घुटना से ऊपर हो गया। 40 से अधिक घरो में पानी घुस गया। मुहल्ले के गली में रविवार दिन भर घुटना भर पानी रहा। पानी का निकासी नही होने के कारण काफी समय तक जल जमाव बना रहा। ग्रामीणों का कहना है कि मानसून की पहली बारिश से मुहल्ला डूब गया था, लेकिन ढाई महीना बीत गया लेकिन अधिकारी और न कोई जनप्रतिनिधि ही पहल किया। ग्रामीण भगवान भरोसे रह रहे हैं। नहर का पानी सीधे धोबी मुहल्ला में बह रहा है,निकासी की कोई व्यवस्था नहीं है। 18 जून, 28 जून, 10 जुलाई, और 24 अगस्त को मुहल्ले के हर घर में पानी घुसा है।18 जून से अभी तक मुहल्ले में घुटना भर पानी लगातार बह रहा है।

न्यू बिजैन के विस्थापित ग्रामीणों ने अपनी मांगों को लेकर आज से बंदी का किया आह्वान

सीसीएल प्रबंधन को दिये गये मांग पत्र के तीन महीना बीत जाने के बाद भी कोई पहल नहीं होने से ग्रामीणों में आक्रोश

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के पुर्नवास केंद्र न्यू बिजैन के विस्थापित ग्रामीणों ने 21 सूत्री मांगों को लेकर स्थगित बंदी को पुनः सोमवार से पिपरवार क्षेत्र में अनिश्चितकालीन बंदी की घोषणा की है। रविवार को विस्थापित ग्रामीणों ने पिपरवार एरिया प्रबंधन को ज्ञापन देकर बंदी की सूचना दी है। इस संबंध में विस्थापित नेता रंथु गंझु ने बताया कि करीब तीन महीने पूर्व न्यू बिजैन के विस्थापित ग्रामीणों ने स्थानीय सीसीएल प्रबंधन को 21 सूत्री मांग पत्र सौंपा था, लेकिन मांगे पूरी नहीं होने पर ग्रामीणों ने बंदी किया था। इस बीच प्रबंधन ने ग्रामीणों के साथ वार्ता कर मांगों को पूरा करने का भरोसा दिया था, जिसके बाद ग्रामीणों के द्वारा बंदी को स्थगित कर दिया गया था। लेकिन तीन महीना बीत जाने के बावजूद प्रबंधन के द्वारा मांगों को पूरा नहीं किया गया है। प्रबंधन का आश्वासन सिर्फ भाषण बनकर रह गया है। जिसके कारण ग्रामीणों में आक्रोश देखा जा रहा है। यही वजह है कि ग्रामीणों ने प्रबंधन को एक बार फिर से स्थगित बंदी को शुरू करने के लिए आवेदन दिया है। उन्होंने बताया कि जब तक विस्थापित ग्रामीणों की मांगों को पूरा नहीं किया जायेगा तब तक अनिश्चितकालीन बंदी जारी रहेगा। मौके पर रंथु गंझु, राहुल राम, बाबूलाल राम, कुलदीप राम,पच्चु गंझु, सुरेंद्र राम, संतोष कुमार गंझु, अजीत कुमार मुंडा, चरका गंझु, राजू मुंडा, सोनू गुप्ता, संजय, देवनारायण सहित अन्य विस्थापित ग्रामीणो मौजुद थे।

झारखंड में जनजातीय आयोग के गठन की मांग, विधायकों को सौंपा ज्ञापन

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। युवा समाजसेवी प्रवीण कच्छप के नेतृत्व में रविवार को रांची स्थित आवास में खूंटी के विधायक राम सूर्या मुंडा और तोरपा के विधायक सुदीप गुड़िया से प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात कर आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों के संरक्षण को लेकर ज्ञापन सौंपा। प्रवीण कच्छप ने कहा कि झारखंड में आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों के संरक्षण के लिए एंव प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए जनजातीय आयोग का गठन किया जाए। उन्होंने कहा कि झारखंड के पड़ोसी राज्यों बिहार, छत्तीसगढ़ में जनजातीय आयोग जनजातीय समुदाय के बीच बेहतर काम कर रहा है। झारखंड अलग राज्य बने हुए 24 साल बीत गये, लेकिन अभी तक झारखंड में अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन नहीं दुर्भाग्यपूर्ण है। सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद उरांव न विधायको से निवेदन किया कि झारखण्ड विधानसभा के इसी मानसून सत्र में जनजातीय आयोग के गठन के लिए आवाज उठायें। उन्होंने कहा कि दोनो विधायक टीएसी के सदस्य हैं, आदिवासियों के कई मामले को बैठक में रखा जा रहा है जैसे आदिवासियों की जमीन के बदले मॉर्गेज लोन, आदिवासी जमीन खरीद पर सीएनटी एक्ट में थाना क्षेत्र की बाध्यता समाप्त करने, सिंगल विंडो सिस्टम के तहत ठेकेदारी में आदिवासियों के लिए छूट और 25 करोड़ तक का लाइसेंस बनाया जाये। उन्होंने कहा कि जाति प्रमाण पत्र में विवाहित महिला के पति का नाम आवश्यक रुप से जोड़ा जाये। प्रतिनिधिमंडल में प्रवीण कच्छप, अरविंद उरांव चार्ल्स मिंज, विवेक टोप्पो आदि शामिल थे।

लाठी-डंडे से मारकर सगे भाई को किया घायल

खूंटी (आजाद सिपाही)। कर्रा थाना क्षेत्र के मनरेगा पार्क समीप भट्टी बाजार में रविवार को कर्रा कटहल टोली निवासी कामा धान उम्र 25 वर्ष को उसके सगे भाई लादू धान ने लाठी-डंडे और पत्थर से मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। कर्रा थाना की पुलिस गंभीर स्थिति में उठाकर उसे सीएचसी कर्रा ले गई, पर उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे सदर अस्पताल खूंटी भेज दिया गया। जानकारी के अनुसार रविवार को रविवार बाजार और मनरेगा पार्क के बीच भट्टी बाजार में कामा धान अपने दो भाइयों नवीन धान और लादू धान के साथ हड़िया पी रहा था। उसी दौरान किसी बात को लेकर कामा धान अपने बड़े भाई नवीन धान के साथ झगड़ने लगा। इसे देखकर मंझले भाई लादू धान ने लाठी-डंडे और पत्थर से मारकर कामा धान को गंभीर रूप से घायल कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस वहां पहुंची। बाद में लादू धान ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए पुलिस के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया।

130वां संविधान संशोधन बिल के विरोध में झामुमो ने फूंका केंद्र सरकार का पुतला

खूंटी (आजाद सिपाही)। केंद्र सरकार द्वारा 130वां संविधान संशोधन बिल का प्रस्ताव लाए जाने के विरोध में झामुमो कार्यकर्ताओं ने रविवार को खूंटी के भगत सिंह चौक में केंद्र सरकार का पुतला दहन किया। झामुमो जिलाध्यक्ष जुबैर अहमद के नेतृत्व में आयोजित पुतला दहन कार्यक्रम में शामिल झामुमो कार्यकर्ताओं द्वारा इस दौरान केंद्र सरकार के विरुद्ध जमकर नारेबाजी भी की गयी। मौके पर जिलाध्यक्ष जुबैर अहमद ने कहा कि केंद्र सरकार ने एक साजिश के तहत इस काले कानून का बिल पेश किया है। केंद्र सरकार की मंशा है कि इस काले कानून के माध्यम से किसी भी राज्य के निर्वाचित मुख्यमंत्री, मंत्री आदि को बिना किसी आरोप सिद्ध होने पर भी उनके पद से हटाना है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के इस मंशा को कभी भी सफल नहीं होने दिया जायेगा। झामुमो द्वारा संविधान संशोधन विधेयक 2025 का सदन से लेकर सड़क तक तीव्र विरोध किया जायेगा। पुतला दहन कार्यक्रम में जिला सचिव सुशील पाहन, केंद्रीय समिति सदस्य मकसूद अंसारी मनोज मंडल, प्रदीप केशरी, मोजीर अंसारी, शंकर सिंह मुंडा, सानिका बोदरा, देवनाथ माघईया, तौकीर, शेख फिरोज, बीरेंद्र सिंह, असलम अंसारी समेत सैकड़ों झामुमो कार्यकर्ता शामिल थे।

ढूब में धूमधाम से मनेगा करमा पूजा

खलारी (आजाद सिपाही)। तुमांग ढूब में करमा पूजा मनाने को लेकर ग्रामीणों की बैठक अमृत भोगता की अध्यक्षता में हुई। बैठक में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ढुब में करमा पूजा धूमधाम से मनाया जायेगा। पूजा के सफल संचालन के लिए पूर्व की ही कमिटी को बरकरार रखा गया है। साथ करमा पूजा में सभी ग्रामीणो से सहयोग करने का भी आग्रह किया गया है। बैठक में मुकद्दर लोहरा, बालेश्वर भोगता रामेश्वर भोगता, लालमनी भोगता उमेश लोहरा, सूरज लोहरा, बिनोद गंझु, राजेंद्र, सूरज भोगता, संतोष, सुनील भोगता, मनोज, लेदवा, राजू सहित कई ग्रामीण मौजूद थे।

जेहलीटाड़ में भूधंसान से बनी गोफ, ग्रामीण भयभीत

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। विश्रामपुर पंचायत के जेहलीटाड में भूधंसान हुआ। केडीएच खदान के नजदीक जेहलीटॉड स्थित शरथु गंझु के घर के समीप भु धंसान हुआ है। लगभग दो फीट गोफ बन गया था। वहीं तीन चार फीट चौड़ाई तक भूमि धंस गयी थी। ग्रामीणों ने बताया कि शनिवार को हुई लगातार बारिश के कारण घर के नजदीक गोफ बन गया था और गोफ के अंदर से गैस निकल रहा था। जिसके बाद शनिवार को ही केडीएच परियोजना प्रबंधन को इसकी जानकारी दी गयी थी। वहीं मोर्चा के द्वारा प्रबंधन को जानकारी दी गयी। वहीं रविवार को गोफ और कुछ बड़ा हो गया था, जिसके बाद ग्रामीण भयभीत हो गये। रविवार को केडीएच खान प्रबंधक राघवेंद्र गांधी तथा रैयत विस्थापित मोर्चा के केडीएच शाखा सचिव प्रभाकर गंझु, किसुन गंझू, दामोदर गंझू, चंद्रदीप गंझु एव ग्रामीण भी गोफ वाले जगह पर निरीक्षण किया। प्रबंधन के द्वारा रविवार को व्हील डोजर के माध्यम से गोफ बने गढ्ढे को बंद किया गया। ग्रामीणों ने कहा कि पूर्व में इस क्षेत्र में भूमिगत खदान चल चुका है जिसके कारण बरसात में हर वर्ष भु धंसान होते रहता है। ग्रामीणों ने खान प्रबंधक को खदान के नजदीक घरो के समीप हो रहे भु धंसान को देखते हुए इस पर गंभीरता से पहल करने का आग्रह किया। प्रबंधन से कहा कि जिस तरह से बार बार भु धंसान हो रहा है जो आने वाले दिनों में और भी स्थिति भयावह हो सकता है, इसलिए प्रबंधन इसको ध्यान दे और जल्द से जल्द लोगों को विस्थापित करें।

तोरपा के विद्या विहार स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

खूंटी (आजाद सिपाही)। तोरपा के एनएचपीसी परिसर स्थित विद्या विहार पब्लिक स्कूल में शनिवार को फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बच्चों ने पंजाबी, गुजराती, राष्ट्रीय प्रतीक, पृथ्वी, काली मां, सेल्फ डिफेंस, पंडित जवाहर लाल नेहरू, किसान, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, पंडित, कृष्ण, टीचर, आम, घड़ी, झांसी की रानी, टूथपेस्ट, आदिवासी महिला, नर्स, सिपाही, विश्व सुंदरी आदि बनकर सबका मन मोह लिया। प्रतियोगिता में नर्सरी से कक्षा पांच तक के बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों में श्रेया माझी, अंशिका श्री, अक्षिता मिश्रा, सार्थक्र मिश्रा, प्रियांशु नाग, अंश राज, श्रेन्या केशरी, अर्पित तिरु, चुलबुल साहू, अलका कुजूर, फरहान अंसारी तथा काव्य सिंह विजयी रहे। निर्णायक की भूमिका सेबेस्टियन धान, कविता जायसवाल तथा उषा हंस ओझा ने निभायी। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका नूरजहां तोपना ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिता समय-समय पर होती रहनी चाहिए। इससे बच्चों की प्रतिभा निखरती हैं। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

कल्याणपुर निवासी मोहम्मद साहिल को बनाया गया झामुमो चतरा जिला का संगठन सचिव

मो साहिल की फाइल फोटो।

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के कल्याणपूर निवासी सह झारखंड मुक्ति मोर्चा के सक्रिय सदस्य मोहम्मद साहिल को झारखंड मुक्ति मोर्चा चतरा जिला का संगठन सचिव मनोनीत किया गया है। इस संबंध मे पार्टी के महासचिव बिनोद कुमार पांडेय ने इससे संबंधित आदेश पत्र को जारी किया है। जानकारी के अनुसार मोहम्मद साहिल पिछले करीब 14 वर्ष से झारखंड मुक्ति मोर्चा के सक्रिय सदस्य के रूप मे पार्टी से जुड़कर पार्टी के हित मे काम कर रहे है। इस संबंध में मोहम्मद साहिल ने बताया कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ने जो जिम्मेदारी उन्हें दी है उसे वह पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा को मजबूत बनाने एवं सदस्यता बढ़ाने सहित पार्टी के नीति, सिद्धांत और नीतियों को आम जनता तक पहुंचने का काम करेंगे। जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने एंव पंचायत स्तर तक पार्टी को मजबूत बनाने का काम करेंगे। इधर मोहम्मद साहिल को जिला संगठन सचिव बनाए जाने पर कई लोगों ने उन्हे बधाई दी है। बधाई देने वालों में सिमरिया विधानसभा प्रभारी मनोज कुमार चंद्रा, प्रेमलता चंद्रा, झारखंड मुक्ति मोर्चा के चतरा जिला अध्यक्ष निलेश ज्ञानसेन, इकबाल हुसैन, मोहम्मद असलम, जागेश्वर दास, अब्दुल अंसारी, अरविंद कुमार सिंह, अब्दुल कुदूस, शकील अंसारी, मुख्तार अंसारी सहित अन्य कई लोगों का नाम शामिल है।

वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हुई, तो ठप हो सकता है खूंटी-सिमडेगा रोड पर आवागमन

भारी वाहनों के आवागमन से टूटने लगी है ग्रामीण सड़कें, कई डायवर्सन भी बहे

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। पिछले तीन महीने से आफत बन कर बरस रहे बादल ने खूंटी जिले की सूरत बिगाड़ कर रख दी है। फसले तो बर्बाद हुई ही, सड़कों के और पुल-पुलियों के टूटने के कारण आवागमन पर भी काफी बुरा असर पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि आवागमन की कोई रूैवल्पिक व्यवस्था नहीं की गयी, तो खूंटी-सिमडेगा मार्ग पर आवागमन पूरी तरह ठप हो सकता है। भारी बारिश और कमजोर निर्माण के कारण गत 19 जून को खूंटी-तोरपा-कोलेबिरा मुख्य सड़क पर पेलौल गांव के पास बनई नदी पर बना पुल टूट गया था। कुछ दिनों के बाद डोड़मा-सिसई पथ पर छाता नदी पर बना डायवर्सन भी टूट गया। लगभग दो मीहीने बीत जाने के बाद भी बनई नदी पर न तो डायवर्सन बना और न ही पुल निर्माण हआ। इसे कारण वाहनों का आवागमन काफी मुश्किल हो गया है। पुल के टूटने से झारखंड, ओड़िशा, बंगाल और छत्तीसगढ़ राज्यों की गाड़ियों को वैकल्पिक रास्तों से होकर गुजरना पड़ रहा है। अंगराबारी-तुपुदाना भाया जुरदाग पथ, जुरदाग-कुंजला पथ, मुरहू-तपकरा पथ, खूंटी-माहिल-घाघरा-बिचना पथ, तोरपा-कर्रा-रांची भाया बाला मोड़, जलटंडा-वन गानालोया भाया भोंडा पथ समेत अन्य सड़कों से भारी वाहनों का परिचालन हो रहा है। लगातार भारी वाहनों का परिचालन होने से अब ये वैकल्पिक सड़कें भी टूटने लगी हैं। जगह-जगह गड्ढे बन गये हैं और फ्लैंक पूरी तरह खत्म हो चुके हैं। फ्लैंक की जगह दोनों ओर बने गड्ढ़ों की वजह से वाहन चालक सड़क से नीचे वाहन उतारने से भी बच रहे हैं, क्योंकि गाड़ियों के फंसने का डर बना रहता है। अंगराबारी-तुपुदाना पथ पर बेड़ा पुल के पास मिट्टी का काफी कटाव हो गया है। इसके कारण सड़क खतरनाक हो गयी है। कभी भी वहां कोई हादसा हो सकता है। कुछ वर्षों पूर्व माहिल-गानालोया के बीच बनई नदी पर बना पुल दब चुका था, जिसकी मरम्मत कराई गयी थी। अब इस पुल से होकर कई भारी वाहनों के गुजरने और पुल के नीचे से बालू के अवैध उत्खनन से इस पुल पर भी टूटने का खतरा मंडरा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि पुल टूटने के बाद से लगातार समस्या बढ़ती जा रही है। अब कई ग्रामीण सड़कें भी टूट चुकी हैं और दिन-ब-दिन इनकी स्थिति और बिगड़ रही है।

खूंटी में विद्या साथियों को मिला सही स्तर पर शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण

खूंटी (आजाद सिपाही)। स्वयंसेवी संस्था लीड्स जिले के मुरहू प्रखंड के 15 गांवों में इंडिया लिटरेसी प्रोजेक्ट के सहयोग से ग्राम पाठशाला चला रही है। इन ग्राम पाठशालाओं में कक्षा तीन से आठ तक के ऐसे चिह्नित बच्चों को पढाया जाता है, जिनकी शैक्षिणिक योग्यता उनकी आयु के अनुरूप नहीं है। इन ग्राम पाठशालाओं में ऐसे बच्चों को नामांकित कर आधारभूत भाषा और गणित विषय पर क्षमता का विकास किया जाता है, ताकि आयु अनुरूप बच्चों के शैक्षिणिक स्तर में सुधार लाया जा सके। इन ग्राम पाठशालाओं में पठन पाठन करा रहे स्वयंसेवकों को विद्या साथी कहा जाता है। इन विद्या साथियों के लिए सही स्तर पर शिक्षण के तरीके पर हिंदी भाषा और गणित पर शिक्षण के विभिन्न तरीकों पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन लीड्स के पेरका स्थित ट्रेनिंग सेंटर में शनिवार और रविवार को किया गया। इन सभी 15 ग्राम पाठशालाओं के विद्या साथियों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण का संचालन आशुतोष जयसवाल, साकेत मांझी, प्रदुम्न मांझी और रौशनी कुमारी द्वारा किया गया। प्रशिक्षण के दौरान विद्या साथियों को शिक्षण अधिगम सामग्रियां भी दी गयी, ताकि बच्चों के पठन-पाठन में इनका उपयोग हो सके।

संतुलन बिगड़ने पर सड़क पर गिरने से हुआ हादसा

सड़क दुघर्टना में स्कूटी सवार युवक की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम। थाना क्षेत्र के राजाउलातू रिंगरोड पर सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान राजाउलातू निवासी उत्तम कच्छप (20) के रुप में की गई है। जानकारी के अनुसार शनिवार देर रात उत्तम रिंग रोड होते हुए स्कूटी पर सवार होकर अपने घर जा रहा था। इसी दौरान लगातार हो रही बारिश के कारण रिंग रोड में गाड़ी का संतुलन बिगड़ गया और उत्तम सड़क पर ही गिरकर गंभीर रुप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना नामकुम पुलिस को दी। जिसके बाद उत्तम को गंभीर अवस्था में रिम्स अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। इधर, घटना के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। पुलिस ने रविवार को शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है।

मृतक उत्तम कच्छप की फाइल फोटो।

अस्त्र-शस्त्र प्रतियोगिता का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी। नगड़ी प्रखंड क्षेत्र के प्रेमनगर स्थित हुसैनी ईगाम बड़ा पतरा-चौली में रविवार को मोहर्रम एक्शन कमेटी बसिला, बरसा, एड़चोरो के तत्वावधान में चहल्लूम सह अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता आयोजित हुआ। अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता का शुभारंभ संरक्षक हाजी रकीब और समाजसेवी यासीन ने लाठी भांजकर किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में कांग्रेसी नेता सह समाजसेवी अजय शाहदेव के अलावा विशिष्ट अतिथि झामुमो नेता कलाम आजाद, भाजपा नेता शशिभूषण भगत, कुलदीप तिवारी, शहीद अहमद, गुलरेज अंसारी, अब्दुल कुदूश आदि उपस्थित थे। आयोजक सदस्यों की ओर से उपस्थित सभी अतिथियों को बैच देकर एवं पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में अतिथियों ने कहा कि ऐसे आयोजन सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं। चहल्लूम तो एक समुदाय विशेष आयोजन करता है पर उसकी सफलता के पीछे सभी समुदायों का सहयोग होता हैं। यही हमारी एकता का प्रतीक है। हमें आपस में एक साथ मिलजुल रहना है जिससे गंगा जमुना तहजीब की भावना हमेशा बनी रहे। यही हमारा संकल्प होना चाहिए। इस मौके पर आयोजन कमेटी के सदस्यों द्वारा अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता में शामिल अखाड़ों के सदस्यों की ओर से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को बड़ा डेग और तलवार देकर सम्मानित किया गया। चहल्लूम सह अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता में नगडी प्रखंड के सभी गावों के लोगों सहित रांची और खूंची जिला के दर्जनों गांवों के अखाड़ा धारी अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता में शामिल होने पहुंचे हैं। चहल्लूम सह अस्त्र शस्त्र प्रतियोगिता को सफल बनाने में संरक्षक हाजी रकीब, समाजसेवी यासीन अंसारी, सदर अमीन अंसारी बसिला, सेकेट्री जाकीर अंसारी, कोषाध्यक्ष माहिर अंसारी, संचालक बलकू अंसारी, मोहम्मद गाजी, इमरान अकमल, समशुल अंसारी, नुरूल होदा, इकबाल अंसारी, महीर अंसारी, मामूल अंसारी, मंजूर अंसारी, लतीफ अंसारी, अमाल अंसारी, आजिज अंसारी, शाकिल अंसारी, नुर हसन अंसारी, अब्दुल क्यूम अंसारी, सागिर अंसारी, सुभान अंसारी, अख़्तर अंसारी, मुमताज अंसारी, गुलरेज अंसारी, परवेज तबरेज और मोकतार वासिम अंसारी आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

बेड़ो से गुजरने वाली रांची-गुमला मुख्य मार्ग गढ्ढे में तब्दील, राहगीर हो रहे परेशान

बेड़ो (आजाद सिपाही)। बेड़ो से रांची-गुमला आने-जाने वाले मुख्य मार्ग की हालत बेहद खराब हो चुकी है। सड़क में गड्ढे हैं या गड्ढों में सड़क यह पता ही नहीं चल रहा है। जिसमें अक्सर लोग गिरकर चोटिल हो रहे हैं। ऐसा नहीं कि जिम्मेदार समस्या को जानते नहीं हैं। क्योंकि उनका अक्सर उक्त मार्ग से आना-जाना होता है, लेकिन देखकर भी अनदेखा कर देते हैं, जिसका खामियाजा राहगीरों को भुगतना पड़ता है। सरकार ने गांवों के विकास के लिए सड़कों को दुरुस्त एवं जहां मार्ग नहीं है वहां मार्ग बनाने का निर्देश भी दिया है। लेकिन जिम्मेदारों की अनदेखी की वजह से बेड़ो से गुजरने वाली रांची-गुमला मुख्य मार्ग दुरुस्त नहीं हो पा रही है। वर्षा होने पर गड्ढों में पानी भर जाता है और गहराई पता न होने के चलते दो पहिया वाहन चालक अक्सर गिर जाते हैं। जबकि बड़े वाहन गड्ढों में फंस कर खराब हो जाते हैं और जाम लगने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। लोगों का आरोप है कि बीते कई महीनों से नाली जाम है। इससे गंदा पानी सड़क पर बह रहा है। आने-जाने के लिए सिर्फ इसी मार्ग का सहारा है। जिस कारण लोग इसी गंदे पानी के बीच से आने-जाने को विवश हैं। सड़क पर बने गढ़ों की वजह से स्कूली बच्चों और लोगों को आवागमन में काफी मुश्किलों का सामना प्रतिदिन करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने नाली की सफाई कराते हुए सड़क में बने गड्ढों को यथाशीघ्र बनवाने की मांग की है।

करमा पर्व पारंपरिक तरीके से मनाने का लिया निर्णय

- केंद्रीय सरना समाज उत्थान समिति की बैठक
- प्रखंड मुख्यालय में दिशोम गुरु शिबू सोरेन की प्रतिमा स्थापित करने की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

अनगड़ा। केंद्रीय सरना समाज उत्थान समिति अनगड़ा की बैठक रविवार को चिलदाग गांव में हुई। जिसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष जमल मुंडा ने किया। बैठक में तदीन सितंबर को करम पूजा का त्योहार पारंपरिक और उल्लास के साथ मनाने का निर्णय लिया गया। बताया गया कि दो सितंबर को संयोत (उपवास), तीन सितंबर को पारंपरिक रीति रिवाज के साथ पाहन द्वारा डिंडा करम पूजा के बाद रात में जागरण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। वहीं, चार सितंबर को करम डाली का विसर्जन के साथ करम पर्व संपन्न हो जागा। इस अवसर पर जमल मुंडा ने अखाड़ों में किसी तरह की अव्यवस्था और अशांति उत्पन्न ना हो, इसके लिए वॉलेंटियर्स की नियुक्ति करने, पारंपरिक वाद्य यंत्रों का ही उपयोग करने और प्रत्येक अखाड़े में सरना झंडा लगाने की अपील की। लगे हाथ बैठक में प्रस्ताव पारित कर दिशोम गुरु शिबू सोरेन की प्रतिमा प्रखंड मुख्यालय में स्थापित करने एवं झारखंड के सभी करम अखाड़ों का सुंदरीकरण करने की मांग सरकार से की गई। इस मौके पर महेश मुंडा, सूरज मुंडा, रतिलाल पाहन, राजेंद्र मुंडा, तनीजर मुंडा, मधु पाहन, अशोक पाहन, जीतन पाहन, राशो पहनाईंन, आसीन पाहन, प्रदीप पाहन, बलराम पाहन, देवराज पाहन, मुन्ना मुंडा, मदरा मुंडा और सुगी पहनाईंन आदि मौजूद थे।

नगड़ी में हार जोतो रोपा रोपो अंदोलन में भाग लेने सिकिदिरी से भी कार्यकर्ता हुए शामिल

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। रांची के कांके स्थित नगड़ी में प्रस्तावित रिम्स 2 की जमीन पर रविवार को पूर्व मुख्यमंत्री सह भाजपा नेता चंपाई सोरेन की ओर से हल जोतो, रोपा रोपो कार्यक्रम में भाग लेने सिकिदिरी मंडल से भी हजारों कार्यकर्ता शामिल हुए। जिसकी अगुवाई भाजपा अनुसुचित जनजाति मोर्चा रांची जिला अध्यक्ष बुधराम बेदिया ने किया। कार्यकर्ताओं ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री सह दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने आदिवासियों से लोकप्रियता हासिल करने के लिए नारा लगाये थे। हल जोतो, रोपा रोपो, लेकिन आज सरकार उनके आह्वान के विपरित आदिवासीयों की जमीनी को हड़पने का प्रयास कर रही है। इसके लिए हम पूरे आदिवासी मुलवारी एक मत हैं और इसका विरोध जारी रहेगा। इसस मौके पर सोहरैया बेदिया, दिलीप मिर्धा, सहदेव बेदिया आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर प्रतियोगिता का आयोजन

रातू (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर शनिवार को प्रखंड स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रखंड संसाधन केंद्र में आयोजित प्रतियोगिता को प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी हिना नाज ने शुरूआत की। जिसमे झखराटांड, प्रखंड मुख्यालय, झिरी, हुरहुरी, रातू और चट्टी के विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शामिल हुईं। पेंटिंग प्रतियोगिता में आदित्य कुमार और रोहिणी राज, क्विज में आयुष कुमार एवं सोफिया नुजहत और भाषण प्रतियोगिता में सविता कुमारी एवं गौतम कुमार ने उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया। जिन्हें कार्य्रकम पदाधिकारी हिना नाज ने मेडल देकर पुरस्कृत किया। इस मौके पर शिक्षक सुरजीत कुमार, संदीप कुमार, वरुण कुमार, राजेश उरांव, जितेंद्र कुमार और आशा कुमारी शामिल थे।

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के पूर्व मुख्य सचिव ने किया 'मास' संस्थान का भ्रमण

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के पूर्व मुख्य सचिव एनएन सिन्हा ने शनिवार को चिलदाग लालगढ़ स्थित मास संस्थान का भ्रमण किया। बताते चलें कि मास संस्थान के सचिव विजय भरत को हाल ही में मास के इनोवेशन के लिए दिल्ली में पुरस्कार मिला था। इस दौरान कृषि विकास के क्षेत्र में मास के योगदान एवं इसके कार्य पद्धति की काफी सराहना भी की गई थी। वहीं, पूर्व मुख्य सचिव ने संस्थान में प्रदर्शित अति सघन बागवानी, ओएस्टर मशरूम उत्पादन, नर्सरी तथा अनेक प्रत्यक्षनं को देखा और उसकी प्रशंसा की।

बेड़ो में गणेश पूजा की तैयारी जोरों पर

- गणेश पूजा पंडाल में कलर बदलते हुए पारंपरिक टेराकोटा हस्तशिल्प और लोक कला का दिखेगा अनूठा संगम

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। श्री राधे कृष्ण यूथ संगम गणेश पूजा समिति के तत्वावधान में 27 से 31 अगस्त तक पांच दिनी श्री गणेश पूजा महोत्सव का आयोजन होगा। जबकि एक सितंबर को विसर्जन शोभायात्रा निकाली जाएगी। इस वर्ष भव्य पूजा पंडाल का निर्माण कराया जा रहा है। पूरे पूजा पंडाल को टेराकोटा के घोड़ो जिसे बांकुड़ा घोड़ा भी कहते हैं, जो अपनी लंबी गर्दन, सुंदर मुद्रा और अनूठी अमूर्तता के लिए जाना जाता है का प्रारूप दिया जा रहा है। बप्पा का दर्शन करने आने वाले श्रद्धालुओं को पूरे पूजा पंडाल में पारंपरिक टेराकोटा हस्तशिल्प एवं लोक कला का अनूठा संगम देखने को मिलेगा। पूजा पंडाल के निर्माण में झोला, मिट्टी के बर्तन और कुल्हड़ का उपयोग किया जा रहा है, जो श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करेगा। पूजा पंडाल की लंबाई 90 फीट और चौड़ाई 55 फीट होगी। इसके निर्माण कार्य में पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले के 45 कारीगर दिन-रात लगे हुए हैं। पंडाल के अंदर गणपति बप्पा का दर्शन करने के बाद श्रद्धालु चलित मूर्ति का अवलोकन कर सकेंगे। पूजा पंडाल आने वाले मार्गों पर कई तोरण द्वार होंगे। जिसमें एफिल टावर, ड्रैगन एवं तितली द्वार लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। साथ ही रंग बिरंगी लाइटों से विद्युत सज्जा की जा रही है। बतातें चलें कि गणेश पूजा का प्रारंभ 27 अगस्त को कलश स्थापना के साथ होगा। जबकि 29अगस्त को 1001 माता बहनों द्वारा महाआरती एवं भंडारा, 30 अगस्त को खिचड़ी भोग, 31 अगस्त को 501 किलो दूध से बने खीर का महाभोग लगाने के साथ ही एक सितंबर को हवन पूर्णाहूति के बाद शाम में गणपति बप्पा की प्रतिमा का विसर्जन शोभायात्रा निकाली जाएगी। पूजा के सफल ऐयोजन में शिवेंद्र सौरभ, अंकित सोनी, अविनाश कश्यप, उत्तम कुमार, अमन गुप्ता, अभिनव गुप्ता, उत्तम सोनी, विभाकर सिंह, राकेश साहू, आशीष महतो, प्रेम गुप्ता, अमित कुमार चीकू, अजय साहू, आशीष सोनी, शुभम गुप्ता, लव कुमार, विवेक कुमार, सौरभ खन्ना, अभिजीत राज, सुशांत राय, खदी उरांव, आदित्य गुप्ता, संदीप कुमार, आकाश रक्षित, संकित मंगल, रविंद्र, विकास कुमार, प्रीतम महतो, प्रिंस पांडे, गौतम गोप और राज, ऋतिक आदि जुटे हैं।

मानकी राजेंद्र शाही बने बारीडीह दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष, संरक्षक जयनारायण सिंह

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। बारीडीह दुर्गा पूजा समिति की बैठक रविवार को श्री रामजानकी मंदिर प्रांगण में हुई। जिसकी अध्यक्षता ग्राम प्रधान मानकी जयनारायण सिंह ने की। इस दौरान सर्वसम्मति से मानकी राजेंद्र शाही को अध्यक्ष बनाया गया। इस अवसर पर नए अध्यक्ष ने कहा कि दुर्गा पूजा धूमधाम से शांतिपूर्ण तरीके से मनाया जाएगा। इसके लिए मां दुर्गा की प्रतिमा बनाने का कार्य जल्द शुरू होगा। मां भगवती का पूजा नवनिर्मित भवन में होगा। विजयादशमी पर रावन दहन एवं मेला का आयोजन सरना मैदान में होगा, जिसकी तैयारी शुरू कर दी गई है। इस दौरान दुर्गा पूजा के बेहतर संचालक के लिए कमेटी का भी गठन किया गया, जिसमें मुख्य संरक्षक ग्राम प्रधान मानकी जयनारायण सिंह, सिकंद्र महतो, संरक्षक रामाकांत महतो, विशेश्वर महतो, कलेश्वर महतो, आशाराम महतो, चमरू प्रजापति, घुमेश्वर महतो, महावीर महतो, युगलकिशोर पाहन, अध्यक्ष मानकी राजेन्द्र साही, उपाध्यक्ष बाबूराम महतो, राजेश करमाली, राजेंद्र महतो, बाबूराम पाहन, सचिव ब्रह्मदेव नायक, उपसचिवधनंजय महतो, संगठन सचिन सोहराई महतो, कोषाध्यक्ष भूषण कुमार महतो, उपकोषाध्यक्ष विजय कुमार एवं मीडिया प्रभारी शारदा प्रसाद के अलावा 51 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। इस मौके पर साहराई महतो, विजय कुमार महतो, पन्नालाल प्रजापति, छदी महतो, अरविंद महतो, कुलवश कुमार, रामाकांत महतो, महाबीर महतो, विमल प्रजापति, बालेश्वर महतो, राजेश कुमार करमाली, शिवचरण नायक, युगल किशोर पाहन, संजय कुमार, फुलेंद कुमार, नरेश महतो, ब्रह्मदेव नायक, दिनेश कुमार, बलदेव प्रसाद, चमरू प्रजापति, धनंजय महतो, शारदा प्रसाद महतो आदि उपस्थित थे।

प्रश्नोत्तरी, भाषण और पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। प्रखंड संसाधन केंद्र में शनिवार को प्रखण्ड स्तरीय प्रश्नोत्तरी, भाषण एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें विभिन्न विद्यालयों के चयनित विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कक्षा तीन, चार एवं पांच के विद्यार्थियों के लिए पेंटिग प्रतियोगिता (विषय स्वच्छता/स्वच्छ), कक्षा 6, 7 एवं 8 के विद्यार्थियों के लिए (विषय ओलिंपिक इतिहास/ओलंपिक में भारत की उपलब्धि) पर प्रश्नोत्तरी एवं कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता (विषय मेजर ध्यानचंद के जीवन हमें क्या प्रेरणा मिलती है) हुई। मौके पर पेंटिंग प्रतियोगिता में अनुराग लोहरा, तानिया कुमारी, राज करमाली, चांदनी कुमारी, प्रेम मिर्धा एवं रौशनी, प्रश्नोत्तरी में राहुल कुमारी, नंदनी कुमारी, राजकुमार भोगता, रिमा कुमारी, विनय गाड़ी, निशा टोप्पो एवं साक्षी कुमारी तथा भाषण प्रतियोगिता में अरमान अंसारी, शुभानी कुमारी, धीरज सिंह, खुशी कुमारी, उमेश बेदिया, तन्नु साहू और रानी कुमारी अव्वल रहे। वहीं, आयोजन को सफल बनाने में बीपीओ पंकज तिर्की, सीआरपी उत्तम देवघरिया, अरविंद गुप्ता, दिलेश्वर महतो, रत्नेश राकेश, शिवा मुंडा, शैलेश सिंह, अरविंद कुमार, सगुना तिर्की सहित अन्य का योगदान रहा।

अतिवृष्टि से नामकुम में कई गरीबों के घर गिरे

नामकुम (आजाद सिपाही)। राज्य में लगातार हो रही बारिश से राज्य के क्षेत्र जलमग्न हो गए है। रांची जिला के नामकुम प्रखंड के कई क्षेत्रों में पानी घरों में घुस गया है। कई लोग परेशान है। जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है, कई गरीबों के घर गिर गए है। घर गिरने के कारण लोगों को रहने में काफी परेशानी हो रही है। जिसमें लोधमा गांव के बसंत बड़ाईक का घर पूरी तरह से गिर चुका है। दिन होने के कारण घर में कोई नहीं थे। लोग काम पर निकले थे और बच्चे स्कूल गए थे, जिसके कारण कोई भयावह घटना नहीं घटी। लेकिन बसंत का घर पूरी तरह से गिर गया है। जिस कारण रहने, सोने, खाने के तमाम चीज बर्बाद हो गया है। वहीं, लोधमा गांव के ही राजू पाहन का घर ढह गया। किसी तरह आधे घर को रहने के लिए बांस से टिकाया गया। करम टोली निवासी दया कुमारी, अमर टोप्पो, चटकपुर, कुटियातू, खिजरी में भी कई लोगों का घर के अंदर पानी घुस गया है। जिससे रहने में परेशानी और बच्चों की तबियत भी खराब हो रही है। झारखंड सरकार और आपदा प्रबंधन विभाग के उदासीन रवैया के कारण लोगों में आक्रोश है। पूर्व में भी ओलावृष्टि से कई घरों के छत टूट गए थे। लेकिन आज तक उसका मुआवजा राशि तक नही मिला। स्थानीय प्रशासन को सूचना देने के बावजूद झांकने नहीं आए है।

लगातार हो रही बारिश से सब्जी और धान की फसलें नष्ट होने की कगार पर, किसान मायूस

नसीम अहमद

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया है। किसान मायूस हो चुके हैं। क्योंकि हाल ही में रोपी गई धान की फसल पानी में डूब जाने के कारण नष्ट होने की कगार पर है। वहीं, सब्जी की फसलें तो लगभग नष्ट हो चुकी है। किसानों का कहना है कि खेतों में अधिक जलजमाव के कारण पौधों की जड़े और तना तेजी से सड़ गल रहे और उसमें फफूंद और कीट जनित बीमारियां फैल रही है। पैका पंचायत के किसान जयराम महतो का कहना है कि अत्यधिक बारिश की वजह से धान का खेत जलमग्न हो चुका है। सब्जी की फसलों में लगा फूल फल सड़-गल कर तकरीबन नष्ट हो गया है। इससे किसानों को काफी आर्थिक नुकसान हुआ है। बारिश का सबसे अधिक असर सब्जी की फसलों पर पड़ा है। जिस कारण बाजार में सब्जी की कीमतें आसमान छू रही हैं। किसानों ने आशंका जताई है कि अगर अगले दो चार दिन तक इसी तरह बारिश होती रही, तो धान और सब्जी की फसलों को बचाना नामुमकिन होगा। किसानों का कहना है कि लगातार हो रही बारिश ने उनकी महीनों की मेहनत को मिट्टी में मिला दिया। इस बार कर्ज उतारना तो दूर, घर का खर्च चलाना भी मुश्किल होगा। वहीं, रामकृष्ण मिशन दिव्यायन कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि वैज्ञानिक डॉ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि 24 घंटे जलजमाव की स्थिति में धान के छोटे पौधों की सड़ने की संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा जलभराव से पौधों का पीला पड़ना, जड़ों का सड़ना, कीट रोग का प्रकोप तथा उत्पादन में कमी जैसी समस्याएं भी सामने आती हैं। ऐसे में किसानों को चाहिए कि वे किसी तरह खेतों से अतिरिक्त पानी निकासी की व्यवस्था करें और रोग नियंत्रण के लिए आवश्यक दवाओं का प्रयोग करें।

रातू पिर्रा में प्रबुद्ध नागरिक मंच की बैठक, कमेटी गठन का लिया निर्णय

रातू (आजाद सिपाही)। प्रखंड के पिर्रा में रविवार को प्रबुद्ध नागरिक मंच की बैठक हुई। रामधीर तिवारी के आवासीय परिसर में आयोजित बैठक की अध्यक्षता महावीर विश्वकर्मा ने की। जिसमें क्षेत्र के विकास एवं विभिन्न समस्याओं के निराकरण को लेकर चर्चा की गयी। इस दौरान लोगों ने सर्वसम्मति से सर्वप्रथम सदस्यता निबंधन करने एवं सदस्यता शुल्क 100 रुपया रखने, किसी भी तरह के जाति धर्म और भेदभाव जैसे पोस्ट नहीं करने, विकास के मुद्दों को उठाकर उसका निराकरण करने, प्रखंड के हर पंचायत से लोगों को प्रबुद्ध नागरिक मंच से जोड़ने एवं एक-दो और बैठक के बाद मंच का गठन करने का निर्णय लिया गया। इसके बाद शुक्रवार को हुई सड़क दुर्घटना में रातू काठीटांड निवासी अजय साव की आकस्मित निधन पर मौन धारण कर शोक व्यक्त किया गया।

हड्डी और मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ 30 को गुमला में

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड के सुप्रसिद्ध नस हड्डी और मस्तिष्क विशेषज्ञ डॉ अनिल कुमार 30 अगस्त दिन शनिवार को गुमला में रहेंगे। वे पालकोट रोड स्थित निलेश मेडिकल हॉल में प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोगियों की जांच करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए निलेश मेडिकल हॉल के संचालक दिलीप निलेश ने बताया कि ससमय पहुंच कर रोगी डॉ अनिल से मिल कर रोग संबंधी परामर्श ले सकते हैं।

चोरी मामले का अप्राथमिकी अभियुक्त धराया

डुमरी (आजाद सिपाही)। रविवार को डुमरी थाना कांड संख्या 32/25 दिनांक 10-08-25, धारा 305 बीएनएस के अप्राथमिकी अभियुक्त राजू कुम्हार उम्र 23 वर्ष, वर्तमान पता हुताप, थाना डुमरी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया। साथ ही कांड में चोरी किये गये पैसा, ज्वैलरी एवं मोबाइल को अभियुक्त के निशांदेही पर बरामद किया गया है। चोरी की घटना 10 अगस्त को दिन मे हुआ था जब वदिनी अपने परिवार के साथ धान की रोपाई करने खेत गयी थी।

जिला स्तरीय प्रोसेस लैब का समापन

गुमला (आजाद सिपाही)। उपायुक्त गुमला के निर्देशानुसार आदि कर्मयोगी अभियान के तहत जिला स्तरीय प्रोसेस लैब का रविवार को सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह आवासीय कार्यक्रम 22 अगस्त से 24 अगस्त 2025 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिले के सभी प्रखंडों से लगभग 70 प्रखंड स्तरीय मास्टर ट्रेनर तथा विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान अभियान की बारीकियों एवं क्रियान्वयन की विधियों की जानकारी जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनरों द्वारा दी गयी। समापन समारोह में जिला कल्याण पदाधिकारी आलोक रंजन उपस्थित रहे और उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए अभियान के उद्देश्यों को धरातल पर सफलतापूर्वक लागू करने का आह्वान किया।

विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड कार्यालय सभागार में रविवार को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं झारखंड राज्य विधि सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विधिक सेवा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे परिसंपत्तियों का भी वितरण किया गया जिसमें लक्ष्मी आजिविका सखी मंडल कटिम्बा को छह लाख, अनमोल सखी मंडल बुमतेल को एक लाख, तिरंगा सखी मंडल गोबिंदपुर को छह लाख, जूही सखी मंडल गोबिन्दपुर को छह लाख साथ ही बृद्धा पेंशन, जॉब कार्ड, साड़ी धोती आदि का भी लाभुकों के बीच वितरण किया गया। वहीं मौके पर उपस्थित देवेन्द्रनाथ ओहदार एलएडीसी ने संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण का मुख्य उदेश्य समाज के कमजोर वर्गो को निःशुल्क न्यायिक सेवाएं प्रदान करना। लोगों को उनके कानूनी अधिकारों और कर्तब्यों के बारे मे जागरूक करना। विवादो के निपटान के लिए समय ,समय पर लोक अदालत का भी आयोजन किया जाता है जिसमे आकर अपने विवादो का निपटान किया जाता है। मौके पर जितेंद्र कुमार सिंह प्रमुख उर्मिला केरकेट्टा, मुखिया चाजरेण मिंज, एएसआइ रमेश महतो, पीएलवी दीपक कुमार पीएलवी दीपक एक्का पीएलवी मधुवती देवी, प्रदीप लकड़ा, चांदनी कुमारी, सीमा कुमारी, नागेन्द्र उरांव, विकास कुमार, सुबोध कुमार, गीता कुमारी, आशा कुमारी, बाबूलाल कुमार आदि उपस्थित थे।

बिशुनपुर में भालू ने महिला पर किया हमला

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के डीपाडीह करम टोली गांव में एक जंगली भालू ने 41 वर्षीय महिला विनीता उराइन पर हमला कर दिया। महिला अपने अन्य साथियों के साथ गांव से सटे जंगल में पत्ता तोड़ने गई थी, तभी अचानक भालू ने उस पर हमला कर दिया। हमले में विनीता के दाहिने हाथ की तीन अंगुलियों में गंभीर चोट आयी है। परिजनों ने विनीता को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी स्थिति बेहतर बतायी है। इधर फॉरेस्टर शेखर सिंह ने ग्रामीणों से अपील की है कि जंगल की ओर न जायें और भालू से छेड़छाड़ न करें। उन्होंने कहा कि गांव में ही सुरक्षित रहना बेहतर होगा। इस घटना से गांव में दहशत का माहौल है।

संत मोनिका का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड के जरमाना पारिश मे संत मोनिका का पर्व रंगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम के बीच हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पल्ली मे सबसे पहले सुबह मिस्सा अनुष्ठान का किया गया। मिस्सा अनुष्ठान का मुख्य अधिष्ठाता फादर निरंजन एक्का सहयोगी के रूप मे फादर लौरेन्स टोप्पो फादर सिप्रियानुस कुल्लू ने मिस्सा रस्म निभाया। जरमाना पल्ली के मुख्य अधिष्ठाता फादर निरंजन एक्का ने कहा कि संत मोनिका महान माता में से एक थी उन्होंने कहा कि माता को पांच आदर्श गुण यथा धीरज दया ममता सेवा त्याग को आत्म साथ करने की जरूरत है तभी महिलाएं सफल माता बन सकती है जीवन में कुछ करने के लिए संत मोनिका की जीवनी से सीख लेने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने संदेश मे कहा कि महिलाएं संत मोनिका को अपना आदर्श मानते हुए उनके मार्ग पर चलें ततपश्चात पारिश क्षेत्र के सभी गाँवों के महिलाओं के द्वारा विभिन्न आकर्षक सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे महिलाओं के द्वारा एक से एक बढ़कर सास्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया। जिससे दर्शक देखकर मन्त्रमुग्ध हुए। मौके सैकड़ो की संख्या मे खीस्तीय विश्वासी उपस्थित थे।

दो दिनों के बारिश से कोयल नदी में उफान

गुमला (आजाद सिपाही)। जिले में लगातार दो दिनों से झमाझम बारिश हो रही है। बारिश से नदियों का जलस्तर काफी बढ़ गया है। कोयल नदी का जलस्तर बढ़ने से नागफेनी नदी के पुल तक पानी आ गया है पानी का तेज बहाव हो रहा है नजारा काफी खूबसूरत के साथ-साथ डरावना भी है। इस नजारे को देखने के लिए राहगीर रुक भी रहे हैं साथ ही सेल्फी ले रहे हैं प्रशासन ने लोगों को सतर्क रहने के निर्देश दिये हैं। वहीं नदी का पानी सडक तक पहुंच गया है। खेत पूरी तरह से जलमग्न हो गये हैं कई किसानों के घर गिर गये हैं। भारी-बारिश से जनजीवन पूरी तरह से अस्त व्यस्त हो गया है लोग घरों पर दुबके हुए हैं। इधर नागफेनी नदी के अंबा घाघ का दृश्य काफी मनोरम दिख रहा है। तेज लहरों के साथ नदी उफान पर है।

भारी बारिश से जैरा पुल ध्वस्त

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला/ सिसई। लगातार हो रही बारिश के कारण डाड़हा छारदा रोड स्थित जैरा पुल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। जिससे कई गांवों का संपर्क प्रखंड मुख्यालय से टूट गया है। इस मामले में विधायक प्रतिनिधि प्रकाश उरांव ने जानकारी देते हुए बताया कि सिसई थाना क्षेत्र के डाढ़ा से छारदा जाने वाले सड़क पर स्थित पुल भारी बारिश के कारण टूट गया। शनिवार की दोपहर 3 के आसपास इस पुल टूट जाने के कारण उस सड़क से संबद्ध कई गांव का संपर्क पूरी तरह से टूट गया। हालांकि बताया यह भी जा रहा है कि पुल पहले से ही टूटा हुआ था। जिसके कारण इस पुल से कोई भी चार पहिया वाहन पिछले कई महीनों से नहीं गुजर रहे थे। लेकिन इस पुल का उपयोग लोग पैदल अथवा साइकिल के द्वारा आवागमन के लिए कर रहे थे। विशेष कर ग्रामीणों के पास दो पहिया वाहन होता है जिस कारण पुल के हलके क्षतिग्रस्त हो जाने के बावजूद पुल की उपयोगिता कम नहीं हुई थी। उस?? पुल का प्रयोग ग्रामीण लगातार करते थे।लेकिन अब भारी बारिश के कारण पुल बुरी तरह से टूट चुका है। इस कारण अब पैदल भी आवागमन संभव नहीं है। इस पुल के टूट जाने से सिसई के उत्तरी भाग के बुडका, छरदा, मांगलो, भूरसो, बोंडो, भरनो उत्तरी के अमालिया, अताकोरा, बरन्दा, मालगो, आदि गाँवो के लोग प्रभावित हो रहे हैं। हालांकि इसी नदी इस पुल के डेढ़ किमी दूर स्थित कूदरा बुडका पुल, और बांस टोली सिसई के समीप स्थित पुल अभी सही सलामत है। जिससे अभी आवागमन जारी है। इन दो पुलों के कारण आज दर्जनों गांव टापू होने से बच गये।

विधायक प्रतिनिधि प्रकाश उरांव ने इस स्थान पर नये पुल निर्माण करने की मांग की है।

दादी प्रकाशमणि की पुण्य स्मृति पर रक्तदान शिविर का आयोजन

लोगों ने बढ़-चढ़ कर किया रक्तदान

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि एवं रक्तदान कार्यक्रम का आयोजन शिव दर्शन भवन, गुमला के सभागार में किया गया। इस अवसर पर संस्थान से जुड़े भाई-बहनों एवं स्थानीय नागरिकों ने दादी जी के महान योगदान को स्मरण करते हुए उनके बताये आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि का यह पुण्य स्मृति दिवस विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी उपलक्ष्य में भारत और नेपाल में एक विशाल रक्तदान महाभियान चलाया गया, जिसमें एक लाख यूनिट रक्त संचित करने का लक्ष्य रखा गया। इसके अंतर्गत रविवार को गुमला में भी संस्थान से जुड़े सदस्यों समेत एनसीसी के कैडेट एवं उनके अधिकारियों ने रक्तदान कर इस अभियान को सफल बनाया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लेफ्टिनेंट कर्नल (सीसी गुमला) पीबी शर्मा उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन त्याग, सेवा और समर्पण का आदर्श रहा है। उनके मार्गदर्शन से समाज में आध्यात्मिक जागरण और भाईचारे की भावना प्रबल हुई है। इस अवसर पर गुमला थाना अधीक्षक महेंद्र कमार्ली, सदर अस्पताल ब्लड बैंक प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील राम एवं टेक्नीशियन मारवाड़ी वामन की विशेष उपस्थिति रही। रक्तदान शिविर में सुमित अग्रवाल, रोहित खंडेलवाल, संजय अग्रवाल सहित अनेक दानवीरों ने सक्रिय सहयोग दिया। राजयोगिनी शांति दीदी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि दादी प्रकाशमणि जी का जीवन मानवता के लिए अनुपम प्रेरणा है। उन्होंने सेवा, त्याग और निस्वार्थ भाव से विश्व भाईचारे का जो संदेश दिया, वही आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे सकारात्मक सोच, नशामुक्त जीवन और आत्मिक शक्ति से समाज को नयी दिशा दें। कार्यक्रम का समापन श्रद्धांजलि सभा के साथ हुआ, जिसमें ब्रह्माकुमारी संस्थान के वरिष्ठ बीके बहनों व भाइयों ने दादी प्रकाशमणि जी की स्मृतियों को नमन करते हुए सभी को प्रेरक संदेश दिए।

आम जनता को अपने अधिकारों को जानना जरूरी : ओम प्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। घाघरा ब्लॉक परिसर सभागार में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय गुमला ओम प्रकाश मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। वही अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। शिविर में एडवोकेट शारदा पांडे और अवनीत पांडेय द्वारा लोगों को कानूनी अधिकारों, मुफ्त विधिक सहायता, लोक अदालत की उपयोगिता, डायन बिसाही, महिला एवं बच्चों से जुड़े अधिकार, घरेलू हिंसा अधिनियम, बाल विवाह निषेध कानून, नशामुक्ति अभियान व वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के दौरान पात्र लाभुकों के बीच सरकारी योजनाओं से जुड़ी पेंशन, धोती साड़ी, ट्राइसाइकिल, साइकिल, सावित्रीबाइ फुले समृद्धि योजना, आवास संबंधित कई परिसंपत्तियों का वितरण भी किया गया। कई बच्चों का अन्नप्राशन भी कराया गया। इससे लाभुकों में खुशी का माहौल देखा गया। मौके पर प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय गुमला ओम प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि आम जनता को अपने अधिकारों की जानकारी होना बेहद जरूरी है ताकि वे अन्याय व शोषण के खिलाफ आवाज उठा सकें।

साथ ही यह भी कहा कि विधिक सेवा प्राधिकार का मुख्य उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाना है। कोई भी गरीब, असहाय व्यक्ति अपने अधिकार से वंचित न रहे, यही इस तरह के शिविरों का उद्देश्य है। वही शिविर में प्रखंड विकास पदाधिकारी दिनेश कुमार, पशुपालन पदाधिकारी डॉक्टर सीमा एक्का, बीपीओ पुष्पा टोप्पो, बीपीआरओ शंकर साहू सहित सामाजिक कार्यकर्ता, पदाधिकारी कर्मी और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

गुमला में 196 लाभुकों के बीच 30 करोड़ की परिसंपत्ति का वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। डालसा गुमला के द्वारा जिले के सभी 12 प्रखंड कार्यालयों में विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रखंडों में न्यायिक पदाधिकारी, एलएडीसी, पैनल लॉयर, पीएलबी उपस्थित रहे। जिले के सभी प्रखंडों में कुल 22 हजार लाभुकों के बीच कुल 29 करोड़ 61 लाख 43 हजार की परिसंपत्तियों की वितरण की गयी। गुमला प्रखंड कार्यालय में आयोजित शिविर का उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश धुव्रचंद मिश्र, पुलिस अधीक्षक हरीश बिन जमां, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार राम कुमार लाल गुप्ता, अपर सम्हर्ता सचिंद्र बडाईक, अनुमंडल पदाधिकारी राजीव नीरज, शंभू सिंह सदस्य स्थायी लोक अदालत गुमला, प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक चोपड़ा, अंचल अधिकारी हरीश कुमार ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर उपस्थित मुख्य अतिथि प्रधान न्यायाधीश ध्रुव चंद्र मिश्र ने कहा कि डालसा द्वारा आयोजित इस सशक्तिकरण का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है और समाज में फैली कुरीतियों को रोकना है। उन्होंने आगे कहा की जानकारी के आभाव में गरीब एवं ग्रामीण इलाके के लोग सरकारी योजना का लाभ लेने से पीछे रह जाते हैं, ऐसे में नालसा एवं झालसा के निर्देश पर डालसा के द्वारा जागरूकता शिविर का आयोजन कर समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी लाभ की जानकारी देना सुनिश्चित कराया जाता है तथा उन्हें विधिक सहायता की भी जानकारी दी जाती है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि समाज का उत्थान तभी हो सकता है जब हम सजग हो हमें कानून एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी हो तभी हम उसका लाभ ले सकते हैं। डालसा के द्वारा प्रचार प्रसार के माध्यम से लोगों तक कानूनी जानकारी और सरकारी योजनाओं की जानकारी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाया जा रहा है तथा पीड़ित व्यक्तियों को मुआवजा भी प्रदान किया जाता है। आगे उन्होंने कहा कि आप लोग सभी हेलमेट का प्रयोग करें और सुरक्षित रहें। इस अवसर पर किसान क्रेडिट कार्ड, आवास योजना का स्वीकृत पत्र, जॉब कार्ड, पेंशन स्वीकृति पत्र, जॉब कार्ड, आदि का वितरण किया गया।

28 को कांग्रेस के झारखंड प्रभारी का गुमला आगमन

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू का राज्य में पांच दिवसीय दौरा आगामी 26 अगस्त से लेकर 31 अगस्त तक होगा। इस बीच झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू का 28 अगस्त को गुमला में होंगे। इस दौरान वे सिसई और भरनो प्रखंड में पार्टी के जिला स्तरीय पदाधिकारियों, अग्रणी मोर्चा संगठन के सभी जिला अध्यक्ष, सभी प्रखंडों के अध्यछ, सभी पंचायतो के पंचायत अध्यछ व सिसई प्रखण्ड के 18 पंचायतो के कार्यकारिणी सदस्यों व अग्रणी मोर्चा के प्रखण्ड अध्यछ के साथ बैठक कर उनसे सीधा संवाद करते हुए कई दिशा निर्देश देंगे। इसकी जानकारी देते हुए जिला अध्यछ चैतू उरांव ने बताया कि पदाधिकारियों के साथ पहला संवाद कार्यक्रम दिन के दस बजे से सिसई क्षेत्र में संवाद एक बजे तक चलेगा। इसके बाद डेढ़ से ढाई बजे तक उतरी भरनो में व ढाई से करीब 4 बजे तक तुरियाम्बा में होगा। तुरियम्बा व उतरी भरनो में आयोजित संवाद में पंचायत कमिटी के लोग शामिल होंगे।

गुमला में स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र खुला

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र का उद्घाटन 24 अगस्त, रविवार को गोकुल नगर नियर बैंक ऑफ इंडिया जयपुर रोड गुमला में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि योग परिवार के अध्यक्ष लायंस क्लब के रीजन चेयरपर्सन अशोक कुमार जायसवाल और योग परिवार के कोषाध्यक्ष लायंस क्लब के जॉन चेयरपर्सन एमजेएफ शंकर लाल जाजोदिया उपस्थित थे। दोनों मुख्य अतिथियों ने मौके पर कहा कि स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र गुमला के लोगों के लिए एक वरदान साबित होगा। यह प्रतिष्ठान सभी प्रकार की जांच से युक्त है और यहां पर उचित दर पर जांच की जायेगी। उन्होंने संचालक वीरेंद्र शाह को शुभकामनाएं दी और उनका हौसला बढ़ाया। इस अवसर पर संचालक के पिता योग शिक्षक संजय कुमार, माताजी प्रेमा देवी, शशि किरण जयसवाल, संजय सिंह, विशाल कुमार बिद्धू, कृष्णा सोनी, रविंद्र कौर, जय श्री बढ़ाइक अशोक गोयल, भगत आदि अनेक लोग उपस्थित थे। सभी ने प्रतिष्ठान के संचालक को शुभकामनाएं संदेश दिया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र के संचालक वीरेंद्र शाह ने सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि वह अपने प्रतिष्ठान में उच्च गुणवत्ता वाली जांच सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य गुमला के लोगों को उनके दरवाजे पर ही विश्वसनीय और सटीक जांच सेवाएं प्रदान करना है। उद्घाटन समारोह के दौरान, मुख्य अतिथियों ने स्वस्तिक डायग्नोस्टिक केंद्र की सुविधाओं का अवलोकन किया। मौके पर संजय कुमार साहू, प्रभा देवी, वीरेन साहू, अभिषेक कुमार, अशोक जायसवाल, किरण जायसवाल, शंकर लाल जाजोदिया विशाल कुमार बिद्धू, संजय सिंह, लाल बाबू, उमा शंकर सिंह, हरी, कृष्णा सोनी, रोहित, जैकांत राय, अनीता सिंह, मंजू गोयल, सूदन सिंह, मुन्ना जी, पारस साहू, राजू श्रीवास्तव, कोमल कुमारी मीणा देवी, कौसौलेन्द्र जमुआर, वीणा देवी, किशोर गोयल समेत क्षेत्र के कई लोग मौजूद रहे।

मिट्टी का घर गिरा छह बकरियों की मौत

सिसई/ भरनो (आजाद सिपाही)। गुमला जिला में तीन दिनों से लगातार हो रही बारिश से किसानों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं मिट्टी के घर भी भरभराकर कर गिर रहे हैं। गुमला जिला के भरनो प्रखंड अंतर्गत सुपा टू गांव निवासी रमेश राम पिता स्वर्गीय देवचरण राम का रविवार के अहले सुबह 3 बजे के लगभग मिट्टी का घर गिर गया जिससे घर में रखे पांच खस्सी और दो बकरी की मिट्टी में दबने से मौत हो गई है। जिससे किसान को लगभग 70 हजार रुपए का भारी नुकसान हुआ है। पीड़ित किसान ने बताया कि दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद सभी बकरियों को बाहर निकाला गया। पीड़ित किसान ने प्रखंड प्रशासन और पशुपालन विभाग से मुआवजे की मांग की है।

विधिक जागरूकता शिविर में परिसंपत्तियों का वितरण

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड कार्यालय सभागार में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे गुमला के जिला अपर सत्र न्यायाधीश संजीव भाटिया थे। कार्यक्रम की शुरूआत न्यायाधीश संजीव भाटिया, बीडीओ सुलेमान मुंडरी, सीओ शेखर वर्मा पर्यवेक्षिका शकुंतला कुमारी, एडवोकेट ओम प्रकाश ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इससे पूर्व प्रखंड प्रशासन ने न्यायाधीश को बुक्के देकर सम्मानित किया। इस शिविर में विभिन्न लाभुकों को कई योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया। जिनमें 5 जॉब कार्ड, जेएसएलपीएस की महिला समूहों के बीच 45 लाख रुपये का ऋण, 9 दिव्यांग व्यक्तियों को ट्राई साइकिल और अन्य सामग्री, 50 राशन कार्डधारियों को धोती साड़ी, 28 लाभुकों को पेंशन स्वीकृति प्रपत्र और 100 छात्रों को साइकिल का वितरण शामिल है। इसके अलावा, 5 किसानों को एक-एक लाख रुपये का केसीसी ऋण और 25 किसानों को मृदा कार्ड वितरित किया गया। शिविर में जन्म प्रमाण पत्र का भी वितरण किया गया, जिससे ग्रामीणों को अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने में मदद मिली। शिविर के माध्यम से ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया गया। न्यायाधीश विधिक सेवा प्राधिकार ने कहा कि इस तरह के शिविरों का उद्देश्य ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

सुरक्षा, रोजगार, लोन माफी और पूंजी के लिए नारी जागरूकता अभियान शुरू

गुमला (आजाद सिपाही)। झारखंड नवनिर्माण दल से जुड़ी महिला मंडल सहयोग संचालन समिति- गुमला प्रखंड के तत्वाधान में गुमला कचहरी में जुटकर भीख नहीं अधिकार चाहिए, सुरक्षा सम्मान रोजगार अनुदान लोन माफी और व्यवसाय के लिए पूंजी चाहिए, नशाखोरी पर अविलंब रोक लगाओ, जैसे आक्रोषपूर्ण नारे के साथ भारी बारिश के बावजूद पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत नारी जागरूकता अभियान सीता उरांव की अध्यक्षता में शुरू की गयी। अभियान शुरू करने आये ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट के प्रभारी सह झारखंड नवनिर्माण दल के केंद्रीय संयोजक विजय सिंह ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार महिलाओं को सुरक्षा व रोजगार देने में विफल साबित हो रही है। यही कारण है कि गुमला के सिसई में छात्रा की अपहरण के बाद बलात्कार हो जाता है। वहीं सरकार की लापरवाही के कारण लगातार झारखंड में बलात्कार, हत्या जैसी घटना आम हो गयी है जो भारी चिंता का विषय है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। श्री सिंह ने मोदी शासन के इन 10 वर्षों में पूंजीपतियों के 14 लाख करोड़ रुपए लोन माफी का जिक्र करते हुए कहा कि महिलाओं को लोन में फंसा कर माइक्रोफाइनेंस कंपनी द्वारा झारखंड में महाजनी व सूदखोरी का काम कर रही है जिससे अविलंब बंद करने की मांग राज्य सरकार से की है। कहा कि अनुबंध पर कार्यरत सभी कर्मियों को न्याय देने तथा जिले में बढ़ते महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ 7 सितंबर को विशाल धरना कार्यक्रम आयोजित की जायेगी।

आजाद सिपाही
रांची, सोमवार, 25 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

शिकंजा : बैंक वालों की मिलीभगत से संचालित हो रहा साइबर अपराध

बंधन बैंक के पांच सीनियर अधिकारी गिरफ्तार

सरायढेला शाखा के सेल्स मैनेजर और जामताड़ा-हजारीबाग के मैनेजर भी शामिल

- कड़े दिशा-निर्देशो के बावजूद कुछ कर्मचारियों ने नियमों का उल्लंघन किया : धनबाद बंधन बैंक के जीएम

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। बैंक में पैसा रखकर उसे सुरक्षित समझना अब लोगों पर भारी पड़ने लगा है। सुरक्षित तरीके से अपने मोबाइल या लैपटॉप से नेट बैंकिंग के जरिए पैसे के लेनदेन करने और बैंक की गोपनीयता को सुरक्षित समझने वालों को थोड़ा सतर्क होने की जरूरत है। क्योंकि हो सकता है आपके पैसे जिस बैंक में हैं वहां के बैंक कर्मचारी या अधिकारी की नजर उस पर है और आपका डाटा चोरी कर साइबर अपराधी तक पहुंचा दिए जा रहे हैं। यह खुलासा उस समय हुआ जब पश्चिम बंगाल साइबर अपराध शाखा ने करोड़ों रुपये की साइबर धोखाधड़ी के मामले में बंधन बैंक के पांच वरिष्ठ अधिकारियों को गिरफ्तार किया है। इनमें धनबाद की सरायढेला शाखा के सेल्स मैनेजर सौरभ कुमार भी शामिल हैं। इन अधिकारियों पर ग्राहकों की गोपनीय जानकारी, रकम की लेन देन से संबंधित डेटा साइबर अपराधियों को बेचने का आरोप है। इसके चलते 2.5 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई। दरअसल, बंगाल की साइबर क्राइम शाखा 2.5 करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी की जांच कर रही थी। इस दौरान, अधिकारियों ने पाया कि बैंक के कुछ कर्मचारी सीधे तौर पर इस जालसाजी में शामिल थे। गिरफ्तार अधिकारियों में झारखंड के हजारीबाग और जामताड़ा शाखाओं के मुख्य जोखिम अधिकारी (सीआरओ) के साथ ही कोलकाता के मटियाब्रुज शाखा के सीआरओ और सेल्स मैनेजर भी शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक ये अधिकारी कोर बैंकिंग सिस्टम और अन्य तरीकों से ग्राहकों की संवेदनशील जानकारी, जैसे कि केवाईसी डिटेल और अकाउंट नंबर इकट्ठा करते थे। जिसे बाद में साइबर अपराधियों को बेचते थे। वो ग्राहकों को फोन, एसएमएस या व्हाट्सएप के जरिए संपर्क कर उनसे और जानकारी भी निकलवाते थे। उन्हें आकर्षक फिक्स्ड डिपाजिट या बीमा योजनाओं का लालच देते थे। बंधन बैंक की कोलकाता मुख्य शाखा की ओर से मामले में विद्याननगर थाने में शिकायत की गई थी।

-2.5 करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी की जांच में अधिकारियों की संलिप्तता के बारे में पता चला
- कोर बैंकिंग सिस्टम एवं ग्राहकों से गुप्त जानकारी इकट्ठा कर साइबर अपराधियों को बेचने का है आरोप
- 23 जुलाई को बंधन बैंक की ओर से कोलकाता के बिधाननगर थाने में साइबर धोखाधड़ी की दर्ज कराई गयी थी शिकायत

प्रतिकात्मक तस्वीर।

बैंक कर्मचारियों ने किया नियमों का उल्लंघन

धनबाद के बंधन बैंक के जीएम राकेश कुमार ने बताया कि उनके कड़े दिशा-निर्देशो के बावजूद, कुछ कर्मचारियों ने नियमों का उल्लंघन किया, इसका नतीजा यह गिरफ्तारी है। बताया कि सेल्स आफिसर सौरभ की गिरफ्तारी के बाद पुलिस उसे पूछताछ के लिए कोलकाता ले गई है। फिलहाल सभी गिरफ्तार बैंक अधिकारियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस इनसे यह पता लगाने कोशिश कर रही है कि अब तक कितने बैंक ग्राहकों के डेटा बेचे गए हैं। यह सिंडिकेट किन-किन राज्यों में चल रही है और इस अनोखे गोरखधंधे में और कितने लोग किस राज्य में शामिल है। संभावना व्यक्ति की जा रही कि जल्द ही पुलिस बड़ा खुलासा करेगी।

शिक्षा के साथ ही मानवीय मूल्यों का समावेश जरूरीः राजश्री बनर्जी

- डीपीएस बोकारो में झारखंड, बंगाल और ओडिशा के 144 विद्यार्थी हुए पुरस्कृत
- शैक्षिक उपलब्धियों एवं गणितीय मेधाविता के लिए दिया गया सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में बच्चों की प्रतिभा एवं मेधाविता को एक बार फिर सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया। विद्यालय में आयोजित उत्कृष्टता सम्मान समारोह के दौरान शैक्षिक उपलब्धियों एवं गणितीय मेधाविता के लिए तीन राज्यों के कुल 144 छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। इनमें कक्षा 5 से 6 में आए 87 विद्यार्थियों को सत्र 2024-25 में उत्कृष्ट परिणाम के लिए अचीवर्स बैज एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। वहीं, डीपीएस बोकारो की ओर से विगत 36 वर्षों से आयोजित की जा रही आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता (एएमसी) के विद्यालयवार एवं ओवरऑल 57 विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। इनमें झारखंड सहित पश्चिम बंगाल और ओडिशा के प्रतिभागी भी शामिल रहे। विभिन्न प्रांतों की इस प्रतियोगिता में कुल 1800 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में डीपीएस बोकारो विद्यालय प्रबंधन समिति की प्रो-वाइस चेयरमैन एवं बोकारो स्टील प्लांट की अधिशासी निदेशक (मानव संसाधन) राजश्री बनर्जी उपस्थित रहीं, जिन्होंने विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए उनकी हौसला-अफजाई की। अपने संबोधन में उन्होंने शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश पर बल देते हुए उपस्थित विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित किया। बच्चों को समाज का भावी स्तंभ बताते हुए कहा कि विद्यार्थी-जीवन से ही कामयाबी और उपलब्धि के पीछे की भागदौड़ में इंसान कहीं न कहीं अपने जीवन के आनंद को पीछे छोड़ देता है। सफलता जरूरी है, पर असफलता से घबराएं नहीं। हर समस्या का समाधान संभव है। जीवन में धैर्य एवं स्थिरता बनाए रखें और जीवन आनंद जरूर लें। उन्होंने डीपीएस बोकारो द्वारा वर्ष 1988 से लगातार आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता के आयोजन की सराहना करते हुए विद्यार्थियों की गणितीय क्षमता के विकास में मील का पत्थर बताया। आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए विद्यालय के प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनाएं दीं और उत्कृष्टता का यह क्रम आगे भी बरकरार रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने डीपीएस बोकारो की ओर से गणित में बच्चों की तार्किक क्षमता और उनके कौशल को परखने के लिए लगभग साढ़े तीन दशक से लगातार आयोजित की जा रही आर्यभट्ट गणित प्रतियोगिता के उद्देश्य व महत्व को भी रेखांकित किया। इसके पूर्व मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। इसी बीच प्राचार्य डॉ गंगवार ने मुख्य अतिथि राजश्री बनर्जी को स्मृति-चिह्न एवं शॉल भेंटकर सम्मानित भी किया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा अनुष्का, आलिया, आशु और शुभम ने किया। जबकि, धन्यवाद ज्ञापन हेड बॉय प्रिशु आनंद डे ने किया। इस अवसर पर तीन राज्यों से आए विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी, उनके शिक्षक एवं स्थानीय विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे।

वीर दत्ता ने जीता सिल्वर मेडल सिंदरी विधायक ने दी बधाई

झरिया/बलियापुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के आमटाल पंचायत निवासी एवं डीएवी कोयलानगर के छात्र वीर दत्ता ने प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए सिल्वर मेडल जीता है। वीर दत्ता, सिंदरी विधायक के मीडिया प्रभारी शीतल दत्ता के पुत्र हैं। धनबाद के अपर्णा पब्लिक स्कूल में आयोजित 5वें धनबाद जिला योगआसना स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2025-26 में हुए प्रतियोगिता में वीर दत्ता ने हैंड बैलेंस कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन कर दूसरा स्थान हासिल किया। इस उपलब्धि पर सिंदरी विधायक चंद्रदेव महतो ने वीर दत्ता को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। कहा कि वीर जैसे होनहार बच्चे क्षेत्र और राज्य का नाम रोशन कर रहे हैं। आने वाले समय में यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता प्राप्त करेंगे।

चौराहे-टी-मुहाना चौक पर ट्रैफिक पुलिस-सिग्नल बहाली की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

बिरनी/गिरिडीह। जिले के बिरनी प्रखंड क्षेत्र में होने वाले सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में इन दिनों वृद्धि हुई है। बतातें ज्ञात हो कि प्रखण्ड के चौक चौराहे व भीड़-भीड़ वाले इलाकों में सड़क यातायात नियमों के पालन में कमी देखी जा रही है। जिससे सड़क हादसे में काफी इजाफा हुआ है। इस समस्या का समाधान करने के लिए, चौराहे और टी-मुहाना चौक पर ट्रैफिक पुलिस और ट्रैफिक सिग्नल बहाल करना आवश्यक हो गया है।

बिना हेलमेट-लाइसेंस के गाड़ी चलाना खतरनाक

प्रखंड अंतर्गत दो पहिया वाहन चालकों में हेलमेट के उपयोग में भारी कमी देखी जा सकती है। जिससे सड़क दुर्घटनाओं में जान-माल की अधिक क्षति पहुंचती है। अक्सर लोग बिना लाइसेंस के चार पहिया वाहन लेकर भी सड़क पर उतर जाते हैं। जिससे घटना होने की संभवना बढ़ जाती है। लोगों का ट्रैफिक पुलिस और ट्रैफिक सिग्नल की मांग करते हुए कहना है कि भीड़-भाड़ इलाकों में ट्रैफिक पुलिस द्वारा गति नियंत्रण तथा सिग्नल होने से घटनाओं को टाला जा सकता है।

जागरूकता बढ़ाने को किया गया पौधे का निःशुल्क वितरण

झरिया/पाथरडीह (आजाद सिपाही)। ग्रीन धनबाद अभियान के तहत अधिक से अधिक पौधारोपण करने के लिए रविवार को लोगों को जागरूक करने के उद्देस्य से वार्ड 52 की पूर्व पार्षद एवं भाजपा धनबाद महानगर के जिला मंत्री प्रियंका देवी और भाजपा नेता उचित महतो के सौजन्य से गौर खूंटी, परघाबाद बस्ती, लोको बाजार, चासनाला मोड़, चासनाला सम्राट नगर आदि स्थानों पर निःशुल्क सैकड़ों फलदार पौधे बांटे गये। इस अभियान के तहत ट्रैक्टर में 1000 फलदार पेड़ लाद कर जगह-जगह निःशुल्क वितरित किया गया। इस अवसर पर प्रियंका देवी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण जरूरी हो गया है। बरसात में जिला प्रशासन एवं नगर निगम की ओर से पेड़ पौधे लगाना चाहिए। पर पेड़-पौधे लगाने में उनकी नकारात्मक सोच देखने को मिल रही है। उन्होंने कहा कि हम खुद पेड़ खरीद कर लगा रहे हैं। इस मानसून में हमने 10 हजार पौधे लगाने एवं लोगों को वितरण करने का संकल्प लिया है। इस मौके पर उचित महतो, शिबू गोराई, अजय दास, नागेंद्र सिंह, राजेश साव, मुकेश ओझा, अमर पाल, अभिषेक बाउरी, रॉकी साव, पंकज पासवान आदि मौजूद थे।

धनबाद जिला डेकोरेटर्स एसोसिएशन शाखा सम्मान समारोह का आयोजन

झरिया/जोरापोखर (आजाद सिपाही)। धनबाद जिला डेकोरेटर्स एसोसिएशन के जोरापोखर शाखा की ओर से आशीर्वाद लॉज में रविवार को सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर सत्र 2025-28 के लिए नवनिर्वाचित अध्यक्ष गौतम कुमार रंजन, सचिव राजेंद्र विग एवं कोषाध्यक्ष समिमुद्दीन को संगठन के सदस्यों ने फूल-माला पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अध्यक्ष गौतम कुमार रंजन ने कहा कि गरीब एवं जरूरतमंदों की सेवा करना ही हमारे लिए सच्चा सम्मान है। डेकोरेटर्स एसोसिएशन हमेशा समाज के हित और सहयोग में तत्पर रहेगा। वहीं, कोषाध्यक्ष शमिमुद्दीन ने कहा कि हमारा उद्देश्य लोगों की हर संभव मदद करना और संगठन को मजबूत बनाना है। सभी सदस्यों के सहयोग से जोरापोखर शाखा को जिला का नंबर वन शाखा बनाना हमारा संकल्प है। कार्यक्रम को सफल बनाने में रमेश पांडेय, बिश्वजीत चटर्जी, रफिक, मंटू दा, पिंटू राय, संतोष कुमार, मधु सेन, बबलू साव, हैदर, दिलीप गुप्ता, ताबीज, प्रवीण, अरविंद, अभिषेक, रोहित, बाबू दा, आकाश एवं नसीम आदि का सराहनीय योगदान रहा।

झरिया शहर के मकानों को एनक्रोंचर की श्रेणी में डालने की हो रही है साजिश : अनूप

- पूर्व मंत्री से मिला झरिया का प्रतिनिधिमंडल

आजाद सिपाही संवाददाता

झरिया। नागरिकों का प्रतिनिधि मंडल राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग के पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी से मुलाकात किया। इसमें पूर्व पार्षद अनूप कुमार साव, बलदेव महतो, रंजन साहू, राजू वर्मा और पिंटू बर्मन आदि शामिल थे। पूर्व पार्षद ने कहा कि झरिया अंचल के 58 मौजा में 10 मौजा का हाल सर्वे ऑनलाइन एंट्री नहीं होने के कारण झरिया के रैयतदार का रजिस्ट्री, दाखिल खारिज, पंजी 2, में नाम दर्ज नहीं हो रहा है। ऐसी आशंका है कि हम रैयतदारों को एंक्रोचर की श्रेणी में डालने के लिए बीसीसीएल एवं जेआरडीए साजिश रच रही है। आवेदन को उस समय के वर्तमान सचिव कमल किशोर सोन को अनुशंसा कर अग्रसरित किया था पर उसकी अधतन स्थिति क्या है! विभाग से संचिका निकलवा कर यह जानने एवं उसे अंजाम तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इस पर पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी ने कहा कि वे रांची जाकर विभाग में उक्त संचिका की वस्तु स्थिति देखकर अग्रेतर कार्रवाई के लिए प्रयास करेंगें।

सेंट्रल अस्पताल में घायल सीसील कर्मी का घंटों बाद इलाज शुरू करने का आरोप

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। ढोरी सेंट्रल अस्पताल में लापरवाही का मामला सामने आया है। घायल विजय कृष्ण कुमार नामक एएडीओसीएम अमलो परियोजना का मजदूर रविवार की दोपहर सीक फिट लेकर जाने के दौरान अपने आवास सुभाष नगर के निकट बाइक से गिरकर घायल हो गया। उसके पैर में गंभीर चोट लगी। पड़ोसियों ने घायल सीसीलकर्मी को लेकर सेंट्रल अस्पताल पहुंचाया। पर वहां कोई चिकित्सक नहीं था। पूर्व सांसद रवींद्र कुमार पांडेय के निजी सचिव मृत्युंजय कुमार पांडेय ने बताया कि उन्हें अस्पताल में फोन करना पड़ा। एक घंटे बाद डॉ अंकित गौरव पहुंचे और इलाज शुरू किया। दो घंटे में एक्स रे टेक्नीशियन पहुंचा तब घायल कर्मी का एक्स रे हुआ। तबतक मृत्युंजय पांडेय अस्पताल पहुंचे और उन्हें भर्ती कराया। फिर उन्होंने सीएमओ डॉ संजय कुमार सिन्हा को फोन कर लापरवाही की जानकारी देते हुए व्यवस्था में सुधार की बात कही।

भाकपा माले का सांगठनिक चुनाव शुरू अनिल सिंह बने वार्ड नंबर 53 के सचिव

झरिया/सिंदरी (आजाद सिपाही)। भाकपा माले का सांगठनिक चुनाव शुरू हो गया है। रविवार को आर्य समाज मंदिर गौशाला में हुए चुनाव में अनिल सिंह निर्विरोध सचिव चुने गए। चुनाव का संचालन अमर सिंह और सहदेव सिंह के नेतृत्व में हुआ। मौके पर धनबाद जिला समिति के सदस्य विमल कुमार भी मौजूद थे। चुनाव प्रक्रिया की निगरानी माले के राज्य समिति के सदस्य सुरेश प्रसाद ने किया। नगर सचिव राजीव मुखर्जी ने चुनाव परिणाम की घोषणा करते हुए बताया कि अनिल सिह वार्ड 53 से निर्विरोध सचिव निर्वाचित हुए और उनका कार्यकाल एक वर्ष के लिए होगा। वहीं, निर्वाचन मंडल ने तत्काल प्रभाव से अनिल सिंह को कार्यभार सौंप दिया। अनिल सिंह ने अपने चयन पर आभार व्यक्त किया और कहा कि बहुत शीघ्र ही संपूर्ण समिति का गठन किया जाएगा।

सीबीएसइ की दो-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन

शिक्षकों ने सीखे विद्यार्थियों में सीखने और समझने की क्षमता विकसित करने के गुण

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विद्यार्थियों में सीखने-समझने की क्षमता बढ़ाने और शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के उद्देश्य से सीबीएसई शिक्षकों को लगातार विशेष प्रशिक्षण मुहैया करा रही है। इसी कड़ी में दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में सीबीएसई (केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड) के पटना उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की ओर से विद्यालय के शिक्षकों के लिए दो-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई। मूल्यांकन एवं आकलन कार्यों के सुदृढ़ीकरण विषय पर आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन रविवार को हुआ। जिसमें बतौर रिसोर्स पर्सन स्थानीय चिन्मय विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं राष्ट्रीय स्तर के टीचर ट्रेनर गोपालचंद्र मुंशी और त्रिमूर्ति पब्लिक स्कूल के उपप्राचार्य अनिल कुमार मोदी मौजूद रहे। इस असर पर गोपालचंद्र मुंशी ने आकलन (असेसमेंट) की परिभाषा, इसकी महत्ता, अनिवार्यता और लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कहा कि आकलन एवं मूल्यांकन विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन की जांच का पैमाना है। विद्यार्थी और बेहतर तरीके से सीख एवं समझ सकें, इसके लिए आकलन की प्रक्रिया और सुदृढ़ एवं संवर्द्धित किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने इस संबंध में स्व-मूल्यांकन (सेल्फ असेसमेंट), आवधिक परीक्षा (पीरियोडिक टेस्ट), विषय-संवर्द्धन गतिविधियों सहित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। दूसरे रिसोर्स पर्सन एके मोदी ने भी कहा कि समय के अनुसार शिक्षा में बदलाव जरूरी है। इस दिशा में शिक्षकों की आकलन एवं मूल्यांकन क्षमता को और प्रभावशाली बनाए जाने की जरूरत है। कार्यशाला के दौरान निर्धारित विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, प्रश्नोत्तरी एवं अंतःक्रिया सत्र भी आयोजित किए गए। प्राचार्य डॉ एएस गंगवार ने इस प्रकार की कार्यशाला को शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने और विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ ही उनके समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण बताया। कहा कि डीपीएस बोकारो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन हेतु कटिबद्ध है। कार्यशाला में विद्यालय के वरीय उप प्राचार्य अंजनी भूषण सहित लगभग 60 शिक्षक-शिक्षिकाएं शामिल हुए।

कार्यशाला में उपस्थित रिसोर्स पर्सन एव डीपीएस बोकारो के शिक्षक।

किशोरी से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

धनसार/झरिया (आजाद सिपाही)। बोरागढ़ ओपी क्षेत्र में रविवार को 13 वर्षीय किशोरी से दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। इसकी शिकायत पीड़िता की मां ने बोरागढ़ ओपी में की है। साथ ही स्थानीय लोगों ने बोरागढ़ ओपी में जाकर आरोपी को पकड़ने की मांग की। उधर, बोरागढ़ पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कांड संख्या 228/25 धारा एस 65(1),बीएनएस और 4/8 पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। दूसरी ओर, पुलिस ने आरोपी आकाश कुमार राम (22) को उसके आवास भालगोरा से गिरफ्तार कर लिया है। बोरागढ़ पुलिस किशोरी का मेडिकल जांच कराने के बाद मामला दर्ज कर लिया और आकाश को जेल भेज दिया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि शनिवार की देर शाम आकाश उसे बहला फुसलाकर पास की झाड़ी में ले गया और जबरन उसके साथ कुकर्म किया। इस घटना के बाद पीड़िता ने इसकी शिकायत बोरागढ़ ओपी में की।

अनिल अंबानी का बैंक ऑफ इंडिया अकाउंट फ्रॉड घोषित

- रिलायंस कम्युनिकेशंस पर 700 करोड़ रुपये के गलत इस्तेमाल का आरोप, आधे पैसों की एफडी करायी

आजाद सिपाही संवाददाता

मुंबई। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बाद बैंक ऑफ इंडिया ने भी अनिल अंबानी की रिलायंस कम्युनिकेशंस के लोन खाते को फ्रॉड घोषित किया है। बैंक ऑफ इंडिया ने फाइलिंग में बताया है कि हमसे लिए फंड का गलत इस्तेमाल किया गया था। इसमें कंपनी के पूर्व निदेशक अनिल अंबानी का नाम भी शामिल है। ये लोन का मामला 2016 का है। बैंक का कहना है कि अनिल अंबानी और उनके कुछ पूर्व डायरेक्टर्स ने फंड्स को डायवर्ट यानी इधर-उधर कर दिया। इसलिए बैंक ऑफ इंडिया ने अनिल अंबानी का नाम भी इस फ्रॉड केस में लिया है। बैंक ऑफ इंडिया ने रिलायंस कम्युनिकेशंस को 700 करोड़ रुपये का कर्ज दिया था। इस मामले में रिलायंस कम्युनिकेशंस ने कहा कि उसे 22 अगस्त को बैंक ऑफ इंडिया से 8 अगस्त का एक लैटर मिला है। इसमें बैंक ने अनिल अंबानी (कंपनी के प्रमोटर और पूर्व निदेशक) और मंजरी अशोक कक्कड़ (कंपनी की पूर्व निदेशक) के लोन अकाउंट को फ्रॉड घोषित करने के बारे में बताया है।

सीबीआइ ने अनिल अंबानी के खिलाफ केस दर्ज किया इससे पहले कल यानी 23 अगस्त को सीबीआइ ने अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस के खिलाफ 2,929 करोड़ रुपये के बैंक फ्रॉड मामले में केस दर्ज किया था। सीबीआइ ने मुंबई में रिलायंस कम्युनिकेशन लिमिटेड के ऑफिस और अनिल अंबानी के घर पर शनिवार को छापेमारी भी की थी। यह फ्रॉड स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से जुड़ा है। लोन के गलत इस्तेमाल का आरोप कुछ दिन पहले स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने रिलायंस कम्युनिकेशंस और खुद अनिल अंबानी को 'फ्रॉड' घोषित किया था। एसबीआइ का कहना है कि रिलायंस कम्युनिकेशंस ने कई बैंकों से लिये गये 31,580 करोड़ रुपये के लोन का गलत इस्तेमाल किया।

बिहार में राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा का 8वां दिन

चिराग पासवान बड़े भाई, जल्द शादी करें: तेजस्वी

- राहुल गांधी बोले, यह मुझ पर भी लागू
- युवक ने सुरक्षा घेरा तोड़ कर राहुल को किस किया

आजाद सिपाही संवाददाता

पूर्णिया/अररिया। वोटर अधिकार यात्रा के 8वें दिन राहुल-तेजस्वी का काफिला अररिया पहुंचा। यहां मीडिया से बात करते हुए तेजस्वी यादव ने केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान को शादी करने की सलाह दी। चिराग को लेकर किये सवाल पर बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि वे एक व्यक्ति विशेष के हनुमान हैं। हम जनता के हनुमान हैं। चिराग पासवान आज कोई मुद्दा नहीं हैं। मैं उन्हें सलाह जरूर दूंगा, वह हमारे बड़े भाई हैं और उन्हें जल्द से जल्द शादी करनी चाहिये। इस बयान पर राहुल गांधी ने कहा कि यह बात मुझ पर भी लागू होती है।

राहुल गांधी ने दो किमी बाइक चलायी : इससे पहले रविवार सुबह यात्रा पूर्णिया से शुरू हुई, जहां राहुल गांधी ने बुलेट मोटरसाइकिल चलायी। इस दौरान उनके पीछे कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम बैठे दिखे। राहुल ने दो किमी तक बाइक चलायी। इस दौरान उनका एक समर्थक अचानक से सामने आ गया। राहुल कुछ समझ पाते, इससे पहले उसने राहुल किस किया। तब तक सिक्योरिटी गार्ड पहुंच गये और उन्होंने युवक को थप्पड़ जड़ दिया। वहीं तेजस्वी यादव दूसरी बुलेट पर नजर आये। उनके पीछे बॉडीगार्ड था। यात्रा में तेजस्वी यादव के साथ-साथ मुकेश सहनी, माले नेता दीपांकर भट्टाचार्य के साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी मौजूद हैं।

प्रियंका भी यात्रा में शामिल होंगी: पूर्णिया से अररिया जाने के दौरान जलालगढ़ ब्लॉक में राहुल गांधी ने ढाबे पर रुककर चाय पी। करीब 30 मिनट तक वो ढाबे पर रुके। ढाबे वाले से हालचाल भी पूछा। यहां से राहुल गांधी दिल्ली के लिए रवाना हो गये। सोमवार को यात्रा में एक दिन का ब्रेक होगा। 26 अगस्त को प्रियंका गांधी भी यात्रा में शामिल होंगी।

हवाई हमले नाकाम करनेवाले स्वदेशी सिस्टम का परीक्षण सफल

- दुश्मन के ड्रोन और मिसाइलें हवा में ही मार गिरायेगा
- सुदर्शन चक्र मिशन के तहत बनाया

आजाद सिपाही संवाददाता

चांदीपुर। भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) के बनाये स्वदेशी इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस वेपन सिस्टम (आइएडीडब्ल्यूएस) का पहला टेस्ट कामयाब रहा। इसका टेस्ट शनिवार को ओड़िशा के तट पर किया गया। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। उन्होंने लिखा कि इस परीक्षण ने हमारे देश की मल्टी लेयर एयर डिफेंस कैपेबिलिटी बढ़ायी है। यह सिस्टम दुश्मन के हवाई खतरों के खिलाफ रीजनल डिफेंस को मजबूती देगा। यह एक मल्टीलेयर एयर डिफेंस सिस्टम है, ये दुश्मन के हवाई हमले नाकाम करेगा। इसमें सभी स्वदेशी क्विक एक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल (क्यूआरएसएएम), एडवांस्ड वैरी शॉर्ट एयर डिफेंस सिस्टम मिसाइलें (वीएसएचओआरएडीएस) और हाइ पावर लेजर बेस्ड डायरेक्टेड एनर्जी वेपन (डीइडब्ल्यू) शामिल हैं। आइएडीडब्ल्यूएस को सुदर्शन चक्र मिशन का एक हिस्सा माना जा रहा है। यह स्वॉर्म (एक साथ छोड़े गये कई ड्रोन) ड्रोन अटैक के खिलाफ रक्षा कवच बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से दिये अपने भाषण में सुदर्शन चक्र मिशन की घोषणा की थी।

एक साथ 3 टारगेट मार गिराये : परीक्षण के दौरान इस सिस्टम ने दो हाई स्पीड फिक्स विंग अनमैन्ड ड्रोन, मल्टी कॉप्टर ड्रोन समेत तीन अलग-अलग टारगेट पर अटैक किया। ये तीनों टारगेट अलग-अलग दूरी और ऊंचाई पर थे। आइएडीडब्ल्यूएस ने इन तीनों को एक साथ निशाना बनाकर पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया। सिस्टम का कांसेप्ट इस तरह से तैयार किया गया है कि पहले रडार यूनिट आने वाले खतरों पर नजर रखती है और उन्हें क्लासिफाई करती है। इसके बाद कमांड सेंटर ज्यादा ऊंचाई से आने वाले तेज खतरों के लिए क्विक एक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल को निर्देश देता है। कम रेंज वाले और धीमी गति से होने वाले हमले के लिए एडवांस्ड वैरी शॉर्ट एयर डिफेंस सिस्टम मिसाइलें एक्टिवेट होती हैं। इसके साथ ही साथ ड्रोन और चीप सैचुरेटेड अटैक के लिए लेजर बेस्ड डायरेक्टेड एनर्जी वेपन हमला करते हैं।

अंतरिक्ष से वापसी के क्रू मॉड्यूल का टेस्ट सफल

भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान की तैयारी में बड़ी कामयाबी मिली है। इसरो ने रविवार को पहला इंटीग्रेटेड एयर ड्रॉप टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा किया। यह टेस्ट गगनयान मिशन के लिए तैयार किये गये पैराशूट सिस्टम की असली परिस्थितियों में जांच करने के लिए किया गया। इसका मकसद गगनयान मिशन से पहले पैराशूट खुलने के प्रोसेस को चैक करना था। ये प्रोसेस मिशन के समय अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षित वापसी तय करेगी। टेस्ट के दौरान लगभग 5 टन वजनी डमी क्रू कैप्सूल को वायुसेना के चिनूक हेलिकॉप्टर से 4 किमी की ऊंचाई से छोड़ा गया। पैराशूट ने नीचे आते समय तय प्रोसेस में खुलकर कैप्सूल की रफ्तार धीमी की और उसे सुरक्षित लैंडिंग के लिए तैयार किया। इस टेस्ट में इसरो, भारतीय वायुसेना, डीआरडीओ, भारतीय नौसेना, इंडियन कोस्ट गार्ड ने मिलकर काम किया।

जर्मनी से छह पनडुब्बियां खरीदेगा भारत

भारत सरकार वायुसेना और नौसेना की ताकत बढ़ाने के लिए दो बड़ी डील करने के लिए तैयार हो गयी है। पहली डील रक्षा मंत्रालय और मझगांव डॉकयार्ड्स लिमिटेड (एमडीएल) जर्मनी से 6 सबमरीन खरीदने वाली है। सरकार ने 'प्रोजेक्ट 75 इंडिया' के तहत भारत में बनने वाली इन पनडुब्बियों की खरीद को लेकर बातचीत शुरू करने की मंजूरी दे दी है। यह डील 70 हजार करोड़ में हो सकती है। वहीं, भारत सरकार इजराइली रैम्पेज एयर-टू-ग्राउंड मिसाइलों की बड़ी खेप खरीदने वाली है। सूत्रों के अनुसार, यह ऑर्डर जल्द ही फास्ट-ट्रैक प्रक्रिया के तहत दिया जायेगा। रैम्पेज मिसाइलों का इस्तेमाल पाकिस्तान के मुरीदके और बहावलपुर स्थित आतंकवादियों मुख्यालयों पर सटीक हमलों में किया था।

यूरोपीय देशों ने अमेरिका के लिए डाक सेवा रोकी

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। भारत के बाद कई यूरोपीय देशों ने भी अमेरिका के लिए डाक सेवाएं सस्पेंड कर दी हैं। इनमें इटली, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, ऑस्ट्रिया समेत कई देश शामिल हैं। सर्विस सस्पेंड होने की वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नये टैरिफ नियम हैं। दरअसल, ट्रंप प्रशासन ने इसी साल 30 जुलाई को आदेश जारी किया था, जिसमें 800 डॉलर (70 हजार रुपये) तक के सामान पर मिलने वाली टैरिफ छूट को खत्म कर दिया गया है। यह छूट 29 अगस्त से खत्म हो जायेगी। यूरोपियन डाक संगठन पोस्ट यूरोप और दूसरे डाक विभागों के मुताबिक नये नियमों पर अब तक साफ जानकारी नहीं दी गयी है।

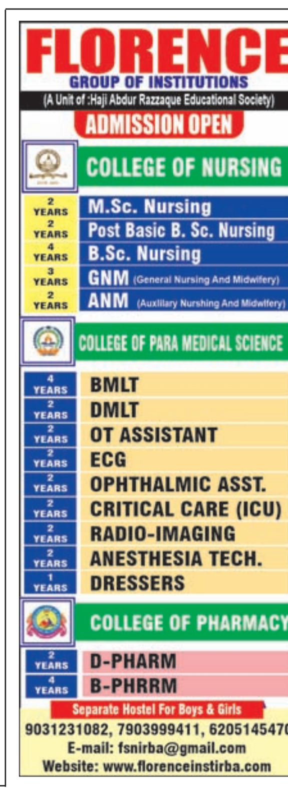

आर्य बाल उच्च विद्यालय
नयानगर बरकाकाना, रामगढ़ - 829103 (झारखण्ड)
पंजीयन सं - 43/001325
आवश्यकता
शिक्षक / लिपिक / सुरक्षा प्रहरी
नियुक्ति हेतु विज्ञापन

क्रम सं	विषय शिक्षक	शैक्षणिक योग्यता	शिक्षकों की संख्या
1	सभी विषय पढ़ाने हेतु	स्नातक / प्रशिक्षित	04
2	लिपिक	स्नातक / कंप्युटर प्रशिक्षित	01
3	सुरक्षा प्रहरी	मैट्रिक	01

आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 30/08/2025
सचिव
आर्य बाल उच्च विद्यालय
नया नगर, बरकाकाना
दिनांक 23.08.2025

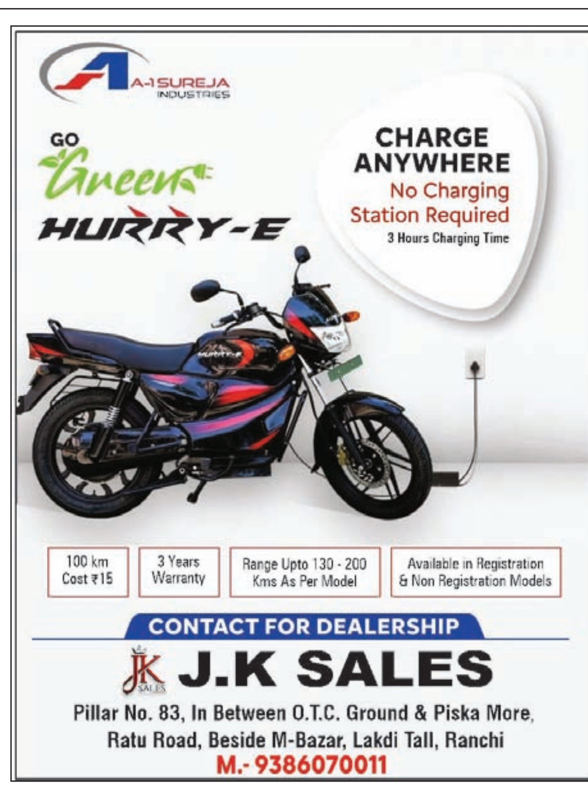

VERMA PRESS
वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
श्रृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 150	Hindi	₹ 150
English	₹ 150	English	₹ 150
Mathematics	₹ 150	Mathematics	₹ 150
Science	₹ 150	Science	₹ 150
Social Science	₹ 150	Social Science	₹ 150
Sanskrit	₹ 150	Sanskrit	₹ 150
Hindi – B	₹ 150	Hindi – B	₹ 150
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 130	English Grammar– II	₹ 130
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 60	Hindi Practical	₹ 60
English Practical	₹ 60	English Practical	₹ 60
Maths. Practical	₹ 70	Maths. Practical	₹ 70
Science Practical	₹ 70	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 75	S. Science Practical	₹ 75
Sanskrit Practical	₹ 60	Sanskrit Practical	₹ 60
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 90
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 90
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 230
Science	₹ 220	Science	₹ 200
Social Science	₹ 230	Social Science	₹ 230
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 100	S. Science Practical	₹ 90

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची, झारखंड से मुद्रित। **संस्थापक प्रधान संपादक :** स्व. हरिनारायण सिंह, **संपादक :** राकेश सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**